अग्नि बैच
हिन्दी Demo-01

→ पाठ्यक्रम - 2023 ←

1. वर्णमाला
2. संधि
3. समास
4. संज्ञा
5. सर्वनाम
6. क्रिया
7. विशेषण
8. कारक

[शब्दावली]

9. तत्सम तद्भव
10. विलोम शब्द
11. पर्यायवाची शब्द
12. वाक्यांश (अनेकार्थी शब्दों के लिए एक शब्द)
13. अनेकार्थी
14. शब्द-युग्म
15. मुहावरे एवं लोकोक्ति
16. बाद्यांश

→ वर्णमाला ←

* हिंदी किस भाषा का शब्द है? → फारसी
* हिन्दी का शाब्दिक अर्थ → हिंद से संबंधित

भाषा क्रम → संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश (पतन होना) → (1 सदी बाद) अवहट्ट भाषा → (पुरानी हिन्दी)

→ हिंदी
- ① → प्राचीन हिंदी
- ② → मध्यकालीन हिंदी
- ③ → आधुनिक हिंदी

* वर्तमान में हम मानक हिंदी का अध्ययन करते है।
* हिन्दी भाषा की लिपि → देवनागरी लिपि

* माँ सरस्वती के द्वारा देवनागरी लिपि को लिखा गया था।
* लिपि → वर्णों को जोड़कर सार्थक रूप देना लिपि कहलाता है।
* देवनागरी लिपि को बाँए-से-दाँए लिखा जाता है।

→ वर्णमाला ←

→ वर्णमाला की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि/वर्ण (अक्षर)

अक्षर → जिसका क्षर नहीं किया जा सकता है।

* लिखित भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण होती है।
* लिखित भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई शब्द होती है।
* मौखिक भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है।
* अर्थ के आधार पर भाषा की पूर्ण इकाई → वाक्य होती है।
* भाषा की सबसे बड़ी इकाई → वाक्य
* वर्ण → इसका खण्डन नहीं होसकता / तोड़ा नहीं जा सकता

⇒ परिभाषा → वर्णों के सुव्यवस्थित समूह को / वर्णमाला कहते हैं।
या वर्णों के व्यवस्थित क्रम को वर्णमाला कहते हैं।

⇒ वर्ण के प्रकार (02)

1) स्वर (11)

2) व्यंजन (33)

⇒ वर्णों की संख्या - (52)

* स्वर → 11 [अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ)
* अयोगवाह → 2 [अं, अः]

* व्यंजन → 25 स्पर्श व्यंजन [क — म]
* उत्क्षिप्त / ताडनजात / द्विगुण → ड़, ढ़ [2]
* संघर्षी व ऊष्मीय → 4 [श, ष, स, ह]
* अन्तस्थ व्यंजन → 4 [य, र, ल, व]
* संयुक्त व्यंजन → 4 [क्ष, त्र, श्र, ज्ञ]

हिन्दी

Demo - 02

→ वर्णमाला ←

* हिन्दी की लिपि → देवनागरी
* अनुच्छेद 343, भाग-17 मे हिन्दी का जिक्र मिलता है।
* विश्व हिन्दी दिवस → 10 जनवरी
* राष्ट्रीय हिन्दी दिवस → 14 सितम्बर
* मातृभाषा दिवस → 21 फरवरी

→ वर्णभेद → 2 → स्वर, व्यंजन

1. स्वर → वे ध्वनियाँ जो स्वतंत्र रूप से बोली जाती हैं।
   ↘ इनको किसीके सहारे नही बोला जाता, स्वर ध्वनियाँ कहलाती है।

→ स्वरों की संख्या → 11 होती है।

→ उच्चारण और प्रयत्न के आधार पर स्वरों के भेद → 3

1. लघु स्वर / मूल स्वर / ह्रस्व स्वर
2. दीर्घ स्वर / संधि स्वर

(1 और 2) → वर्तमान हिन्दी में दो भेद है

3. प्लुत स्वर - वैदिक संस्कृत में प्रयोग

→ स्वर → 11 [अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ]

* मात्रा के आधार पर स्वरों की संख्या – 10

मात्रा → (10) [×, ा, ि, ी, ु, ू, ृ, े, ै, ो, ौ]

Note/विशेष – (अ, स्वर की मात्रा नहीं होती)
- → अमात्रिक स्वर होता है।
- → इसे उदासीन कहते हैं।
- → प्रत्येक मात्रा रहित व्यंजन में 'अ' स्वर मौजूद होता है

→ क् + अ = क — 'अ' स्वर ✓ → क् + ए = के — 'अ' स्वर ✗

① [लघु स्वर / मूल स्वर / ह्रस्व स्वर]

→ जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है वे लघु स्वर, मूल स्वर, ह्रस्व स्वर व एक मात्रिक स्वर भी कहलाते हैं।

* इनकी संख्या (4) होती है। (अ, इ, उ, ऋ)

② [दीर्घ स्वर / संधि स्वर]

→ जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है या लघु स्वर से दोगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर संधि स्वर व द्विमात्रिक स्वर कहलाते हैं।

* इनकी संख्या (7) होती है।

(आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

ROJGAR WITH Ankit

* हिंदी वर्णमाला में स्वरो की संख्या → 11 होती है।
* हिन्दी में कुल स्वरो की संख्या → 11 होती है।

* **आगत स्वर** → [ऑ] यह विदेशी भाषा से आया हुआ स्वर है।

आ, ओ → ऑ → बीच की आवाज → इस स्वर का प्रयोग अंग्रेजी शब्दो में होता है।
कॉफी , डॉक्टर , ट्रॉफी , कॉलेज

Q → कॉलेज शब्द में 'का' के उपर किस स्वर का प्रयोग किया गया है?
(A) आ (B) ओ (C) ऑ ✓ (D) ऊ

NOTE → ऑ स्वर के प्रयोग से बनने वाले शब्द सभी अंग्रेजी भाषा के होते हैं, लेकिन हिन्दी में ज्यों के त्यों ही प्रयोग किये जाते हैं। (यह स्वर अंग्रेजी भाषा का होता है।)

(3) **प्लुत स्वर** → इन स्वरों का प्रयोग वैदिक संस्कृत में किया जाता था, वर्तमान हिन्दी में इनका प्रयोग नहीं किया जाता है, इनके उच्चारण में तीन मात्रा का समय लगता है, इन्हे त्रिमात्रिक स्वर भी कहते हैं।

जैसे- [ऽ,३] → ओऽम , मम्मीऽऽ , राऽऽम

NOTE → * उपयोग संबोधित करने के लिए, या दूर से पुकारने के लिए भी प्लुत स्वर का उपयोग किया जाता है।
* संस्कृत के मंत्रो में भी प्लुत स्वर का उपयोग होता है।

ROJGAR With Ankit

हिन्दी

[Demo- 03]

→ वर्णमाला ←

* लेखन की दृष्टि से स्वरों की संख्या → 11 होती है।
* ↳ (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ)
* उच्चारण की दृष्टि से स्वरों की संख्या → 10 होती है।
  - → 'ऋ' को उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी भाषा में प्रयोग नहीं किया जाता, क्योंकि यह स्वर संस्कृत भाषा का होता है।
  - → इस स्वर को अर्द्ध स्वर की संज्ञा दी जाती है।

NOTE- अं, अः → अयोगवाह स्वर

→ जाति के आधार पर स्वरों के भेद → (2)

① सजातीय स्वर

② विजातीय स्वर

1) सजातीय स्वर → इनका निर्माण समान जात के स्वरो से होता है। इन्हें सवर्ण, मूलसजातीय व मूल दीर्घ स्वर भी कहा जाता है।

* इनकी संख्या (3) होती है।

① अ + अ → आ ② इ + इ → ई ③ उ + उ → ऊ

③ विजातीय स्वर/(असवर्ण)→

↳ इनका निर्माण भिन्न-भिन्न स्वरो के मेल से होता है, ये विजातीय स्वर कहलाते है। (संयुक्त स्वर भी कहते है।)

उदाहरण :→ इनकी संख्या (4) होती है।

① अ + इ → ए
② अ + ए → ऐ
③ अ + उ → ओ
④ अ + ओ → औ

Q→ निम्न स्वरों में संयुक्त स्वर बताओ ?

Ⓐ आ Ⓑ ऐ ✓ Ⓒ ई Ⓓ ऊ

Q→ निम्न स्वरों में से आगत स्वर कौन-सा है ?

Ⓐ ओ Ⓑ ऐ Ⓒ आ Ⓓ ऑ ✓

→ उच्चारण और प्रयत्न के आधार पर स्वरों के ③ भेद होते है।

① जीव्हा के आधार पर स्वर → ③
② मुखाकृति के आधार पर स्वर → ④ [मुख खुलने के आधार पर]
③ ओष्ठाकृति के आधार पर स्वर → ②

① [जीव्हा के आधार पर स्वर] → (3)

(1) **अग्र भाग** → ये स्वर जीव्हा के आगे वाले भाग से उच्चारित होते है।

उदा० → {इ, ई, ए, ऐ}

(2) **मध्य भाग** → जीव्हा के बीच वाले भाग से उच्चारित होने वाले स्वर (उदा० → अ)

③ **पश्च भाग** → ये जीव्हा के पीछे वाले भाग से उच्चारित होते है।

उदा० → (आ, उ, ऊ, ओ, औ, (ऑ))

NOTE → 'ऋ' उच्चारण → यह [र + इ → रि] जीव्हा के अग्र भाग से उच्चारित होता है। [बीच की आवाज है, 'ऋ']

→ वर्णमाला ←

[Class – 04]

स्वर → उच्चारण के आधार पर स्वर

② [मुखाकृति के आधार पर स्वर] → 4 भागों में विभाजित

(1) संवृत (3) विवृत

(2) अर्द्ध संवृत (4) अर्द्ध विवृत

(1) **संवृत स्वर** → जिन स्वरो के उच्चारण मे मुख द्वार बिलकुल बंद सा रहता है, संवृत स्वर कहलाते है।

उदाहरण → इ, ई, उ, ऊ

(2) **अर्द्ध संवृत स्वर** → इन स्वरों में मुखद्वार, संवृत स्वर की अपेक्षा ज्यादा खुलता है।

उदा० → ओ, ए

(3) **विवृत स्वर** → इन स्वरों के उच्चारण में मुखद्वार पूरा खुलता है। उदा० → आ

(4) अर्द्ध विवृत स्वर → इन स्वरों के उच्चारण में मुख विवृत स्वर की अपेक्षा कम खुलता है।

उदा० → अ, ऐ, औ

③ [होंठो की स्थिति, ओष्ठाकृति के आधार पर स्वर] (02)

(1) वृत्ताकार स्वर → इन स्वरों के उच्चारण में होंठो की आकृति गोलाकार हो जाती है।

Ex → उ, ऊ, ओ, औ + ऑ

(2) अवृत्ताकार स्वर → इन स्वरों के उच्चारण में होंठों की आकृति गोल नहीं होती, अर्थात- होंठों की आकृति सामान्य रहती है।

उदा० → इ, ई, ए, ऐ, आ, अ — उदासीन स्वर / अमात्रिक स्वर

* वृत्ताकार स्वर → ④ होते हैं। (ऑ)

* अवृत्ताकार स्वर → ⑥ होते हैं।

NOTE → उच्चारण में (ऋ) को शामिल नही किया जाता है।

Q1→ वृत्ताकार स्वर कौन-सा है?

(A) अ (B) इ (C) आ (D) ऑ ✓

Q2→ संवृत स्वर कौन सा नहीं होगा?

(A) इ (B) उ (C) ऊ (D) आ ✓

→ (स्वर)	(उच्चारण स्थान)
① अ, आ →	कंठ
② इ, ई →	तालु (तालव्य)
③ उ, ऊ →	ओष्ठ (होंठ)
④ ऋ →	मूर्धा (मूर्धन्य)
⑤ ए, ऐ →	कंठ + तालु
⑥ ओ, औ →	कंठ + ओष्ठ

NOTE→ सभी स्वर अल्पप्राण व सघोस (घोस) होते है।

→ वर्णमाला ←

[Class → 05]

→ **अल्पप्राण** → जिन स्वरों का उच्चारण कम वायु से होता है।

→ **सघोस (घोस)** → जिन वर्णों को उच्चारित करते समय मुख से कम्पन्न होता है।

→ **अयोगवाह वर्ण** → जो वर्ण न तो स्वर होते हैं। ना व्यंजन होते हैं, [अयोगवाह' वर्ण का प्रयोग स्वर के बाद व्यंजन से पहले किया जाता है।]

* अयोगवाह वर्ण की संख्या (2) होती है।

(1) अं → अनुस्वार

(2) अः → विसर्ग

(अँ) → अनुनासिक

→ अं (अनुस्वार) → इसकी आवाज नासिक्य (नाक) होती है।

उदा० → अंग, अंक, अंगूर इत्यादि।

→ अँ (अनुनासिक) → इसकी आवाज नाक + मुँह दोनो से निकलती है।

→ (दीर्घ स्वर आने पर (ँ) - चंद्रबिन्दु का प्रयोग होता)

उदा० → चाँद, चाँदनी, आँख, ईंट, इत्यादि।

→ अः (विसर्ग) → विसर्ग की आवाज कंठ से बाहर आती है, इसकी उच्चारण ध्वनि (ह) होती है।

उदा० → प्रातः काल, दुःख, मनः कामना इत्यादि।

Q1 → अयोग्वाह वर्ण कौन-सा है?

(A) अ (B) इ (C) ऋ (D) अः ✓

→ व्यंजन वर्ण ←

→ **व्यंजन** → जो ध्वनियाँ स्वरों की सहायता से बोली जाती हैं, वे व्यंजन वर्ण कहलाती हैं।

उदा० → क् + अ → क   ख् + अ → ख

→ [व्यंजन वर्णों की संख्या → 33]

① स्पर्शी व्यंजन → (25) [क - म]

② अंतस्थ → (4) [य, र, ल, व]

③ संघर्षी व उष्मीय → (4) [श, ष, स, ह]

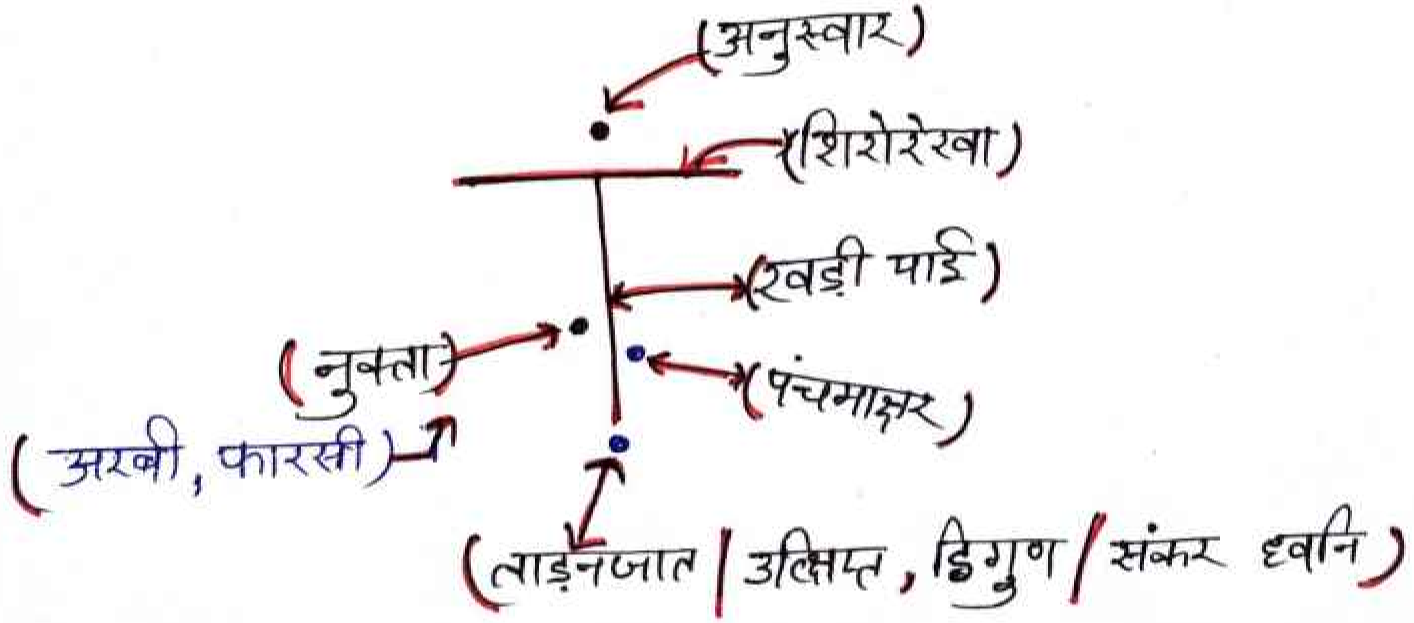

(**जैसे** → अंक / ड़ / सड़क / आवाज़)

→ [वर्णमाला] ←

[class → 06]

(1) स्पर्शी व्यंजन → वे ध्वनिया जो मुख के किसी भी भाग को स्पर्श करते हुए उच्चारित होती है। वे स्पर्श व्यंजन कहलाते है।

* इनकी संख्या (25) होती है।
* ये 5 वर्गों में विभाजित होते है।

		(1)	(2)	(3)	(4)	(5) (नासिक्य ध्वनि)	
K	कंठ	क	ख	ग	घ	ङ	←'क' वर्ग
T	तालु	च	छ	ज	झ	ञ	← चवर्ग → 'च' वर्ग
M	मूर्धा	ट	ठ	ड	ढ	ण	'ट' वर्ग
D	दंत	त	थ	द	ध	न	'त' वर्ग
O	ओष्ठ	प	फ	ब	भ	म	'प' वर्ग

(संघर्षी व स्पर्शी होता है।)

* सभी वर्गों का 5 वाँ वर्ण नासिक्य होता है।

① अघोष → वे वर्ण जिनके उच्चारण में कम्पन्न नहीं होत

* इनकी संख्या 10 → [1, 2]

② **सघोष / घोष** → वे वर्ण जिनके उच्चारण में कम्पन्न होता है। [3, 4, 5] – ⑮ (ड़, ढ़)

* प्रत्येक व्यंजन वर्ग का, 3, 4, 5 वाँ वर्ण

① **अल्पप्राण** → वे वर्ण जिनके उच्चारण में कम वायु की आवश्यकता होती है।

* प्रत्येक व्यंजन वर्ग का 1, 3, 5 वाँ वर्ण

→ [1, 3, 5] ⑮ **वर्ण** (+ सभी स्वर) + (ड़)

NOTE → सभी 'स्वर' अल्पप्राण, और सघोष होते हैं।

⇒ **'ड़', 'ढ़' वर्ण** → इन वर्णों को उत्क्षिप्त, ताडनजात, द्विगुण व शंकर वर्ण बोला जाता है।

NOTE → इन वर्णों से कभी भी किसी शब्द की शुरूआत नहीं होती, (अंग्रेजी शब्द ×)

उदा० →

- ड़मरू ×
- डमरू ✓
- ढ़क्कन ×
- ढक्कन ✓
- लड़का ✓
- लड़की ✓

* **ड़** → अल्पप्राण

* **ढ़** → महाप्राण

] → **सघोष वर्ण**

→ वर्णमाला ←

[Class-07]

* बीच में और अंत में ताड़नजात लगाया जाता है।

② **अंतस्थ व्यंजन** → जिन वर्णों का उच्चारण स्वर व व्यंजन के बीच किया जाता है, वे वर्ण अंतस्थ व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या (4) है।

① य (तालु) ② र (मूर्धा) ③ लं (दंत्य) ④ व (दंतोष्ठ)

→ 'य'
→ 'व'
ये अर्द्धस्वर हैं।

* स्वरों में 'य' का उच्चारण करते समय 'इ' की आवाज देता है, और 'व' का उच्चारण करते समय 'उ' की आवाज देता है।

उदा० → इ + अ = य   उ + अ = व

→ 'र' → 'र' को प्रकंपित, लुंठित, कम्पनजात वर्ण कहा जाता है। (हमारी जीभ आगे की ओर मुड़ जाती है।

→ 'ल' → 'ल' को पार्श्विक वर्ण कहा जाता है।
* इस वर्ण के उच्चारण में आवाज जीभ के अगल - बगल से आती है।

NOTE → अंतस्थ ध्वनियाँ 'सघोस' व 'अल्पप्राण' होती है।

③ संघर्षी व उष्मीय व्यंजन → (4)

* जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुँह से उष्मा निकलती है, व संघर्ष करना पड़ता है, वे ध्वनियाँ संघर्षी व उष्मीय होती है। [श, ष, स → अघोष / महाप्राण]

① श → तालु
② ष → मूर्धा
③ स → दंत
④ ह → कंठ
↳ 'ह' वर्ण 'सघोष' महाप्राण

NOTE → 'ह' को काकल्य कंठ उष्म संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं। इसको स्वर यंत्र मुखी वर्ण भी बोलते हैं।

→ [संयुक्त वर्ण] → (4)

* जब दो व्यंजन एक ही स्वर की सहायता से बोले जाते हैं, वे वर्ण संयुक्त वर्ण कहलाते हैं।

① क्ष → क् + ष

② त्र → त् + र

③ ज्ञ → ज् + ञ

④ श्र → श् + र

→ अल्पप्राण वर्ण → संख्या (31)

(सभी स्वर + [1, 3, 5] + य, र, ल, व / ड़)
(11) + (15) + (5) = (31)

→ महाप्राण वर्ण → संख्या (15)

([2, 4] + श + ष + स + ह, ढ़)
(10) + (5) = (15)

→ अघोष वर्ण → संख्या (13)

[1, 2 + श, ष, स → (13)]

→ सघोष/घोष वर्ण → संख्या (31)

[3, 4, 5, + य, र, ल, व, ह, + सभी स्वर]

→ [आगत ध्वनि] → शिव प्रसाद सितारे हिंद के द्वारा इनको हिंदी में जोड़ा गया।

(क़, ख़, ग़, ज़, फ़ / ऑ)

→ 'ड़' वर्ण → अमानक वर्ण होता है।

→ द्वित्व व्यंजन → एक वर्ण दो बार आता है।

दिल्ली, बल्ला, चप्पल

'ल' द्वित्व वर्ण है

'प' द्वित्व वर्ण है।

→ वर्ण-विच्छेद ←

[Class-8]

→ वर्णों को अलग करना या विभाजित करना वर्ण विच्छेद कहलाता है।

उदाहरण- ① राम → र् + आ + म् + अ

② कमल → क् + अ + म् + अ + ल् + अ

③ कलम → क् + अ + ल् + अ + म् + अ

④ दिन → द् + इ + न् + अ

NOTE → हलंत का प्रयोग व्यंजन ध्वनि के साथ किया जाता है, स्वर ध्वनियों के साथ हलंत का प्रयोग कभी नहीं किया जाता।

⑤ अमावस्या → अ + म् + आ + व् + अ + स् + य् +

⑥ आशीर्वाद → आ + श् + ई + र् + व् + आ + द् +

⑦ अहल्या → अ + ह् + ल् + य् + आ

⑧ कवयित्री → क् + अ + व् + अ + य् + इ + त् + र् + ई

⑨ अंतर्ध्वनि → अ + न् + त् + अ + र् ध् + आ + न् +

⑩ अधीन → अ + ध् + ई + न् + अ

⑪ दुग्ध → द् + उ + ग् + ध् + अ

⑫ दही → द् + अ + ह् + ई

Q1-> 'पंकज' का सही वर्ण विच्छेद वाला विकल्प बताओ ?

(A) पं + क् + अ + ज

(B) प + ङ् + क् + अ + ज् + अ

(C) ✓ प् + अ + ङ् + क् + अ + ज + अ

(D) प + न् + क् + अ + ज + अ

⑬ संज्ञा → स् + अ + म् + ज् + ञ् + आ

⑭ क्षत्रिय → क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ

⑮ स्वागत → स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ

⑯ श्रमिक → श् + र् + अ + म् + इ + क् + अ

(17) कॉलेज → क् + ऑ + ल् + ए + ज् + अ

(ॅ ← अर्द्ध चंद्र बिन्दु भी कहते हैं।)

(18) साँप → स् + आँ + प् + अ

(19) रूप → र् + ऊ + प् + अ

NOTE → यदि अनुस्वार के बाद (25) स्पर्शी वर्णों से अल कोई भी संयुक्त स्वर दिया हो, तो अनुस्वार (ं) को म् में बदलते हैं। → (संज्ञा में use)

उदा० → * पंचल → प् + अ + म् + च् + अ + ल् + अ

* संधि → स् + अ + न् + ध् + इ

* श्रृंगार → श् + ऋ + ङ् + ग् + आ + र् + अ

NOTE → यदि अनुस्वार (ं) के बाद कोई भी स्पर्शी व्यंजन आये तो, अनुस्वार के स्थान पर उस व्यंजन वर्ग का पँचमाक्षर वर्ण प्रयोग करेंगे।

Example - {पंचल, संधि}

ROJGAR With Ankit

→[वर्णमाला प्रश्न उत्तर]←

[Practice-Questions] Class-9

① किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
(a) कृपा (b) कृपण (c) दृष्टि (d) आज

② भाषा की सबसे छोटी इकाई को क्या कहा जाता है?
(a) वर्ण (b) उच्चारण (c) पद (d) शब्द

③ भाषा की सार्थक लघुत्तम इकाई किसे माना जाता है?
(a) शब्द (b) वर्ण (c) अर्थ (d) मात्रा

④ वर्णों के कितने भेद हैं?
(a) दो (b) दस (c) सात (d) आठ

⑤ हिंदी भाषा की कुल वर्ण लिपियां है?
(a) 44 (b) 33 (c) 52 (d) 48

⑥ लिपि-चिह्नों के क्रमबद्ध समूह को क्या कहते हैं?
(a) अक्षर (b) वर्ण (c) वर्णमाला (d) वर्णसमूह

⑦ कौन स्वर नहीं है?
(a) ब (b) अ (c) उ (d) ए

(8) जिनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से होता है, और जो व्यंजन के उच्चारण में सहायक होते हैं उसे कहते हैं?
(a) संज्ञा (b) स्वर (c) व्यंजन (d) विसर्ग

(9) स्वरों की संख्या कितनी है?
(a) 11 (b) 13 (c) 9 (d) 10

(10) ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत किसके प्रकार हैं?
(a) संधि (b) व्यंजन (c) स्वर (d) कोई नहीं

(11) किस समूह में सभी स्वर दीर्घ हैं?
(a) ई, ए, ऐ, ओ, औ (b) लृ, ऋ, आ, ई, ऊ

(13) हिंदी भाषा में ह्रस्व स्वरों की संख्या कितनी है?
(a) ग्यारह (b) चार, (c) सात (d) दो

(14) निम्नलिखित में कौन सा संयुक्त स्वर नहीं है?
(a) ए (b) ऐ (c) ऊ (d) ओ

(15) किस स्वर के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है? (a) अनुस्वार (b) ह्रस्व (c) प्लुत स्वर

(16) इनमें से संवृत स्वर कौन-सा है?
(a) ओ (b) ई (c) औ (d) अ

(17) अर्द्ध विवृत स्वर है-
(a) ऊ (b) ऐ (c) आ (d) ए

(18) विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान है-
(a) कण्ठ्य (b) ओष्ठ्य (c) तालव्य (d) अनुनासिक

(19) जिह्वा के आधार पर स्वर कितने प्रकार के होते हैं?
(a) 2 (b) 4 (c) 3 (d) 6

(20) 'ओ', 'औ' किस प्रकार के वर्ण हैं?
(a) तालव्य (b) मूर्धन्य (c) दन्तोष्ठ्य (d) कंठोष्ठ्य

(21) जिनकी ध्वनि केवल मुख से निकलती है, वे हैं-
(a) वृत्ताकार स्वर (b) अनुनासिक स्वर (c) निरनुनासिक

(22) ओष्ठ्य अल्पप्राण घोष वर्ण का उदाहरण कौन-सा है?
(a) भ् (b) ब् (c) प् (d) फ्

(23) तालव्य ध्वनियाँ कौन-सी हैं?
(a) च, छ (b) ज, झ (c) ट, ठ (d) कोई नहीं

(24) 'सर्वज्ञ' शब्द में संयुक्त व्यंजन 'ज्ञ'..... वर्णों के योग से बना है- (a) ज + य (b) ज् + ञ (c) ज + ञ

(25) इनमें से अमानक वर्णों का विकल्प कौन-सा है?
(a) अ (b) भ (c) 'र', 'म' (d) 'झ', 'अ'

(26) किसका उच्चारण स्थान 'दंत' है?
(a) न (b) प (c) ग (d) च

(27) हिंदी वर्णमाला में व्यंजन वर्णों की संख्या कितनी है?
(a) 33 (b) 25 (c) 29 (d) 31

28) 'ट' वर्ग में किस प्रकार के व्यंजन है?
(a) कंठ्य (b) तालव्य ✓(c) मूर्द्धन्य (d) दन्त्य

29) कौन-सा तालव्य वर्ण नहीं है?
(a) श (b) ञ (c) च ✓(d) ख

30) 'च' वर्ग में महाप्राण व्यंजन वर्ण कितने है?
✓(a) 2 (b) 1 (c) 4 (d) 3

31) अन्तःस्थ और उष्म वर्ण कितने है?
✓(a) 8 (b) 6 (c) 3 (d) 2

32) हिंदी वर्णमाला के अनुसार पंचमाक्षरो की संख्या कितनी
(a) चार ✓(b) पाँच (c) छह (d) तीन

33) स्वर तंत्रियों के आधार पर व्यंजनो को कितने वर्गों में
बाँटा गया है? → (a) 1 (b) 2 ✓(c) 3

34) 'य' का उच्चारण स्थान है → **तालु**

35) हिन्दी की तालव्य ध्वनियाँ है → **च, छ, ज, झ**

36) प, फ, ब, भ, म ये व्यंजन होते है → **ओष्ठ्य**

37) वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनो की संख्या कितनी है
✓(a) 25 (b) 30 (c) 20 (d) 35

38) जिन ध्वनियों की गणना न स्वर में की जाती न
व्यंजन में उसे क्या कहते है? → **अयोग्वाह**

[संधि]

CLASS - 10

→ संधि / सन्धि

संधि → ं,ध अनुस्वार के बाद 'ध' वर्ण है।
'ध' वर्ण 'त' वर्ग के अंतर्गत आता है, अनुस्वार के स्थान पर त वर्ग का पंचमाक्षर प्रयोग कर सकते हैं

'त' वर्ग → त, थ, द, ध, न

चंचल → चञ्चल

* संधि संस्कृत भाषा का 'शब्द' होता है।
* संधि का शाब्दिक अर्थ → मेल / जोड़ / मित्रता
* संधि का विलोम → विग्रह

→ परिभाषा → दो वर्णों के परस्पर मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं।

उदा० → विद्यालय → विद्या + आलय
आ + आ → आ
पहला शब्द दूसरा शब्द

NOTE → * पहले शब्द की अंतिम ध्वनि + दूसरे शब्द की पहली ध्वनि

* पहले शब्द का अंतिम वर्ण + दूसरे शब्द का पहला वर्ण

उदा० → (1) भानूदय = भानु + उदय

(2) परमात्मा = परम + आत्मा

(3) संतोष = सम + तोष

(4) संसार = सम + सार

(3), (4) → अनुस्वार (ं) → म

(5) धर्मार्थ = धर्म + अर्थ

(6) शिवालय = शिव + आलय

→ **संधि के प्रकार** → 03

(1) स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (्) (3) विसर्ग संधि

→ तीनो संधि का निर्माण (6) प्रकार से होता है।

(1) स्वर + स्वर → स्वर संधि

(2) स्वर + व्यंजन → व्यंजन संधि

(3) व्यंजन + स्वर → व्यंजन संधि

(4) व्यंजन + व्यंजन → व्यंजन संधि

(5) विसर्ग + स्वर → विसर्ग संधि

(6) विसर्ग + व्यंजन → विसर्ग संधि

NOTE → स्वर संधि से 121 शब्दों का निर्माण होता है।

उदा० → ① महात्मा → महा + आत्मा

(आ) + (आ) → (आ) — **स्वर संधि**

② वागीश → वाक् + ईश

(क) + (ई) → गी — **व्यंजन संधि**

③ निर्धन → निः + धन

(:) + (ध) → **विसर्ग संधि**

→ संधि विच्छेद करते समय किसी भी व्यंजन वर्ग के तीसरे वर्ण को पहले में बदल देते हैं।

③ → ①

* ग → क
* द → त

→ एक शब्द को दो शब्दों में तोड़ना संधि विच्छेद कहलाता है।

ROJGAR With Ankit

→ संधि ←

Class-11

→ **स्वर संधि** → दो स्वरो के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते हैं। **स्वर + स्वर**

Ex- ① हिमालय → हिम + आलय

② विद्यालय → विद्या + आलय

→ स्वर संधि के भेद (05)

① दीर्घ स्वर संधि
② गुण स्वर संधि
③ वृद्धि स्वर संधि
④ यण स्वर संधि
⑤ अयादि स्वर संधि

① **दीर्घ स्वर संधि** → जब दो सजातीय स्वरो के मेल से दीर्घ स्वर बनता है, वहाँ दीर्घ स्वर संधि होती है।

Rule→

आ	ई	ऊ
* अ + अ ⇒ आ	* इ + इ → ई	* उ + उ → ऊ
* अ + आ → आ	* इ + ई → ई	* उ + ऊ → ऊ
* आ + अ → आ	* ई + ई → ई	* ऊ + ऊ → ऊ
* आ + आ → आ	* ई + ई → ई	* ऊ + उ → ऊ

→ **पहचान** → जिन संधि शब्दो में दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ) आते है। वे शब्द दीर्घ स्वर संधि शब्द होते है।

उदा० → ① पुस्तकालय → पुस्तक + आलय

② विद्यार्थी → विद्या + अर्थी

③ भानुदय → भानु + उदय

④ दयानन्द → दया + आनन्द

⑤ रत्नाकर → रत्न + आकर

⑥ सीमांत → सीमा + अंत

⑦ कपीश → कपि + ईश

⑧ भूर्जा → भू + उर्जा

⑨ लघ्युर्मि → लघु + ऊर्मि

*पितृण → पितृ + ऋण
यह संस्कृत का शब्द है
हिन्दी में यह नहीं पूछे जाते

* **विशेष** → ① यदि दो वर्णों से बदलाव आता है।, तो वहाँ संधि होती है।

NOTE →

② यदि बदलाव नही आता तो वहाँ संयोग होता है।

↳ **जैसे** → (गाड़ीवाला, दूधवाला, सब्जीवाला, डाकखाना)

② गुण स्वर संधि → [ए, ओ, अर् (ऋ)]

① अ, आ + इ, ई → (ए)

② अ, आ + उ, ऊ → (ओ)

③ अ, आ + ऋ → (अर)

पहचान → जिन संधि शब्दो में (ए, ओ, अर) की आवाज आती हैं, वहाँ गुण स्वर संधि होती है।

उदा० →
① नरेन्द्र ⟶ नर + इन्द्र (अ + इ → ए)
② राकेश ⟶ राका + ईश (आ + ई → ए)
③ कमलेश ⟶ कमल + ईश
④ महेन्द्र ⟶ महा + इन्द्र
⑤ ज्ञानोपदेश ⟶ ज्ञान + उपदेश (अ + उ → ओ)
⑥ जलोर्मि ⟶ जल + ऊर्मि (अ + ऊ → ओ)
⑦ देवर्षि ⟶ देव + ऋषि (अ + ऋ → अर)
⑧ महर्षि ⟶ महा + ऋषि
⑨ प्रियांशी ⟶ प्रिय + अंशी (अ + अं → आ) दीर्घ संधि
⑩ चंद्रोदय ⟶ चंद्र + उदय
⑪ पुरूषोत्तम ⟶ पुरूष + उत्तम

→ संधि ←

[Class-12]

① सूर्योदय → सूर्य + उदय
② गंगोर्मि → गंगा + ऊर्मि
③ परोपकार → पर + उपकार
④ महोत्सव → महा + उत्सव

} गुण स्वर संधि के उदाहरण हैं

③ वृद्धि स्वर संधि :-

* अ, आ + ए, ऐ = ऐ
* अ, आ + ओ, औ = औ

पहचान → जिन शब्दों पर ऐ, औ की आवाज (मात्रा) आती है। वहाँ वृद्धि स्वर संधि होती है।

उदाहरण →

① एकैक → एक + एक [अ + ए → ऐ]
② लोकैषणा → लोक + एषणा
③ हितैषी → हित + एषी
④ मतैक्य → मत + ऐक्य
⑤ सदैव → सदा + एव
⑥ महैश्वर्य → महा + ऐश्वर्य
⑦ जलौघ → जल + ओघ

8) महौजस्वी → महा + ओजस्वी
9) परमौषधि → परम + औषधि
10) वनौषधि → वन + औषधि
11) वनौषध → वन + औषध
12) दंतौष्ठ्य → दंत + औष्ठ्य
13) जलौषधि → जल + औषधि

(4) **यण संधि** → * जब इ, ई का मेल भिन्न स्वर से हो तो (य) बनता है।

* जब उ, ऊ का मेल भिन्न स्वर से हो तो → (व) बनता है।

* जब ऋ का मेल भिन्न स्वर से हो तो (र) बनता है।

पहचान → ① जिन शब्दों में [य, व, र] हो वहाँ यण संधि होती है।

② **य, व** से पहले आधा वर्ण आता हो

③ शब्द में '**त्र**' आता हो।

उदाहरण → ① अत्याचार → अति + आचार [इ + आ = (या)]

② प्रत्येक → प्रति + एक

③ प्रत्यक्ष → प्रति + अक्ष

④ रीत्यनुसार → रीति + अनुसार

(5) व्यंजन → वि + अंजन

(6) स्वागत → सु + आगत

(7) पर्यावरण → परि + आवरण

(8) मध्वालय → मधु + आलय

(9) मात्राज्ञा → मातृ + आज्ञा

(10) मध्वरि → मधु + अरि

(11) माध्वाचार्य → मधु + आचार्य

(12) अन्वेषण → अनु + एषण

(13) न्यून → नि + ऊन

(14) अन्वय → अनु + अय

(15) पित्रनुमति → पितृ + अनुमति

(16) मात्रादेश → मातृ + आदेश

(17) अध्यापक → अधि + आदेश

(18) राकेश → राका + ईश
↳ (गुण संधि)

(5) अयादि स्वर संधि →

* जब 'ए' का मेल भिन्न स्वर से → अय
* जब 'ऐ' का मेल भिन्न स्वर से → आय
* 'ओ' का मेल भिन्न स्वर से → अव
* 'औ' का मेल भिन्न स्वर से → आव

ए, ऐ, ओ, औ
↓ ↓ ↓ ↓
अय आय अव आव

उदा० → (1) नयन → ने + अन
(ए + अ → अय)

(2) नायक → नै + अक

(3) नायिका → नै + इका

(4) गायक → गै + अक

(5) गायिका → गै + इका

5. विधायक → विधै + अक
6. पावन → पौ + अन
7. भवन → भो + अन
8. हवन → हो + अन
9. पवित्र → पो + इत्र
10. विनायक → विनै + अक
11. श्रावन → श्रौ + अन
12. भावना → भौ + अना
13. नाविक → नौ + इक
14. गवीश → गो + ईश
15. भावुक → भौ + उक

→ संधि ←

[Class-13]

* स्वर संधि में भेद होते हैं।
* व्यंजन संधि और बिसर्ग संधि में भेद नहीं होते
  ↳ उनमें केवल नियम होते हैं।

→ अयादि स्वर संधि -

पहचान → जिन संधि शब्दो में अय, आय, आव, अव की आवाज आती हैं, उन्हें अयादि संधि कहते हैं

→ [स्वर संधि के उदाहरण]

1. वधूर्जा → वधू + ऊर्जा [ऊ + ऊ → ऊ] (दीर्घ)
2. परोपकार → पर + उपकार [अ + उ → ओ] (गुण)
3. मतैक्य → मत + ऐक्य [अ + ऐ → ऐ] (वृद्धि)
4. अत्याचार → अति + आचार [इ + आ → या] (यण)
5. विनायक → विनै + अक [ऐ + अ → आय] (अयादि)

→ (स्वर संधि समाप्त) ←

② व्यंजन संधि -

* व्यंजन का मेल स्वर, व्यंजन से होने पर जो विकार (परिवर्तन) आता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

* स्वर + व्यंजन
* व्यंजन + स्वर
* व्यंजन + व्यंजन

उदा० → दिगम्बर ⇒ दिक् + अम्बर
(व्यंजन + स्वर)

पहचान → जिन संधि शब्दो में किसी भी वर्ग का तीसरा वर्ण दिया होता है, तो संधि विच्छेद करने पर तीसरा वर्ण अपने ही वर्ग के पहले वाले वर्ण में बदल जाता है।

③	①
ग →	क
ज →	च
ड →	ट
द →	त
ब →	प

उदा० →
① दिगम्बर → दिक् + अम्बर
② दिग्गज → दिक् + गज
③ वागीश → वाक् + ईश
④ अजन्त → अच् + अंत
⑤ अजादी → अच् + आदी
⑥ षडानन → षट् + आनन

ROJGAR With Ankit

(7) षड्यंत्र → षट् + यंत्र

(8) षड्दर्शन → षट् + दर्शन

(9) जगदम्बा → जगत् + अम्बा

(10) अब्ज → अप् + ज

(11) अब्द → अप् + द

Q→ 'वागीश' शब्द में कौन सी संधि है?

(A) स्वर संधि
(B) व्यंजन संधि ✓
(C) विसर्ग संधि
(D) इनमें से कोई नहीं।

Q2→ 'वागीश' का संधि विच्छेद बताओ?

(A) वाग् + इश
(B) वाक् + ईस
(C) वाक् + ईश ✓
(D) वाग + ईश

NOTE→ व्यंजन संधि में हलंत आना अनिवार्य होता है।

ROJGAR with Ankit

→ संधि ←

[Class - 14]

* वागेश्वरी → वाक् + ईश्वरी

→ [व्यंजन संधि] ←

नियम 02 → जिन शब्दों में किसी भी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (अनुनासिक / नासिक्य) वर्ण होता है, तो संधि विच्छेद करने पर 5th वर्ण अपने ही वर्ग के पहले वर्ण में बदल जाता है।

⑤	→	①
ङ	→	क
ञ	→	च
ण	→	ट
न	→	त
म	→	प

उदा० → ① वाङ्मय → वाक् + मय
② जगन्नाथ → जगत् + नाथ
③ अम्मय → अप् + मय
④ षण्मास → षट् + मास
⑤ वाङ्मात्र → वाक् + मात्र
⑥ चिन्मय → चित् + मय

नियम 03 → **त् संबंधी नियम**

(च्च, च्छ, ज्ज, ज्झ, ट्ट, ड्ड, ल्ल, द्ध)

* सभी आधे वर्णों को 'त्' में बदलना है।

उदा० → ① उच्चारण → उत् + चारण
② महच्छत्र → महत् + छत्र

③ सच्चरित्र → सत + चरित्र **ज्-त्**

④ सच्चित → सत + चित

⑤ सज्जन → सत + जन

⑥ उज्ज्वल → उत + ज्वल

⑦ विपज्जाल → विपत + जाल

⑧ उज्झटिका → उत + झटिका

ल् → त्

⑨ तल्लीन → तत + लीन

⑩ उल्लेख → उत + लेख

⑪ उल्लास → उत + लास

ड्-त्

⑫ उड्डयन → उत + डयन

ट्-त्

⑬ बृहट्टीका → बृहत + टीका

→ (च्छ ← त, श) * यदि 'त' के बाद 'श' लिया होता है, तो यह 'श' 'छ' में बदल जाता है।

① सच्छास्त्र → सत + शास्त्र

② तच्छ्रुत्वा → तत + श्रुत्वा

③ उच्छ्वास → उत् + श्वास

→(च्छ)→ यदि 'छ' से पहले कोई स्वर दिया हो, तो शब्द को जोड़ने पर 'छ' से पहले 'च' आजाता है। उदा० → ① अनुच्छेद → अनु + छेद

② विच्छेद → वि + छेद

③ परिच्छेद → परि + छेद

④ आच्छादन → आ + छादन

⑤ लक्ष्मीच्छाया → लक्ष्मी + छाया

* 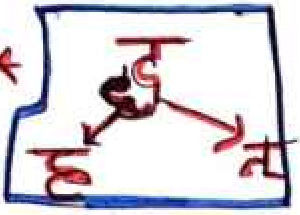

① उद्धार → उत् + हार

② उद्धत → उत् + हत

③ तद्धित → तत् + हित

④ पद्धति → पत् + हति

→ **ण → न**

① कृपण → कृष + न

② तृष्णा → तृष + ना

③ भूषण → भूष + अन

④ ऋण → ऋ + न

⑤ पोषण → पोष + न

⑥ भरण → भर् + अन

⑦ परिणाम → परि + नाम्

⑧ नारायण → नार + अयण
└ (दीर्घ स्वर संधि)

ROJGAR WITH ANKIT

[व्यंजन संधि]

[CLASS-- 15]

→ 'म' संबंधी नियम

* यदि 'म' का मेल 'क' से लेकर 'म' तक किसी भी वर्ण, य, र, ल, व, ह से होता है, तो म के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है।

पहचान → जिन संधि शब्दो पर (ं) लगा होता है, उसका मतलब (म) होता है।

उदा० → ① किंचित → किम + चित

② किंकर → किम + कर

③ संकल्प → सम + कल्प

④ संतोष → सम + तोष

⑤ संपूर्ण → सम + पूर्ण

⑥ संबंध → सम + बंध

⑦ संयोग → सम + योग

⑧ संहार → सम + हार

⑨ संरक्षण → सम + रक्षण

* जब 'कृ' धातु का मेल 'म' से होता है, तो आधे स का आगमन हो जाता है।

① संस्कार → सम + कार

② संस्कृति → सम + कृति

→ ('म' द्वित्व) → ① सम्मान → सम + मान

② सम्मति → सम + मति

③ संसार → सम + सार

→ 'ष' संबंधी नियम-

* 'ष' को 'स' मे बदलदेते है, संधि विच्छेद करते समय

उदा०→

① अभिषेक → अभि + सेक
② विषम → वि + सम
③ सुषमा → सु + समा
④ निषिद्ध → नि + सिद्ध

→ ③ - विसर्ग (:) संधि :-

* विसर्ग का मेल स्वर, अथवा व्यंजन से होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग संधि कहते है।

* विसर्ग का मेल (11) स्वर, (33) व्यंजन से होता है। विसर्ग (44) वर्णो से मिलकर इस संधि का निर्माण करता है। { : + 11, 33 → : + 44 } (: → 'ह' ध्वनि, → कंठ)

① मनोकामना → मनः + कामना ← (इस नियम पर लागू नहीं)

Rule-1 → { ओ → : } * 'ओ' के बाद किसी भी वर्ग का (3, 4, 5) + (य, र, ल, व, ह) होता है, तो (ओ) विसर्ग (:) में बदल जाता है।

① यशोदा → यशः + दा ② मनोदशा → मनः + दशा

③ मनोहर → मनः + हर
④ मनोयोग → मनः + योग
⑤ मनोनुकूल → मनः + अनुकूल
⑥ तपोवन → तपः + वन
⑦ पयोधन → पयः + धन
⑧ पयोद → पयः + द
⑨ अधोगति → अधः + गति
⑩ वयोवृद्ध → वयः + वृद्ध
⑪ मनोरंजन → मनः + रंजन

Rule-2 → जिन संधि शब्दों में तीनों **(श, ष, स)** आधे होते हैं, उनका मतलब विसर्ग होता है।

श → :
ष → :
स → :

① निश्चिंत → निः + चिंत
② निश्चित → निः + चित
③ नमस्ते → नमः + ते
④ नमस्कार → नमः + कार
⑤ निष्प्राण → निः + प्राण
⑥ निष्फल → निः + फल
⑦ दुस्साहस → दुः + साहस
⑧ दुष्कर्म → दुः + कर्म
⑨ निष्कपट → निः + कपट
⑩ निष्काम → निः + काम
⑪ निष्पक्ष → निः + पक्ष
⑫ तिरस्कार → तिरः + कार

[संधि]

[Class-16]

'र' संबंधी नियम :-

* जिन शब्दों में 'र' होता है, लेकिन 'र' से पहले ई, ऊ होता है, तो संधि विच्छेद करने पर 'र' से पहले विसर्ग (:) और ई, ऊ लघु इ, उ में बदल जाता है।

* विसर्ग (:) से पहले इ, उ होगा, विसर्ग का लोप होने पर ये ई, ऊ में बदल जाएगा।

उदा०- ① नीरज → नि: + रज
② नीरस → नि: + रस
③ दूराज → दु: + राज
④ दूरम्य → दु: + रम्य
⑤ नीरोग → नि: + रोग

(ii) यदि विसर्ग से पहले **अ, आ** हो और बाद मैं कोई भी **स्वर**, 3, 4, 5, **य, र, ल, व, ह** हो तो विसर्ग का **र, ृ** बन जाता है।

पहचान → जिन शब्दों में 'र' होता है, उसका मतलब (:) होता है।
① आशीर्वाद → आशी: + वाद
② निराशा → नि: + आशा

③ दुरवस्था → दुः + अवस्था
④ पुनर्जन्म → पुनः + जन्म
⑤ दुर्बल → दुः + बल
⑥ निर्धन → निः + धन
⑦ निर्मला → निः + मला
⑧ निर्मल → निः + मल

→ अन्य नियम

(i) विसर्ग के बाद में क, ख, प, फ हो तो विसर्ग पर कोई प्रभाव नही पड़ता, विसर्ग में कोई बदलाव नही आऐगा

उदा० ① पयः पान → पयः + पान
② रजः कण → रजः + कण

(ii) यदि विसर्ग से पहले अ, आ और बाद में कोई भी स्वर हो तो विसर्ग पर कोई भी प्रभाव नही पड़ता

उदा० ① मनः कल्पित → मनः + कल्पित
② प्रातः काल → प्रातः + काल
③ अंतः करण → अंतः + करण
④ मनः कामना → मनः + कामना
⑤ अंतः पुर → अंतः + पुर
⑥ तत एव → ततः + एव
⑦ अतएव → अतः + एव
⑧ पयः आदि → पयः + आदि

[संधि प्रश्न उत्तर]

Class-17

① दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार या परिवर्तन को कहते हैं?
Ⓐ उपसर्ग
Ⓑ समास
✓Ⓒ संधि
Ⓓ प्रत्यय

② दो या दो से अधिक अत्यन्त समीपस्थ वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, वह है-
✓Ⓐ संधि
Ⓑ स्वर
Ⓒ व्यंजन
Ⓓ संधि-विच्छेद

③ निम्नलिखित में से एक कथन गलत है।-
ⓐ समास तोड़ने को विग्रह कहते हैं।
ⓑ संधि तोड़ने को विच्छेद कहते हैं।
✓ⓒ समास के पदों के प्रत्यय समास कहे जाते हैं।
ⓓ संधि में दो पदों का मेल होता है।

④ संधि कितने प्रकार की होती है → ③
- स्वर संधि ①
- व्यंजन संधि ②
- विसर्ग संधि ③

⑤ 'उन्माद' का संधि विच्छेद होगा?
→ उत् + माद

⑥ उद्घाटन का संधि-विच्छेद होगा → उत् + घाटन

⑦ 'उन्नमन' का संधि विच्छेद होगा → उत् + नमन

⑧ 'विपत + जाल = विपज्जाल' में कौनसी संधि है → व्यंजन

(9) 'महेन्द्र' का संधि विच्छेद क्या होगा → महा + इन्द्र

(10) 'संसार' का संधि विच्छेद क्या होगा → सम् + सार

(11) 'निः + कपट' में किसका संधि विच्छेद है? → विसर्ग संधि

(12) 'श्रद्धानंद' का संधि-विच्छेद क्या है → श्रद्धा + आनंद

(13) 'सदानंद' का संधि विच्छेद ज्ञात करो → सत + आनन्द

(14) 'पुस्तकालय' में कौन सी संधि है? → दीर्घ संधि

(15) अभि + उदय की संधि ज्ञात करो → अभ्युदय

(16) 'महोत्सव' का संधि विच्छेद होगा → महा + उत्सव

(17) 'भूर्जा' का संधि-विच्छेद होगा → भू + उर्जा

(18) 'रूपांतरण' का संधि विच्छेद होगा → रूप + अंतरण

(19) 'बालोचित' शब्द का संधि-विच्छेद होगा → बाल + उचित

(20) 'अत्युक्ति' शब्द में संधि है? → यण संधि

(21) 'ई + आ = या' किस संधि में इस प्रकार का परिवर्तन होता है? → यण संधि

(22) पयोधि का संधि-विच्छेद होगा → पयः + धि

(23) महैश्वर्य = महा + ऐश्वर्य में कौन-सी संधि नियम समाहित है? → आ + ऐ = ऐ

(24) 'सूर्योदय' का संधि-विच्छेद होगा → सूर्य + उदय

→ [समास] ←

Class-18

→ **समास (समस्त पद)**

* समास

- सम् (उपसर्ग)
- आस

(उपसर्ग) → सम् उपसर्ग जुड़कर समास बना है, जिसका अर्थ संक्षेप / सम्मिलन है।

* समास का शाब्दिक अर्थ संक्षेप (संक्षिप्तिकरण) होता है।

→ **परिभाषा** - दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से बने नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

उदा० - ① राजकुमार → राजा का कुमार

(राजकुमार ↓ समास)

* समास में पदों की संख्या → ②

पहला पद (पूर्व पद) + (उत्तर पद) दूसरा पद

इन दोनो पदो को मिलाकर समास का निर्माण होता है।

→ **समास विग्रह** → सामासिक शब्दो के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास विग्रह कहलाता है।

* समास का विलोम व्यास होता है।

Q→ समास (समस्त पद) का विलोम क्या होता है।

(A) विग्रह (B) विच्छेद (C) व्यास ✓ (D) A, C दोनों

→ समास के मूल भेद → (4) होते है।

→ हिंदी में समास के मुख्य भेद की संख्या → (6) होती है

→ **मूल समास** → (1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष समास (3) द्वंद्व समास (4) बहुव्रीहि समास

→ **मुख्य भेद** → (1) अव्ययीभाव (2) द्वंद्व समास (3) बहुव्रीही (4) तत्पुरुष समास

(4) तत्पुरुष समास → (5) द्विगु समास, (6) कर्मधारय समास

(1) अव्ययीभाव समास → पहला पद प्रधान/(अव्यय) होता है।

(2) तत्पुरुष समास → उत्तर पद प्रधान, कारक की (6) विभक्ति

(3) द्विगु समास → उत्तर पद प्रधान, संख्यावाची, समूह का बोध

(4) कर्म धारय समास → उत्तर पद प्रधान, (विशेषण - विशेष्य), जो है,

(5) द्वंद्व समास → दोनो पद प्रधान, एक दुसरे के विलोम

(6) बहुव्रीही समास → *दोनो पद अप्रधान होते हैं, किसी तीसरे
*पद को प्रधान बनाते है,
*भगवान की ओर इशारा

① अव्ययीभाव समास-

* जिस समास का पहला पद प्रधान/मुख्य और अव्यय होता है, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है।
* यह अव्यय पद वाक्य में क्रिया विशेषण का कार्य करता है।
* इस समास के प्रारंभ में प्रति, भर, आ, अ, अनु यथा, निर्, यावत आदि अव्यय मिलते हैं।

उदा०- ① प्रतिकूल ③ भरपेट ⑤ अनुरूप
② प्रत्येक ④ आजीवन ⑥ अकारण
⑦ यथासंभव
⑧ निर्विवाद

9@ --baee

ROJGAR WITH ANKIT

→ [समास] ← Part - 02 | Class - 19

→ अव्ययीभाव समास के उदाहरण → समास विग्रह

1. यावज्जीवन → जब तक जीवन है।
2. बेकाम → बिना काम के
3. बेकायदा → बिना कायदा के
4. बेफायदा → बिना फायदा के
5. दरअसल → असल में
6. बेमतलब → बिना मतलब के
7. यथाशक्ति → शक्ति के अनुसार
8. यथा समय → समय के अनुसार
9. लावारिस → बिना वारिस के

NOTE → जब एक पद को दोहराया जाता है, वहां अव्ययीभाव समास होता है।

10. घर-घर → घर ही घर
11. बार-बार → बार ही बार
12. घड़ी-घड़ी → घड़ी ही घड़ी
13. रातोंरात → रात ही रात

(14) उपकूल → कूल के समीप
(15) बखूबी → खूबी के साथ
(16) निधड़क → बिना धड़क के
(17) पलपल → पल ही पल
(18) दिनोंदिन → दिन ही दिन
(19) यथारूप → रूप के अनुसार
(20) आजीवन → जीवन भर

→ क्रिया विशेषण के रूप में

Ex- उसने भरपेट खाना खाया।

(2) तत्पुरुष समास

* इस समास का उत्तर पद (दूसरा पद) प्रधान होता है, और इस समास में कारक की (6) विभक्ति प्रयोग की जाती है।

→ कारक → (8) प्रकार के होते हैं,

* समास में कर्ता कारक और संबोधन कारक को छोड़कर अन्य (6) तत्पुरुष समास में उपयोग होते:

→ कारक → विभक्ति

(1) कर्ता कारक → ने [प्रथम विभक्ति] (प्रयोग नहीं)

(2) कर्म कारक → को [द्वितीय विभक्ति]

(3) करण कारक → के द्वारा, (से), (साधन) [तृतीया विभक्ति]

(4) संप्रदान कारक → के वास्ते, के लिए [चतुर्थ विभक्ति]

(5) अपादान कारक → से (तुलना, अलगाव) [पंचम विभक्ति]

(6) संबंध कारक → का, की, के, रा, री, रे [षष्ट विभक्ति]

(7) अधिकरण कारक → में, पर (आधार) [सप्तम विभक्ति]

(8) संबोधन कारक → हे!, अरे!, हो! [अष्टम विभक्ति]
└ (प्रयोग नहीं)

उदा०- (1) राजकुमारी → राजा की कुमारी (षष्टम विभक्ति)
(की → संबंध कारक)

(1) कर्म तत्पुरुष (द्वितीय विभक्ति) → (को)

(1) गगन चुम्बी → गगन को चूमने वाला

(2) स्वर्ग प्राप्त → स्वर्ग को प्राप्त

(3) यश प्राप्त → यश को प्राप्त करने वाला

(4) मतदाता → मत को देने वाला

(5) तिलकुटा → तिल को कूटकर बनाया हुआ

⑥ चिड़ीमार → चिड़िया को मारने वाला

⑦ जेब कतरा → जेब को कतरने वाला

kyoki ganga drr shivji ko khtr haii

Q- गंगा धर शब्द में समास ? (गंगा को धारण करने वाला।

Ⓐ तत्पुरुष Ⓑ कर्मधारय Ⓒ द्विगु ✓Ⓓ बहुव्रीहि

NOTE → यदि option में बहुव्रीहि समास न हो तब तत्पुरुष समास चुनेंगे।

(ii) करण तत्पुरुष (तृतीया विभक्ति) → (से, के द्वारा)

① तुलसीकृत → तुलसी द्वारा कृत

② रोगातुर → रोग से आतुर

③ जन्मजात → जन्म से उत्पन्न

④ गोबर गणेश → गोबर से निर्मित गणेश

⑤ जन्मांध → जन्म से अंधा

⑥ मनचाहा → मन से चाहा

⑦ हस्तलिखित → हाथ से लिखित

⑧ गुरुदत्त → गुरु से दत्त

⑨ अकालपीड़ित → अकाल से पीड़ित

⑩ वचनबद्ध → वचन से बद्ध

(iii) सम्प्रदान कारक → (के लिए, के वास्ते → (को)

1. पुस्तकालय → पुस्तक के लिए आलय
2. विद्यालय → विद्या के लिए आलय
3. रसोईघर → रसोई के लिए घर
4. युद्धभूमि → युद्ध के लिए भूमि
5. शपथपत्र → शपथ के लिए पत्र
6. गुरु दक्षिणा → गुरु के लिए दक्षिणा
7. हवन सामग्री → हवन के लिए सामग्री
8. स्नान घर → स्नान के लिए घर
9. गौशाला → गो के लिए शाला
10. मालगोदाम → माल के लिए गोदाम
11. सत्याग्रह → सत्य के लिए आग्रह

[समास] Part 03 Class-20

② तत्पुरुष समास

(iv) अपादान तत्पुरुष (पंचमी विभक्ति)

* यह समास अलग होने का बोध कराता है।

① रोगमुक्त → रोग से मुक्त
② नेत्रहीन → नेत्र से हीन
③ दोषमुक्त → दोष से मुक्त
④ धनहीन → धन से हीन
⑤ बुद्धिहीन → बुद्धि से हीन
⑥ भयभीत → भय से भीत
⑦ देशनिकाला → देश से निकाला
⑧ विद्यारहित → विद्या से रहित
⑨ जलरिक्त → जल से रिक्त
⑩ रक्तहीन → रक्त से हीन
⑪ शक्तिहीन → शक्ति से हीन
⑫ जातिभ्रष्ट → जाति से भ्रष्ट
⑬ धर्मविमुख → धर्म से विमुख
⑭ पापमुक्त → पाप से मुक्त
⑮ पथभ्रष्ट → पथ से भ्रष्ट
⑯ गृहविहीन → गृह से हीन

(v) संबंध तत्पुरुष (षष्ठी विभक्ति)

* इस समास में पदों के बीच संबंध स्थापित होता है।

① राजकुमार → राजा का कुमार
② राजकुमारी → राजा की कुमारी
③ राजमहल → राजा का महल
④ राजभवन → राजा का भवन
⑤ भारतरत्न → भारत का रत्न
⑥ सेनानायक → सेना का नायक
⑦ देशरक्षा → देश की रक्षा
⑧ दीपावली → दीपों की आवली
⑨ कर्मयोग → कर्म का योग
⑩ गंगाजल → गंगा का जल

11. गृहस्वामी → गृह का स्वामी
12. कन्यादान → कन्या का दान
13. चंद्रोदय → चंद्रमा का उदय
* राजनीति → राजा की नीति
14. मनोविज्ञान → मन का विज्ञान
15. विद्यासागर → विद्या का सागर
16. दीपावली → दीपों की अवली (अवली → कतार)

6. अधिकरण तत्पुरुष - (सप्तमी तत्पुरुष)

* इस समास में आधार का बोध होता है, (में, पर विभक्ति)

1. लोकप्रिय → लोक में प्रिय
2. दानवीर → दान में वीर
3. आपबीती → आप पर बीती
4. नगरप्रवेश → नगर में प्रवेश
5. रेलगाड़ी → रेल पर चलने वाली गाड़ी
6. वनवास → वन में वास
7. आत्मविश्वास → आत्म पर विश्वास
8. जलमग्न → जल में मग्न
9. मुनिश्रेष्ठ → मुनियों में श्रेष्ठ
10. कविश्रेष्ठ → कवियों में श्रेष्ठ
11. वाहनारूढ़ → वाहन पर आरूढ़
12. गृहप्रवेश → गृह में प्रवेश
13. घुड़सवार → घोड़े पर सवार
14. कार्यकुशल → कार्य में कुशल
15. शरणागत → शरण में आगत

⇒ तत्पुरुष समास का अन्य भेद

(i) **नञ समास** → इस समास में नकारात्मकता प्रकट होती है।

जैसे- कुछ सामासिक शब्द

1. असभ्य
2. अभाव
3. नासमझ
4. गैरहाजिर
5. गैरवाजिब
6. अज्ञान
7. अनपढ़
8. नापसंद
9. अवल

(ii) अलुक तत्पुरुष -

* इस समास के प्रथम पद में विभक्ति का लोप न होकर प्रथम पद में ही समाहित होती है।

उदा० ① युधिष्ठिर → युद्ध में स्थिर रहने वाला

② निशिचर → निशि में घूमने वाला (राक्षस)

③ मनसिज → मन में उत्पन्न (कामदेव)

④ वाचस्पति → वाक् में पति (बृहस्पति)

Q. दानवीर / युधिष्ठिर में समास बताओ ?

(A) तत्पुरुष ✓ (C) बहुव्रीहि ✓

(B) द्वंद्व (D) कर्मधारय

NOTE → * जब option में बहुव्रीहि समास न हो तब तत्पुरुष उत्तर लगायेंगे

* यदि तत्पुरुष और बहुव्रीहि दोनों दिये हों तो सदैव बहुव्रीहि समास ही उत्तर चुनेंगे।

NOTE - खाने के पदार्थ → [दहीबड़ा → दही में डूबा हुआ बड़ा]

* इस समास में कर्मधारय और तत्पुरुष दोनों समास हैं। Exam में कोई एक ही option मिलेगा।

ROJGAR WITH ANKIT

→ [समास] ← [Part 04] [Class-21]

③ कर्मधारय समास-

* जिस समास में पूर्वपद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य होता है, और समास विग्रह करने पर है जो, के समान आदि शब्दों की प्राप्ति होती है, वह कर्मधारय समास होता है। उदा०- कमलनयन → कमल के समान नयन

इस समास का उत्तर पद प्रधान होता है।

① महाकवि → महान है, जो कवि
② चरण कमल → कमल के समान चरण
③ प्रिय सखा → प्रिय है, जो सखा
④ परमेश्वर → परम है, जो ईश्वर
⑤ लौह, पुरुष → लौह रूपी पुरुष
⑥ कापुरुष → कायर है, जो पुरुष
⑦ महाकाल → महान है, जो काल
⑧ मृगनयनी → मृग के समान नयनों वाली
⑨ प्रधान मंत्री → प्रधान है, जो मंत्री
⑩ काली मिर्च → काली है, जो मिर्च
⑪ घनश्याम → घन के समान श्याम
⑫ लालमिर्च → लाल है, जो मिर्च
⑬ सतधर्म → सत्य है, जो धर्म

(14) नरसिंह → नर रूपी सिंह

अपवाद - (1) महावीर → महान है, जो वीर
(2) श्वेताम्बर → श्वेत है, जो अम्बर
(3) नीलकण्ठ → नीला है, जो कण्ठ
(4) नीलकण्ठ → विशेषण ↓ विशेष्य ↓

Q. नीलकण्ठ में समास बताओ ?
(A) कर्मधारय (B) द्विगु (C) बहुव्रीहि ✓ (D) तत्पुरुष

NOTE * यदि option में बहुव्रीहि option है, तो सदैव बहुव्रीहि उत्तर चुनें।
* यदि बहुव्रीहि न दिया हो तो कर्मधारय उत्तर चुनें।

(4) द्विगु समास -

* इस समास का पूर्व पद संख्यावाचक होता है।
* यह समास किसी समूह या समुदाय का बोध कराता है।

1) चौराहा → चार राहों का समूह
2) दोपहर → दो पहरों का समूह
3) नवरात्रि → नौ रातों का समूह
4) तिरंगा → तीन रंगों का समूह
5) त्रिवेणी → तीन वेणियों का समूह
6) चवन्नी → चार आनो का समूह
7) त्रिफला → तीन फलो का समूह
8) तिकोना → तीन कोनो का समूह
9) त्रिभुज → तीन भुजाओं का समूह
10) अष्टाध्यायी → आठ अध्यायों का समूह

(11) पंचवटी → पाँच वटों का समूह
(12) त्रिभुवन → तीन भवनों का समूह
(13) चौमासा → चार मासों का समूह
(14) त्रिशूल → तीन शूलों का समूह
(15) नवग्रह → नौ ग्रहों का समूह
(16) सप्तसती → सात सैंकडो का समूह / सात अवधियों का समूह (वर्ष)
(17) पंजाब → पाँच आबो की भूमि (पंजाब)
↳ (इसमें बहुव्रीहि समास है।)

NOTE - * सभी पूर्णांक (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, 90, 100) इनमें द्विगु समास होता है।
* सभी अर्धपूर्णांक (12, 13, 16, 76, 65, 85, 91 ----- 99)
↳ मे द्वंद्व समास के अंतर्गत आता है।

(5) द्वंद्व समास-

* इस समास के दोनो पद समान व एक दूसरे के विलोम होते हैं,
* इस समास में संयोजक चिन्ह प्राप्त (-) होता है,
* इस समास मे और तथा अथवा, या का प्रयोग किया जाता है।

(1) इतरेतर द्वंद्व → इस समास के दोनो पद अलग होते हैं।
उदा० - (1) रात-दिन → रात और दिन

② माँ – बाप → माँ और बाप
③ सीता – राम → सीता और राम
④ छोटा – बड़ा → छोटा और बड़ा

② समाहार द्वंद्व → दोनो पद एक समूह बनाते है, और बहुवचन के रूप में आते है।

उदा०- ① आना – जाना → आना और जाना
② पढ़ना – लिखना → पढ़ना और लिखना
③ कपड़ा – लत्ता → कपड़ा और लत्ता
④ गाना – बजाना → गाना और बजाना
⑤ दूध – पानी → दूध और पानी
⑥ साग – पात → साग और पात

③ वैकल्पिक द्वंद्व समास → * इसमें दोनो विरोधी होते है।
* किसी एक की मुख्य भूमिका होती है।

① धरती – आसमान → धरती या आसमान
④ गंगा – यमुना → गंगा या यमुना
⑤ इंद्र – लोक → इंद्र या लोक
⑥ राम – सीता → राम या सीता
⑦ फूल – कांटे → फूल या कांटे
⑧ गुरु – शिष्य → गुरु या शिष्य

→ [समास] ← | Part-5 | Class-22 |

⑥ बहुव्रीहि समास

* इस समास के दोनो पद अप्रधान होते है, तथा दोनो पद मिलकर किसी तीसरे पद का बोध कराते है।

उदा०- ① दशानन → दस है, आनन जिसके (रावण)
② लम्बोदर → लम्बा है, उदर जिसका (गणेश)
③ चक्रपाणि → चक्र है, पाणि जिसके (भगवान विष्णु)
④ वीणापाणि → वीणा है, पाणि जिसके (माँ सरस्वती)

अभ्यास प्रश्न-उत्तर

① 'यथाशक्ति' में कौन-सा समास है?
→ अव्ययीभाव समास (शक्ति के अनुसार)

② 'दशानन' में समास बताओ?
→ बहुव्रीहि समास

④ सप्तर्षि में समास बताओ?
→ द्विगु समास (सात ऋषियों का समूह)

⑤ 'भाई-बहिन' में कौन-सा समास है?
→ द्वंद्व समास

⑥ 'देवासुर' में समास बताओ?

→ द्वंद्व समास (देव - असुर)

⑦ 'राजा-रंक', 'राजा-रानी', 'राजा-प्रजा' में समास बताओ?

→ द्वंद्व समास

⑧ राजकुमार में समास बताओ?

→ तत्पुरुष समास (राजा का कुमार)

⑨ 'अन्न-जल', 'दाल-भात' समास बताओ?

→ द्वंद्व समास

⑧ 'पदच्युत' में कौन-सा समास है?

→ तत्पुरुष समास (पद से च्युत) अलगाव

⑨ किस समास में बहुव्रीहि समास नहीं है?

ⓐ चन्द्रशेखर (शिव) ⓑ लम्बोदर (गणेश) ⓒ चतुर्मुख ✓ⓓ गंगा यमुना

⑩ किस शब्द में बहुव्रीहि समास नहीं है?

→ ⓐ दशानन ✓ⓑ सप्तर्षि ⓒ चक्रपाणि ⓓ बजरंगी

⑪ किस शब्द में बहुव्रीहि समास नहीं है?

→ ⓐ गजानन ✓ⓑ सत्यव्रत ⓒ जितेन्द्रिय ⓓ षटकोण

⑫ किस शब्द में तत्पुरुष समास नहीं है?

ⓐ मदांध ⓑ जेबखर्च ✓ⓒ दालरोटी ⓓ विद्यालय

ROJGAR WITH ANKIT

(13) किस शब्द में तत्पुरुष समास नहीं है?
(a) भयभीत (b) रसोईघर ✓(c) गंगा-यमुना (d) घुड़सवार

(14) किस शब्द में द्वंद्व समास नहीं है?
(a) पाप-पुण्य (b) मार-पीट (c) राजा-रानी ✓(d) पथभ्रष्ट

(15) किस शब्द में द्वंद्व समास नहीं है?
(a) राग-द्वेष ✓(b) यथासाध्य (c) जीव-जन्तु (d) दूध-दही

(16) किस शब्द में द्वंद्व समास नहीं है?
✓(a) रोगमुक्त (b) जात कुजात (c) धन-दौलत (d) घी-शक्कर

(17) किस शब्द में कर्मधारय समास नहीं है?
(a) नीलाम्बुज (b) चन्द्रमुखी (c) पुरुषोत्तम ✓(d) चौपाई

(18) किस शब्द में कर्मधारय समास नहीं है?
(a) सज्जन (b) नीलगाय ✓(c) पंचमुख (d) भलामानस

(19) किस शब्द में द्विगु समास नहीं है।
✓(a) चतुर्भुज (b) पंचवटी (c) नवरत्न (d) त्रिवेणी

(20) किस शब्द में द्विगु समास नहीं है?
(a) त्रिफला (b) चौराहा ✓(c) सद्गुण (d) सतसई

(21) किस शब्द में द्विगु समास नहीं है?
✓(a) महाजन (b) अठन्नी (c) नवरत्न (d) पंचतत्व

→ [संज्ञा] ←

Class - 23

→ हिन्दी में पदो की संख्या (5) होती है।

① संज्ञा
② सर्वनाम
③ विशेषण
④ क्रिया

→ विकारी (बदलाव)

⑤ अव्यय → अविकारी शब्द

→ **विकारी शब्द** → वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, काल, कारक के साथ बदलाव आए, विकारी शब्द कहलाते है।

→ **अविकारी शब्द** → जिनमे लिंग, वचन, काल, कारक के साथ बदलाव न आऐ अविकारी शब्द कहलाते है।

→ संज्ञा

सम + ज्ञा ⇒ सम्यक ज्ञान

* संज्ञा को नाम कहते है।
* संज्ञा पहचान होती है।

→ **परिभाषा** → किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, अथवा, भाव के नाम को संज्ञा कहते है।

उदाहरण → मोहन, कलम, दिल्ली, क्रोध, आदि।

ROJGAR WITH ANKIT

→ संज्ञा के मूल भेद ② होते हैं।

① यथार्थवाचक / दृश्य वास्तविक, मूर्त
(i) व्यक्तिवाचक
(ii) जातिवाचक

② अयथार्थवाचक / अवास्तविक अदृश्य, अमूर्त
(iii) भाववाचक

* प्राचीन हिंदी में संज्ञा के भेद → पाँच थे
* वर्तमान / आधुनिक हिंदी में संज्ञा के भेद → तीन

→ **प्राचीन भेद ⑤**

① व्यक्तिवाचक
② जातिवाचक → ④ द्रव्यवाचक / पदार्थवाचक, ⑤ समूहवाचक, समुदाय वाचक
③ भाववाचक

→ वर्तमान / आधुनिक हिंदी में संज्ञा के भेद - ③
① व्यक्तिवाचक
② जातिवाचक
③ भाववाचक

① व्यक्तिवाचक संज्ञा

* किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, स्थान, के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा० - ① देशों के नाम → जापान, चीन, इंग्लैण्ड, अमेरिका भारत आदि।

② नदियों के नाम → गंगा, यमुना, गोदावरी, झेलम, कावेरी

③ व्यक्तियों के नाम → राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, मोहन, आदि

④ पर्वतों के नाम → हिमालय, कंचन जंगा, माउंट एवरेस्ट, आदि

⑤ झीलों के नाम → हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर

(arrow: झीलों के नाम → चिल्का, वुलर, सांभर झील)

⑥ महासागरों के नाम → चिल्का, वुलर, सांभर झील, आदि।

(arrow: महासागरों के नाम → हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर)

⑦ ग्रंथों के नाम → रामायण, महाभारत, गीता, कुरान शरीफ

⑧ समाचार पत्रों के नाम → अमर उजाला, हिन्दुस्तान टाइम्स दैनिक जागरण आदि।

⑨ शहरों के नाम → दिल्ली, राजस्थान, जयपुर, राँची, कोलकाता

Qu → निम्न वाक्य में व्यक्तिवाचक संज्ञा बताओ?

'मोहन अच्छा विद्यार्थी है।

(a) मोहन ✓ (b) अच्छा (c) विद्यार्थी (d) इनमें से कोई नहीं।

विशेष → * व्यक्तिवाचक संज्ञा सदैव एकवचन होती है।

* और दुनिया में अकेली होती है।

[संज्ञा] Part 02 Class-२५

② जातिवाचक संज्ञा :-

* किसी वस्तु, प्राणी की सम्पूर्ण जाति का बोध कराने वाले शब्दो को जातिवाचक संज्ञा कहते है।
* जातिवाचक संज्ञा का बहुवचन बनाया जा सकता है।

उदा० → ① लड़का → लड़के
② नदी → नदियाँ
③ लड़की → लड़कियाँ

जातिवाचक संज्ञा शब्द → नदी, पर्वत, पहाड़, कलम पुस्तक, शहर।
* पदो के नाम → डॉ, वकील, राज्यपाल, मुख्यमंत्री
* प्राकृतिक आपदा → बाढ़, भूकम्प, सुनामी, चक्रवात, आँधी, तूफान

Q- 'लहर' कौन-सी संज्ञा है ?
ⓐ व्यक्तिवाचक ⓑ पदार्थवाचक ⓒ जातिवाचक ✓
ⓓ भाववाचक

③ द्रव्य, पदार्थवाचक संज्ञा :

* जिन शब्दो से किसी द्रव्य पदार्थ का बोध होता है
* जिनकी गिनती न हो सके जिनको मापा तोला जाये
* ऐसी चीजें द्रव्य, पदार्थवाचक संज्ञा के अंतर्गत आती है।

जैसे→ पानी, गैस, डीजल, पैट्रोल, सोना, चाँदी, ताँबा, घी तेल डाल्डा आदि।

④ समूह व समुदाय वाचक संज्ञा

* वे शब्द जो किसी समूह या समुदाय का बोध कराते है। वे समूह वाचक संज्ञा शब्द कहलाते है।

जैसे→ सेना, विद्यालय, मण्डल, गुच्छा, वर्ग, कक्षा, समिति गट्ठर, राज्यसभा, भीड़, झुण्ड, जत्था, मेला, परिवार, Rowa टीम

⑤ भाव वाचक संज्ञा

* इसे अदृश्य, अवास्तविक, अमूर्त, अयथार्तवादी भी कहते है।
* वे संज्ञा शब्द जो हर्ष, घृणा, आश्चर्य, भाव का बोध कराते है, भाववाचक संज्ञा शब्द कहलाते है।
* यह दिखाई नही देती इसको सिर्फ महसूस करते है।

पहचान→ किसी शब्द के अंत में (आ, त्व, पन, वट, हट) आस आदि प्रत्यय आते है।

जैसे→ बुढ़ापा, मिठास, सजावट, सुंदरता, बचपन, अपनापन लड़कपन, घबराहट, गड़गड़ाहट, मित्रा, वीरता, दरिद्रता बुराई, अच्छाई, जवानी, गंभीरता, उत्सुकता, ममता, स्त्रित्व व्यक्तित्व, मानवता, ईमानदारी।

विशेष → भाववाचक संज्ञा सदैव एकवचन होती है, भाववाचक संज्ञा का बहुवचन बनाने पर वह जातिवाचक संज्ञा बन जाती है।

भाववाचक ⟶ जातिवाचक

① अच्छाई —बहुवचन→ अच्छाइयाँ

② दूरी —बहुवचन→ दूरियाँ

③ प्रार्थना —बहुवचन→ प्रार्थनाएँ

Q1- राम ईमानदार लड़का है।, रेखांकित शब्द में कौन-सी संज्ञा है।

⟹ ईमानदार एक विशेषण शब्द है।

↳ 'ईमानदारी' एक भाववाचक संज्ञा है।

Q2- 'कोयला' किस संज्ञा के अंतर्गत आता है।

Ⓐ जातिवाचक Ⓒ समूहवाचक

Ⓑ पदार्थवाचक Ⓓ भाववाचक

↳ द्रव्यवाचक / पदार्थवाचक संज्ञा 'एकवचन' होती है।

Q3-(लोहा, चाँदी, तेल, दिल्ली) किसमें 'व्यक्तिवाचक' संज्ञा है।

⟶ दिल्ली

* अन्य शब्दों में पदार्थवाचक संज्ञा है।

ROJGAR WITH ANKIT

[संज्ञा प्रश्न उत्तर] ← Class- 25

① संज्ञाओं के साथ आने वाली विभक्तियों को क्या कहा जाता है? → विश्लिष्ट विभक्ति

② 'राष्ट्र' की भाववाचक संज्ञा है → राष्ट्रीयता

③ 'दासत्व' किस प्रकार की संज्ञा है? → भाववाचक संज्ञा

④ समूहवाचक संज्ञा शब्द बताओ → भीड़, सभा, कक्षा, परिवार

⑤ 'घर', 'पहाड़' और 'नदी' किस संज्ञा भेद के अंतर्गत आएगा → जातिवाचक संज्ञा

⑥ * मिठास → भाववाचक संज्ञा
* कर्मचारी → जातिवाचक संज्ञा
* गंगा → व्यक्तिवाचक संज्ञा
* चीनी → द्रव्य / पदार्थवाचक संज्ञा

⑦ * मजदूर → जातिवाचक संज्ञा
* मजदूरी → भाव वाचक संज्ञा

⑧ जिन संज्ञाओं से एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों का बोध हो, उन्हें कहते हैं? → जातिवाचक संज्ञा

⑨ 'ग्राम' शब्द में संज्ञा बताओ? → जातिवाचक संज्ञा

(10) सुश्री हिमादास दौड़ में प्रथम स्थान पर आयी हैं। इस वाक्य में 'भाववाचक संज्ञा' है → दौड़

(11) * मधुरता →
* रूकावट →
* लोभ →
→ भाववाचक संज्ञा
* योगी → व्यक्तिवाचक संज्ञा

(12) जिस संज्ञा शब्द से किसी गुण, दोष, दशा, आदि का बोध होता है, उसे ____ कहते हैं। → भाववाचक संज्ञा

(13) * मनुष्य → जातिवाचक संज्ञा
* मनुष्यता → भाववाचक संज्ञा

(14) * खटाई →
* मिठाई → जातिवाचक
* दूध → द्रव्यवाचक संज्ञा
* ठण्ड → भाववाचक
* तेजाब → द्रव्यवाचक संज्ञा
* सेना → समूह वाचक संज्ञा
* प्रेम → भाववाचक संज्ञा
* बुढ़ापा → भाववाचक संज्ञा

(15) समुद्रगुप्त 'भारत का नेपोलियन' था। यहाँ नेपोलियन किस प्रकार की संज्ञा है? → जातिवाचक संज्ञा

(16) "गाँधी को राष्ट्रपिता कहा गया है" वाक्य में संज्ञा किससे किससे किस रूप में परिवर्तित हो रही है?
→ जातिवाचक से व्यक्तिवाचक में

(17) 'कवि' शब्द में कौन सी संज्ञा है? → जातिवाचक

(18) पशु चर रहे हैं। रेखांकित पद है? → जातिवाचक

(19) आपका घर जिस शहर में है, उस शहर का नाम संज्ञा का कौन-सा भेद सूचित करता है? → व्यक्तिवाचक

(20) हमारे देश में जयचन्दों की कमी नहीं है। में जयचन्दो संज्ञा के किस भेद के अंतर्गत आता है? → जातिवाचक

(21) * गरीबी → भाववाचक संज्ञा

* अमीरी → भाववाचक "

* ईमानदारी → भाववाचक "

[सर्वनाम]

Class-26

→ सर्वनाम

→ शाब्दिक अर्थ [सर्व + नाम]
(सबका + नाम)

→ परिभाषा

* सर्वनाम एक विकारी शब्द है, संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्दो को सर्वनाम कहते है।
* संज्ञा की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए सर्वनाम का प्रयोग होता है, और यह वाक्य को सुंदर बनाता है।

उदा० → (राम) कक्षा 10 का विद्यार्थी है, (राम) → वह कक्षा में समय पर पहुँचता है।, (राम) → वह अपना स्कूल कार्य समय से पहले कर लेता है।

- इस वाक्य में संज्ञा शब्द राम की पुनरावृत्ति रोकने के लिए (वह) सर्वनाम का प्रयोग किया है।

→ हिन्दी में सर्वनाम के भेद → ⑥

(i) पुरुष वाचक सर्वनाम → [मैं, तू]

(ii) निजवाचक सर्वनाम → [आप (स्वयं)]

(iii) निश्चयवाचक सर्वनाम → [यह, वह]

(iv) अनिश्चय वाचक सर्वनाम ⟶ [कोई, कुछ]

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम (?) ⟶ [कौन, क्या]

(vi) संबंध वाचक सर्वनाम ⟶ [जो, सो]

→ हिंदी में मूल सर्वनाम या हिंदी के सर्वनाम की संख्या (11) होती है।

→ [मैं (1), तू (2), आप (3), यह (4), वह (5), कोई (6), कुछ (7), कौन (8), क्या (9), जो (10), सो (11)]

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम :-

* जो सर्वनाम पुरुष जाति का बोध कराते हैं, पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

* पुरुषवाचक सर्वनाम के (3) भेद होते हैं।

(i) उत्तम पु० (प्रथम पुरुष) ⟶ इसमे सिर्फ वक्ता आता है (बोलने वाला इसमे मैं, हम, हमारा, हमारे, हमको आदि शब्द प्रयोग होते हैं। इन शब्दों में कारक विभक्ति लगाकर इनका बहुवचन बना लेते हैं।

(ii) मध्यम पुरुष ⟶ इसमें श्रोता (सुनने वाला) आता है, इसमें [आप, तू तुम, तुम्हारा, तुमको, तुमसे, आपको ____ इत्यादि शब्दो का प्रयोग होता है।

ROJGAR WITH ANKIT

(iii) अन्यपुरूष → इसमें वक्ता और श्रोता मिलकर किसी तीसरे अन्य व्यक्ति की ओर इशारा करते है।
इसमें [ये, वे, इन्होंने, उन्होंने] आदि शब्द का प्रयोग होता है।

① मुझे कल क्लास नहीं लेनी → [उत्तम पुरूष सर्वनाम]
② तुम्हें इस बार नौकरी लेनी है। → [मध्यम पुरूष]
③ वह अपने मामा के घर जा रहा है। → [अन्य पुरूष]
④ राहुल प्रतिभाशाली विद्यार्थी है। → [अन्यपुरूष]
⑤ आप खाना खाइए → [मध्यम पुरूष]

[सर्वनाम] Part-2 Class-27

② निश्चयवाचक सर्वनाम [यह, वह]

* जो सर्वनाम शब्द निश्चित प्राणी, वस्तु का बोध कराते हैं, वे शब्द निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

विशेष→ निश्चयवाचक सर्वनाम में अधिकतर निर्जीव चीजों का प्रयोग होता है।

* इसे संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं,

(यह → पास के लिए) (वह → दूर के लिए)

जैसे- ① यह मेरा घर है।

② यह मेरे दोस्त की गाड़ी है।

③ यह मेरे दादा की छड़ी है।

④ वह मेरा फोन है।

③ अनिश्चय वाचक सर्वनाम [कोई, कुछ]

* जो सर्वनाम शब्द निश्चित प्राणी, वस्तु का बोध नहीं कराते उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

[कोई → प्राणी के लिए] → सजीव के लिए।

[कुछ → वस्तु के लिए] → निर्जीव के लिए।

जैसे → ① कोई बाहर से आवाज लगा रहा है।
② कोई तुम्हें बुला रहा है।
③ कुछ सेब यहां पड़े हैं।
④ चाय में कुछ गिर गया।

④ प्रश्नवाचक सर्वनाम [कौन, क्या] (कब, किसको, किसे)

* जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे सर्वनाम शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- ① तुम्हारा क्या नाम है?
② दरवाजा किसने खोला था?
③ तुम क्या पढ़ रहे हो?
④ तुम कब आये थे?
⑤ क्या कल कक्षा चली थी?

⑤ संबंधवाचक सर्वनाम

* जो सर्वनाम शब्द वाक्यों तथा वाक्यांशों में संबंध बताते हैं, संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
* [जो, सो (वो)], [जैसा, वैसा], [जिसकी, उसकी]
↳ आदि शब्द देखने को मिलते हैं।

जैसे → ① जो आया है, सो जाएगा।
② जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
③ जिसको आपने बुलाया वो नहीं आया।
④ जिसकी लाठी उसकी भैंस।

⑥ निजवाचक सर्वनाम [खुद, स्वंम, आप, निजी, अपनेआप]

* जिस वाक्य में [स्वंम, निजी, आप, अपनेआप] आदि सर्वनाम शब्द आते है, वहां निजवाचक सर्वनाम होता है। [इस सर्वनाम में कर्ता अपना काम स्वंम करता है]

जैसे → ① साक्षी अपना काम स्वंम करती है। → [निजवाचक]
② मै अपने कपड़े स्वंम सिलती हूँ → [निजवाचक]
③ राम अपना खाना अपने आप बनाता है। → [निज]
④ में आप चला जाऊंगा। → [निजवाचक]
⑤ में खुद खा लूंगा। → [निजवाचक]
⑥ आप भला तो जग भला। → [निजवाचक]

① (मैं) पुस्तक पढ़ता हूं → [उत्तम पुरूष]
② शीला अपना नाश्ता स्वंम बनाती है। → [निजवाचक]
③ मुझे कल दिल्ली जाना है। → [उत्तम पुरूष]
④ आप अपना काम करो। → [मध्यम पुरूष]

सर्वनाम प्रश्न उत्तर

Class-28

① सर्वनाम के कुल कितने भेद होते हैं → 6

② हिंदी में कुल कितने सर्वनाम हैं? → 11

③ हिंदी में मूल सर्वनाम हैं? → 11

④ जो शब्द पूर्वापर संबंध से किसी भी संज्ञा के बदले आता है, उसको क्या कहते हैं? → सर्वनाम

⑤ 'हम ताजमहल देखने जाएंगे' इस वाक्य में 'हम' सर्वनाम का कौन-सा प्रकार है? → पुरुषवाचक सर्वनाम

⑥ 'उसका भाई खेलता है।' वाक्य में सर्वनाम है-
→ पुरुषवाचक सर्वनाम [अन्य पुरुष]

⑦ 'वह एक अच्छा छात्र है।' वाक्य में संकेतवाचक सर्वनाम है? → वह [निश्चय वाचक सर्वनाम]

⑧ * हम →
* तू → पुरुषवाचक सर्वनाम
* मैं →
* कोई → अनिश्चयवाचक सर्वनाम
* मुझे → उत्तम पुरुष

(11) आप की सब राह देख रहे हैं। रेखांकित शब्द कौन सा सर्वनाम है? → निजवाचक सर्वनाम

(12) दिया गया वाक्य किस पुरुष का उदाहरण है,
- जीवेश एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी है।
→ अन्य पुरुष

(13) इनकी तुम्हारे में कोई रुचि नहीं है। → अन्य पुरुष

(14) कौन निजवाचक सर्वनाम नहीं है?
(a) निज ✓(b) हम (c) आप (d) खुद (e) स्वंम

(15) सफलता पाने के लिए तुम्हें **स्वंम** कठोर परिश्रम करना पड़ेगा → निजवाचक सर्वनाम

(16) 'निजवाचक सर्वनाम' का प्रयोग किस वाक्य में हुआ है?
(a) आज अपनापन कहाँ है।
(b) यह समस्या मैं आप ही हल कर लूँगा।
(c) यह मेरी निजी पुस्तक है।
(d) अपनों से क्या छिपाना
(e) वीना अपने कपड़े स्वंम धोती है।

(18) * मैं → पुरुषवाचक
* कौन → प्रश्नवाचक
* यह → निश्चयवाचक
* कुछ → संबंधवाचक नही होगा, अनिश्चय वाचक सर्वनाम सही उत्तर है।

(19) 'दूध में कुछ पड़ गया है' → अनिश्चय वाचक सर्वनाम

(20) 'कोई आ रहा है' → अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(21) 'जिसको आपने बुलाया था, वह बाजार गया है।
→ संबंध वाचक सर्वनाम

(22) 'जैसे वह आया वैसे ही चला गया' → संबंधवाचक

(23) आप मुझसे क्या चाहते हैं' → निजवाचक सर्वनाम

(24) प्रश्नवाचक सर्वनाम का उदाहरण नहीं है?
(a) कब (b) किन्हें (c) किसको (d) कहाँ ✓(e) उसको

(25) सर्वनाम शब्द कौन-सा है?
(a) नींद (b) रोग (c) सफाई ✓(d) कौन

(26) संयुक्त सर्वनाम का उदाहरण कौन-सा है?
(a) कोई (b) सब (c) कुछ ✓(d) कुछ न कुछ

[विशेषण] Class-29

परिभाषा → विशेषण एक विकारी शब्द है, संज्ञा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

उदा० ① सीता सुन्दर है।
सीता → संज्ञा, सुन्दर → विशेषण

② घोड़ा काला है।
घोड़ा → संज्ञा, काला → विशेषण

→ विशेषण के अंग → ③

① → विशेष्य → जिसकी विशेषता बताई जाती है।

② → विशेषण → जिसके माध्यम से विशेषता बताई जाती है।

③ → प्रविशेषण → जो शब्द विशेषण की भी विशेषता बताते हैं।

उदा० - ① मोहन ईमानदार है।
मोहन → विशेष्य, ईमानदार → विशेषण

② सीता बहुत सुन्दर है।
सीता → विशेष्य, बहुत → प्रविशेषण, सुन्दर → विशेषण

→ विशेषण के भेद → ④

① गुणवाचक विशेषण
② सार्वनामिक विशेषण

③ परिमाण वाचक विशेषण → निश्चित परिमाण
→ अनिश्चित परिमाण

④ संख्यावाचक विशेषण → निश्चित संख्यावाचक
→ अनिश्चित संख्यावाचक

→ विधेय विशेषण

* जब विशेषण पहले और विशेष्य बाद में आये तो विधेय विशेषण हो जाता है।

जैसे - ① काला घोड़ा ② पीला फूल

→ उद्देश्य विशेषण

* जब विशेष्य पहले और उसके बाद विशेषण आते तब उद्देश्य विशेषण हो जाता है।

जैसे- ① घोड़ा काला है। ② फूल पीला है।

① गुणवाचक विशेषण

* जो विशेषण संज्ञा सर्वनाम के गुण, दोष, आकार दशा, स्थान, काल आदि का बोध कराते है वे-

- विशेषण गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

① गुण बोधक → अच्छा, बुरा, कठिन, सरल, सच्चा, बेईमान

② दशा बोधक → नया, पुराना, बीमार, रोगी, पतला, कमजोर मोटा, सूखा, आदि।

③ दिशा बोधक → उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी आदि।

④ स्वाद बोधक → खट्टा, मीठा, नमकीन, तीखा आदि।

⑤ रंग बोधक → लाल, हरा, नीला, पीला, गुलाबी, आदि।

⑥ कालबोधक → प्राचीन, आधुनिक, ऐतिहासिक, मौसमी आदि,

⑦ स्थान बोधक → भारतीय, विदेशी, जापानी, चीनी, रूसी।

⑧ आकार बोधक → बड़ा, छोटा, तिकोना, आयताकार, वर्गाकार चौड़ा, लम्बा, आदि।

उदा०- ① कमरा चौड़ा है।

② जया सुंदर लड़की है।

③ राम मोटा है।

④ संतरा ताजा है।

⑤ यह फल मौसमी है।

⑥ श्याम नाटा है।

⑦ नाशपाती मीठी है।

⑧ मेरी कमीज <u>पुरानी</u> है।

⑨ यह साड़ी <u>बनारसी</u> है।

⑩ यह अखबार <u>साप्ताहिक</u> है।

⑪ <u>भारतीय</u> लोग <u>धार्मिक</u> हैं।

विशेषण Part-02 Class-30

→ **परिमाणवाचक विशेषण** - [यह गिने नही जाते, मापे तोले जाते है।

* जिस विशेषण से किसी संज्ञा सर्वनाम की माप-तौल का का पता चलता है। उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते है।

(i) **निश्चित परिमाणवाचक**

* जिन विशेषण शब्दो से निश्चित माप-तोल का पता चलता है।

उदा० ① एक लीटर दूध
② 2 मीटर कपड़ा
③ चार गज जमीन
④ दो किलो चीनी

(ii) **अनिश्चित परिमाणवाचक**

* जिन विशेषण शब्दो से वस्तु की निश्चित मात्रा का बोध नही होता ।

उदा० ① बहुत पानी !
② कुछ आटा !
③ बहुत सारा खाना बर्बाद होगया।
④ थोड़ी चीनी !
⑤ जरा सा दूध !

③ संख्यावाचक विशेषण :-

* जिन विशेषण शब्दो से संज्ञा सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते है।
* इनकी गणना की जा सकती है।
* संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते है
(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण

* इनको गिना जा सकता है।

→(निश्चित संख्यावाचक के भेद)

① पूर्णांक बोधक → एक, दस, बीस, चालीस, पचास, हजार।
② अपूर्णांक बोधक → सवा, ढाई, पौना, साढ़े तीन आदि।
③ क्रम बोधक → पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि।
④ आवृत्ति बोधक → दोगुना, तीनगुना, चारगुना, आदि।
⑤ समूह वाचक → दोनों, तीनों, चारो, पाँचों आदि।
⑥ प्रत्येक बोधक → एक, एक हरएक, प्रत्येक आदि।

उदा०- ① पाँच गाय

② दस लड़के

④ पचास रुपये

⑤ तीसरा आदमी

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक

* निश्चित संख्या का बोध नहीं होता है।

[कुछ, कोई, बीसियों, हजारों आदि] शब्द आते हैं।

उदा०- ① कुछ गाय पार्क में चर रही हैं।

② कुछ लड़के खड़े हैं।

③ कुछ रुपए चाहिए।

④ सार्वनामिक विशेषण

* वह सर्वनाम जो संज्ञा से पहले आकर विशेषण का कार्य करते हैं, और उसकी विशेषता बताते हैं।

उदा०- ① यह घर मेरा है।
यह – सर्वनाम, घर – संज्ञा

इसे संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं।

② यह पैन मेरा है।
यह – सर्वनाम, पैन – संज्ञा

(3) कितने रुपए तुम्हें चाहिए।

(4) वह लड़की विद्यालय जा रही है।

(5) वह लड़का दौड़ रहा है।

(6) ऐसा इंसान नहीं देखा।

→ [विशेषण] ← Part - 03 Class - 31

→ विशेषण की अवस्थाएँ :-

* विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं।

(i) (मूलावस्था)	(ii) (उत्तरावस्था)	(iii) (उत्तमावस्था)
* जब किसीसे तुलना न हो।	* जब तुलना अन्य (दो, तीन, चार) से हो	* जब तुलना में सबसे श्रेष्ठ हो।
जैसे ① उच्च	① उच्चतर	① उच्चतम
② निम्न	② निम्नतर	② निम्नतम
③ सुन्दर	③ सुन्दरतर	③ सुन्दरतम
* राम ईमानदार है।	* राम महेश से ईमानदार है।	* राम सबसे ईमानदार है।

→ अभ्यास प्रश्न

① दिल्ली में ऊँची इमारतें हैं।

→ 'ऊँची' गुणवाचक विशेषण है।

② 'सफेद कमीज' में कौनसा विशेषण है।

→ गुणवाचक

③ 'चाय फीकी है।' वाक्य में फीकी किस प्रकार का विशेषण है।

→ गुणवाचक विशेषण

④ 'मोहन एक शालीन लड़का है।' वाक्य में 'शालीन' शब्द क्या है। → गुणवाचक विशेषण

⑤ 'श्रीदेवी के लिए सु वर मिला है' - सु शब्द क्या है।

→ गुणवाचक विशेषण

⑥ 'संस्कृति' का विशेषण कौन-सा है?

→ सांस्कृतिक

⑦ 'विद्वान व्यक्ति पूज्य होते हैं' - वाक्य में प्रयुक्त विशेषण कौन-सा है? → गुणवाचक

⑧ कुछ शब्द और उनसे बनने वाले विशेषण।

① अध्यात्म → आध्यात्मिक

② काँटा → कंटक

③ लम्बाई → लंबा

(9) यह पुस्तक किसकी है? में रेखांकित शब्द का पद-परिचय दीजिए → सार्वनामिक विशेषण [पुस्तक → विशेष्य]

(10) * वह छात्र कक्षा में प्रथम आया → सार्वनामिक विशेषण

* कोई आदमी आया है → अनिश्चयवाचक

* कोई बच्चा नहीं खेलेगा → सार्वनामिक विशेषण

* 'पहली पुस्तक वापस करो → क्रमवाचक विशेषण

* प्रयागराज में दसवाँ व्यक्ति कोरोना पीड़ित है → क्रमवाचक विशेषण

* सौ गुना लम्बा → आवृत्तिवाचक

* अध्यापक ने मुझे चार पुस्तकें दीं → संख्यावाचक

* कुछ लोग इधर ही आ रहे हैं → अनिश्चित संख्यावाचक

* पहाड़ों पर बहुत वर्षा होती है → परिमाण वाचक

* थोड़ी सी नमकीन खरीद लाओ → अनिश्चित परिमाणवाचक

(11) यह गाय अधिक दूध देती है। अधिक विशेषण किसकी विशेषता बता रहा है? → दूध की

[क्रिया] Class-31

→ परिभाषा-

* क्रिया शब्द का निर्माण (कृ) धातु से हुआ है।
* जिस शब्द से किसी कार्य का होना या करना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे- ① राम पानी पी रहा है। - [पानी पीने की क्रिया]
② मोहन दौड़ रहा है। - [दौड़ने की क्रिया]

→ क्रिया का निर्माण धातु से होता है।
→ क्रिया का मूल रूप धातु होता है।
→ धातु में 'ना' प्रत्यय लगाकर क्रिया बनती है।

धातु + प्रत्यय ⇒ क्रिया

① पढ़ + ना → पढ़ना
② लिख + ना → लिखना
③ खा + ना → खाना
④ पी + ना → पीना
⑤ जा + ना → जाना

ROJGAR WITH ANKIT

→ क्रिया के भेद - (2)

(i) रचना व कर्म के आधार पर - (2) → (1) अकर्मक, (2) सकर्मक

(ii) प्रयोग के आधार पर → (8)

* मुख्य भेद (5) ही होते हैं।

1. पूर्वकालिक क्रिया
2. प्रेरणार्थक क्रिया
3. संयुक्त क्रिया
4. नामधातु क्रिया
5. सामान्य क्रिया
6. सहायक क्रिया
7. कृदंत क्रिया
8. सजातीय क्रिया

→ सर्वनाम के साथ आने वाली कारक की विभक्ति को संश्लिष्ट कहते हैं। (1) उसने मुझे मारा।

→ संज्ञा पदो के साथ कारक की विभक्ति अलग आती है, उसे विश्लिष्ट कहते हैं। (1) राम ने मुझे मारा।

① रचना व कर्म के आधार पर क्रिया के भेद - ②

① अकर्मक क्रिया

* अकर्मक → अ + कर्मक → बिना - कर्म के

जिस वाक्य में क्रिया का प्रभाव सीधा कर्त्ता पर पड़ता है, वहाँ अकर्मक क्रिया होती है।

कर्त्ता + क्रिया → अकर्मक क्रिया

जैसे- हँसना, दौड़ना, सोना, चलना, उड़ना, रोना, नाचना

1. मोहन दौड़ता है।
2. सीता सोती है।
3. पेड़ से पत्ता गिरता है।
4. पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।
5. बच्चा रो रहा है।
6. कुछ बालक हँस रहे हैं।
7. साँप रेंगता है।

विशेष- जिस वाक्य में क्रिया से पहले क्या लगाकर उत्तर नहीं मिलता वहाँ अकर्मक क्रिया होती है।

① राजेश (कर्त्ता) जोर से रो (क्रिया) रहा है। → अकर्मक क्रिया

② राधा (कर्त्ता) गाना (कर्म – क्या) गा (क्रिया) रही है। → सकर्मक क्रिया

→ [क्रिया] ← [Part-02] [Class-32]

→ अकर्मक क्रिया के उदाहरण

① वे सो रहे हैं।
② बादल बरस रहे हैं।
③ मोहन टहल रहा है।
④ पेड़ से पत्ता गिरता है।

पेड़ से → स्थान अलग ↳ अपादान कारक; पत्ता → कर्ता; गिरता → क्रिया

* इन वाक्यों में कर्म का आभाव है, कर्ता के बाद क्रिया है, कर्म नहीं मिलता

② सकर्मक क्रिया

सकर्मक → स + कर्मक → कर्म के साथ

* जिस वाक्य में क्रिया का प्रभाव कर्ता पर नहीं, सीधा कर्म पर पड़ता है, वहां सकर्मक क्रिया होती है।

* जिस वाक्य में क्रिया से पहले क्या लगाने पर उत्तर मिल जाता है, वहां सकर्मक क्रिया होती है।

जैसे- [खाना, पढ़ना, पीना, गाना, सिलना, खेलना आदि]

उदा० - ① शीतल पुस्तक पढ़ रही है। [क्या पढ़ रही है?]

शीतल → कर्ता, पुस्तक → कर्म, पढ़ → क्रिया

↳ पुस्तक

→ कर्त्ता + कर्म + क्रिया

② आरती पत्र लिखती है।

③ सीता पत्र पढ़ रही है। → सकर्मक

④ सीता पढ़ रही है। → अकर्मक

Q1→ सकर्मक क्रिया बताओ ?

Ⓐ दौड़ना Ⓑ टहलना Ⓒ चलना ✓Ⓓ पढ़ना

⑤ राम खाना खा रहा है।

⑥ पूजा फूल तोड़ रही है।

⑦ राम ने खिलौना खरीदा।

⑧ सीता गीत गाती है।

⑨ पिता जी चाय पीते हैं।

⑩ पुलिस ने चोर को पकड़ लिया।

⑪ भवरा फूलों का रस पीता है।

→ सकर्मक क्रिया के ② भेद होते हैं।

① एक कर्मक क्रिया

② द्विकर्मक क्रिया

① एककर्मक क्रिया

* जिस **वाक्य** में एक कर्म पाया जाता है वहाँ एककर्मक क्रिया होती है।

* सकर्मक क्रिया के सभी उदाहरण एककर्मक क्रिया के अंतर्गत आते हैं।

① सीला कपड़े सिल रही है।
(कपड़े → कर्म)

② पंकज पतंग उड़ा रहा है।
(पंकज → कर्ता, पतंग → कर्म, उड़ा → क्रिया)

② द्विकर्मक क्रिया

* जिस वाक्य में दो कर्म पाये जाते हैं, वहाँ द्विकर्मक क्रिया होती है।

① अध्यापक छात्रों को हिंदी पढ़ाते हैं।
(अध्यापक → कर्ता, छात्रों → कर्म, हिंदी → कर्म)

NOTE→ * क्रिया के पास वाला कर्म निर्जीव होता है।
* कर्त्ता के पास वाला कर्म सजीव होता है।

* क्रिया के पास वाला मुख्य कर्म होता है।

* कर्त्ता के पास वाला गौण कर्म होता है।

② माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

- माँ → कर्त्ता
- बच्चे → सजीव, गौण कर्म
- दूध → निर्जीव, मुख्य कर्म
- पिलाया → क्रिया

③ राजा ने भिखारी को खाना खिलाया।

- भिखारी → गौण कर्म
- खाना → मुख्य कर्म

④ राम ने श्याम को पुस्तक दी।

⑤ हमने मोहन को गाड़ी बेची।

⑥ कृष्ण जी ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया।

> क्या, किसको किसने का जबाव मिलता

⑦ नीरज आम खा रहा है। → एककर्मक

⑧ नीरज ने राहुल को अपनी गाड़ी बेच दी।
→ द्विकर्मक

क्रिया

Part-03 | Class-33

② संरचना व प्रयोग के आधार पर क्रिया

① पूर्वकालिक क्रिया -

* जब वाक्य में कर्ता एक कार्य समाप्त करके उसी समय दूसरी क्रिया शुरू करता है, तो पहले वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

जैसे- ① रमा पढ़कर खाना खाने लगी।
② माता जी ने खाना बनाकर आराम किया।
③ राजेश पढ़कर खेलने लगा
④ पिताजी चाय पीकर बाजार गए।
⑤ पक्षी पानी पीकर उड़ गए

→ क्रिया के तुरंत बाद **कर** शब्द लगा होता है।

② प्रेरणार्थक क्रिया -

* अर्थ- प्रेरित करना। वाक्य में कर्ता खुद कार्य न करके किसी दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है। वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है।

* इसमें क्रिया शब्द के अन्त में **आना, वाना** प्रत्यय लगा होता है।

① **आना** → प्रथम प्रेरणार्थक [पढ़ाना, लिखाना, बताना, चलाना]

② **वाना** → द्वितीय प्रेरणार्थक [पढ़वाना, लिखवाना, बतवाना, चलवाना, मँगवाना, इत्यादि]

उदा०- ① माँ ने पिता जी से सब्जी मंगवायी।

② मालिक नौकर से गाड़ी धुलवाता है।

③ राम ने श्याम से पुस्तक मंगवायी।

④ मोहन ने राधा से गाड़ी चलवायी।

⑤ राजा ने गरीबों को खाना खिलवाया।

⑥ बच्चों को पढ़ाना → **प्रथम प्रेरणार्थक**

⑦ बच्चों को पढ़वाना → **द्वितीय प्रेरणार्थक**

③ नामधातु क्रिया -

* जो क्रिया संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनती है, उन्हें नामधातु क्रिया कहते है।

उदा० - ① बात → बतियाना

② लात → लतियाना

③ अपना → अपनाना

④ शर्म → शर्माना

⑤ हाथ → हथियाना

⑥ रंग → रंगाना

⑦ लाठी → लठियाना

Q.1- 'हथियाना' कौन-सी क्रिया का उदाहरण है।

(A) पूर्वकालिक क्रिया
(B) प्रेरणार्थक क्रिया
(C) संयुक्त क्रिया
✓(D) नामधातु क्रिया

④ संयुक्त क्रिया -

* जिस क्रिया का निर्माण दो क्रियाओं से होता है। वहाँ संयुक्त क्रिया होती है।

→ आना-जाना , उठना - बैठना

उदा॰- ① राधा पढ़ चुकी है।
पढ़ना चुकना

② राम हमारे घर आता जाता है।

③ वह मुझे मार डालेगा।

④ शीतल घर पहुँच गयी।

⑤ सुनीता ने दूध पी लिया।

⑥ वर्षा होने लगी।

→ संयुक्त क्रिया के भेद → ⑪

→ [क्रिया] ← Part-04 Class-34

→ संयुक्त क्रिया के भेद - (11)

① आरम्भबोधक क्रिया

* जिस वाक्य में क्रिया के आरम्भ होने का पता चलता है- ① राम सोने लगा।
② मोहिनी पढ़ने लगी।
③ माताजी खाना पकाने लगी।

② समाप्तिबोधक क्रिया

* वाक्य में क्रिया की समाप्ति का बोध होता है।

① मोहन खाना खा चुका।
② सचिन पाठ पढ़ चुका।
③ अभिषेक गाना गा चुका।
④ आरती पानी पी चुकी।
⑤ हम पढ़ चुके है।

③ अवकाश बोधक

* क्रिया को निष्पन्न (पूरा) करने के लिए अवकाश का बोध होता है। ① छात्रों ने परिश्रम से अंतिम चयन कर लिया।

② राम ने पूरी मेहनत के बाद प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया।
③ सीता ने पूरी मेहनत से पाठ पढ़ लिया।

④ अनुमति बोधक

* ऐसी क्रिया जिसे करने के लिए अनुमति दी जाए-
① रोहन उसे जाने दो।
② सीता आज खाना राम को बनाने दो।
③ मुझे अंदर जाने दो (अपने लिए)।

⑤ नित्यता बोधक

* जब क्रिया के खत्म होने का बोध हो।
① जनसंख्या बढ़ रही है।
② पूनम पढ़ रही है।
③ राम रोज दौड़ रहा है।

ROJGAR WITH ANKIT

⑥ आवश्यकता बोधक

* जब क्रिया से आवश्यकता, कर्तव्य का बोध होता है।

① मुझे पुस्तक पढ़नी आनी चाहिए।

② मुझे चाय बनानी आनी चाहिए

③ घर का सभी काम मुझे करना पड़ता है।

⑦ निश्चय बोधक

* ऐसी क्रिया जिससे मुख्य क्रिया की निश्चिता का बोध होता है।

① मैं 2025 में नौकरी अवश्य प्राप्त कर लूँगा।

② मैं I.P.S जरूर बनूँगा।

③ मैं अपने माता-पिता का सपना जरूर पूरा करूँगा।

④ मैं H.C.M में न० जरूर लाऊँगा।

⑧ इच्छा बोधक

* जिस क्रिया द्वारा क्रिया करने की इच्छा का बोध हो

① मैं आज घूमना चाहती हूँ।

② मैं विदेश जाना चाहती हूँ।

⑨ शक्तिबोधक क्रिया

ROJGAR WITH ANKIT

* जिस क्रिया से कार्य करने की शक्ति का बोध होता है।

① राधा अच्छा नृत्य कर सकती है।

② कक्षा के सभी विद्यार्थी नौकरी प्राप्त कर सकते हैं।

⑩ पुनरुक्तबोधक क्रिया

* जिस क्रिया में दो समान ध्वनि वाली क्रिया आती है,

① बबलु चलते - चलते थक गया।

② सूरज पढ़ते - पढ़ते सो गया।

③ इस दुनिया में अलग - अलग प्रकार के व्यक्ति हैं।

⑪ अभ्यास बोधक

* एसी क्रिया जिससे किसी काम के अभ्यास का बोध होता है। ① सीता सुबह दौड़ लगाती है।

② बच्चे रोज मन लगाकर पढ़ते हैं।

③ वह रोज अखबार पढ़ा करता है।

④ राधा रोज ढोलक बजाना सीखती है।

क्रिया

Part-05 | Class-35

⑤ सहायक क्रिया

* वह क्रिया जो मुख्य क्रिया के पूर्ण होने में सहायता करती है, सहायक क्रिया कहलाती है।

उदा० → ① मोहन अखबार पढ़ रहा है।
(पढ़ → मुख्य क्रिया; रहा है → सहायक क्रिया)

② राधा कपड़े सिल रही है।

③ माता जी चाय बना रही है।

→ क्रिया के अन्य भेद

① सजातीय क्रिया

* समान धातुओं के प्रयोग से बनने वाली क्रिया सजातीय क्रिया कहलाती है।

① सीता ने पढ़ाई पढ़ी। → [पढ़ (धातु)]

② भारतीय सेना ने लड़ाई लड़ी।

③ पुलिस ने चोर को बड़ी मार मारी।

② कृदंत क्रिया

* जब क्रिया में प्रत्यय जुड़कर क्रिया का नया रूप बनता है, वह कृदंत क्रिया कहलाता है।

→ कृदंत क्रिया के तीन प्रकार होते हैं।

① वर्तमान कालिक कृदंत क्रिया
└→ [चल + ता] → चलता, दौड़ता, खेलता, लिखता।

② भूतकालिक कृदंत क्रिया
└→ [चल + आ] → चला, दौड़ा, खेला, लिखा, आदि।

③ पूर्वकालिक कृदंत क्रिया
└→ [चल + कर] → चलकर, दौड़कर, खेलकर, लिखकर।

③ आज्ञार्थक क्रिया

* जिस क्रिया का प्रयोग अनुमति, प्रार्थना के लिए किया जाता है, आज्ञार्थक क्रिया कहलाती है।

① इधर आओ।
② उधर जाओ।
③ बड़ों का कहना मानो।
④ खड़े होकर राष्ट्रगान का सम्मान करो।

④ क्रियार्थक क्रिया

* जब क्रिया संज्ञा की तरह व्यवहार में आती है वह क्रिया, क्रियार्थक क्रिया कहलाती है।

उदा०- ① स्वाध्याय ज्ञान की वृद्धि करता है।

② सुबह, टहलना लाभदायक होता है।

③ देश के नाम पर मरना अमरत्व प्रदान करता है।

⑤ अनुकरणात्मक क्रिया

* किसी वास्तविक व कल्पित ध्वनियों के अनुकरण करने से बनने वाली क्रिया अनुकरणात्मक क्रिया कहलाती है।

जैसे- खटखट → खटखटाना

भनभन → भिनभिनाना

- हिनहिनाना, थपथपाना, झनझनाना, फड़फड़ाना, गिड़गिड़ाना।

⑥ सामान्य क्रिया

* जब किसी क्रिया से एक क्रिया के होने का पता चलता है। ① वह चलता है। ② वह खाता है।

[क्रिया, अभ्यास प्रश्न]

Class → 36

① सोहन गाँव का मकान देख रहा है।
इस वाक्य में क्रिया शब्द कौन-सा है।
→ देखरहा है।

② जिन शब्दों से काम का करना या होना पाया जाए उन्हें
→ क्रिया कहते हैं।

③ रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद → ② होते हैं।

④ मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने वाली क्रिया को क्या कहते हैं → सहायक क्रिया

⑤ 'टहलना एक अच्छा व्यायाम है' में 'टहलना' शब्द क्या है? → क्रियात्मक संज्ञा

⑥ ① डाकिया पत्र लाया → सकर्मक क्रिया
② सीमा ने गाना गाया → सकर्मक क्रिया
③ सिपाही ने चोर को पकड़ा → सकर्मक क्रिया
④ लड़का सोता है। → अकर्मक क्रिया।

⑦ जिस क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, उसे कौन-सी क्रिया कहते हैं? → सकर्मक

⑧ (i) श्याम सोता है → अकर्मक क्रिया

(ii) पक्षी उड़ रहे हैं → अकर्मक

(iii) बच्चा हँस रहा है → अकर्मक

(iv) राधा रो रही है → अकर्मक

⑨ (i) मैं लड़के को वेद पढ़ाता हूँ → द्विकर्मक क्रिया

(ii) दीपा ने गाय को चारा खिलाया → द्विकर्मक क्रिया

(iii) माँ ने राम को खाना खिलाया → द्विकर्मक क्रिया

(iv) राजा ने भिखारी को वस्त्र दिये → एककर्मक

भिखारी → कर्म कारक ✗ / सम्प्रदान कारक ✓; वस्त्र → कर्म

→ * जो वस्तु सदैव के लिए दी जाएं वहाँ सम्प्रदान कारक होता है, **सम्प्रदान कारक विभक्ति 'के लिए'**

→ राजा ने भिखारी के लिए वस्त्र को दिया!
(भिखारी के लिए → सम्प्रदान) (वस्त्र → कर्म)

→ वस्त्र सदैव के लिए दिए गए हैं, भिखारी शब्द में कर्म कारक नहीं सम्प्रदान कारक होगा!

(10) मैंने नौकर से खाना बनवाया → प्रेरणार्थक क्रिया

→ राम लक्ष्मण से पत्र लिखवाता है → प्रेरणार्थक क्रिया

→ 'पंडित जी हवन करा कर कथा कह रहे हैं →
↳ वाक्य में पूर्वकालिक क्रिया है।

→ चोर उठ भागा → पूर्वकालिक क्रिया

(11) कौन-सा संयुक्त क्रिया का भेद नहीं है?

(a) अवकाश बोधक (c) नित्यता बोधक

(b) निश्चय बोधक (d) नामबोधक ✓

(12) हथियाना, चिकनाना → नामधातु क्रिया

→ उसने मेरी संपत्ति हथिया ली → नाम धातु क्रिया

(13) (i) वह मेरे घर आया करता है। → संयुक्त क्रिया

(ii) वह अनेक बोलियाँ बोलता है। → सजातीय क्रिया

(iii) चुन्नी अच्छी (थी) → योजक क्रिया

(iv) राम पढ़ रहा है। → संयुक्त क्रिया

(v) क्रिया के मूल रूप को (धातु) कहते हैं।

[अव्यय]

Class → 37

→ विकार के आधार पर शब्दो को दो भागो में बांटा गया है।

→ ① **विकारी** → संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण

→ ② **अविकारी** → ये शब्द अव्यय (अव्ग्रय) कहलाते है।
↳ लिंग, वचन, काल, कारक बदलने पर इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता, ज्यों के त्यों बने रहते है।

अव्यय (अविकारी)
अ + व्यय (व्यय न हो)

परिभाषा → जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, काल और कारक के आधार पर कोई बदलाव नहीं होता है, उन्हें अविकारी (अव्यय) कहते है।

① राधा धीरे बोलती है।
② राम धीरे बोलता है। → **'धीरे'** शब्द अव्यय है

उदा० → जब, तब, अभी, इधर, उधर, क्यों, इसलिए, वाह, आह, ठीक, अचानक, धीरे, जल्दी, और, तथा, एवं, किन्तु, परन्तु, लेकिन, बल्कि आदि।

→ **अव्यय के भेद → ④**

(i) क्रिया विशेषण
(ii) संबंध बोधक
(iii) समुच्चय बोधक
(iv) विस्मयादि बोधक
(v) निपात → यह गौण भेद है।

NOTE → अव्यय के मुख्य भेद ④ ही है।

① क्रिया विशेषण अव्यय

* क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दो को क्रिया विशेषण अव्यय कहते हैं।

उदा० ① घोड़ा तेज दौड़ता है।
② दादा जी धीरे-धीरे चलते हैं।
③ राम अचानक आ गया है।
④ सीता सुन्दर लिखती है।

→ क्रिया विशेषण अव्यय के प्रकार → ④

① स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय

② काल वाचक क्रिया विशेषण अव्यय

③ परिमाण वाचक क्रिया विशेषण अव्यय

④ रीतिवाचक क्रिया विशेषण अव्यय

① स्थान वाचक क्रिया विशेषण अव्यय

* वे शब्द जो क्रिया के स्थान की विशेषता बताते हैं, स्थान वाचक क्रिया विशेषण अव्यय कहलाते हैं।

जैसे–[यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, आगे पीछे, इधर, उधर]

दो भेद –
- ① **स्थिति बोधक** → पास, निकट, समीप, सामने साथ, भीतर, अन्दर, बाहर, आगे, पीछे आदि
- ② **दिशा बोधक** → दाएँ, बाएँ, इधर, उधर, किधर हर तरफ आदि।

Q- राम मेरी दाएँ वाली गली में रहता है।

Ⓐ स्थिति वाचक ✓Ⓒ दिशा वाचक

Ⓑ परिमाण वाचक Ⓓ संबंध वाचक

Q→ मनीषा मेरे पास बैठी है → स्थानवाचक

[अव्यय] Part-02 Class-38

② कालवाचक क्रिया विशेषण

* वे शब्द जो काल बताकर क्रिया की विशेषता बताते हैं, कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

→ आज, कल, परसों, अभी तुरंत

→ रातभर, दिनभर, घण्टो, लगातार, आजकल, हरबार कईबार, बहुतबार, प्रतिदिन, अकस्मात आदि।

उदा०- ① राम आज आएगा।

② राम रोज कसरत करता है।

③ सीता प्रतिदिन दौड़ती है।

④ वे कब गए।

⑤ किसान दिनभर खेत जोतता रहा।

⑥ पिताजी परसों आएंगे।

⑦ आजकल तुम बदले-बदले लगते हो।

⑧ हरबार तुम ऐसे ही बोलते हो।

③ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

* जिन शब्दों से क्रिया की नाप, तौल से विशेषता बताई जाती है, वे शब्द परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

उदा० → कम, ज्यादा, बहुत, अधिक, खूब, बहुत, जरा-सा थोड़ा, कुछ, काफी, ठीक, इतना, उतना, लगभग थोड़ा-थोड़ा, कम-कम, ज्यादा-ज्यादा आदि।

① राधा बहुत खाती है।

② राम थोड़ा घबरा गया।

③ उतना बोलिए जितना जरूरी है।

④ मोहन कुछ काम नहीं करता।

⑤ आज रमेश काफी दौड़ा है।

⑥ आज के लिए बहुत हो गया।

④ रीतिवाचक क्रिया विशेषण

* जिन शब्दों से क्रिया के होने का ढंग पता चलता है, उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं

* रीति → ढंग, तरीका, लिहाज

उदा० ① रमा सुन्दर लिखती है। / ② राम तेज दौड़ता है।

③ दादा जी धीरे-धीरे खाते हैं।

④ सौरभ अचानक बोलता है।

⑤ राम निस्संदेह मेहनत करता है।

⑥ मोहन एकाएक परिश्रम करता है।

⑦ हमारे सामने शेर अचानक आ गया।

[अव्यय]

② संबंध बोधक अव्यय :-

वे शब्द जो संज्ञा सर्वनाम का संबंध दूसरे संज्ञा सर्वनाम स्थापित करते है।

(के सामने, के बिना, के अन्दर, के बाहर)

उदा० विद्यालय (के सामने) बगीचा है।
संज्ञा संज्ञा

* जल के बिना जीवन अधूरा है।
* विद्या के बिना मनुष्य जानवर है।

अर्थ के आधार पर संबंध बोधक अव्यय के 13 भेद होते है।

① काल वाचक :- पहले, बाद, बाद मे, आगे पीछे आदि।

② दिशावाचक :- निकट, पास, समीप, पास मे, सामने आदि।

③ स्थानवाचक :- बाहर, अन्दर बीच मे, ऊपर नीचे, आगे पीछे, आदि।

④ साधन वाचक :- सहारे, द्वारा, निमित्त, मार्फत, जरिए आदि।

⑤ विरोधवाचक :- विरूध, प्रतिकूल, विपक्ष, उल्टे, विपरीत आदि।

⑥ व्यतिरेक वाचक :- सिवा, अलावा, बिना, बगैर आदि।
⑦ उद्देश्य वाचक / हेतु वाचक :- वास्ते के लिए, हेतु आदि।
⑧ सहचर्य वाचक :- समेत, संग, साथ, सहित, पूर्वक आदि।
⑨ विषयावाचक वाचक :- विषय, बाबत, लेख निस्बत आदि।
⑩ संग्रह वाचक :- समेत, भर, तक आदि।
⑪ विनिमय वाचक :- पलटे, बदले, जगह, एवज आदि।
⑫ सादृश्य वाचक :- समान, समानता, तरफ, भांति, तुल्य सदृश्य आदि।
⑬ तुलनावाचक :- तुलना, अपेक्षा, सामने, समक्ष आदि।

③ समुच्चय बोधक अव्यय :-

जो अव्यय शब्द दो वाक्यों या दो शब्दों को आपस में जोड़ने का कार्य करते हैं। समुच्चय बोधक अव्यय कहलाते हैं।

(परन्तु, इसलिए, लेकिन, या, और तो आदि।
(क्योंकि)

* राम विद्यालय नहीं आया (क्योंकि) उसको तेज बुखार था
* तुम पढ़ो (या) मैच का फाइनल देखो।
* आज मेरा व्रत है, (क्योंकि) कृष्णजन्माष्टमी है।

भेद दो → ① समानाधिकरण → समुच्चय बोधक
② व्याधिकरण → समुच्चय बोधक

① समानाधिकरण :-

(भोजन) इसमें संयुक्त वाक्य के उदा० आते हैं।

राम खेलता है, और मोहन पढ़ता है। संयुक्त

② व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय :-

इसमें मिश्र वाक्य के उदा० मिलते हैं।

* वह कौन है, जिसने तुम्हें इंसान बनाया।

राम के पिताजी बीमार हैं इसलिए डॉ० को बुलाना है।

④ विस्मयादिबोधक अव्यय :-

वे अव्यय शब्द जो घृणा, प्रेम, हर्ष, आश्चर्य आदि के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं विस्मयादि बोधक अव्यय कहलाते हैं।

अजी! सुनते हो, नहीं अरे! चुप रहो।

* शाबाश! बेटे तुम दौड़ उड़े हो। छि! छि!!

* वाह! मम्मी आपा तो मजा आ गया।

* हे! भगवान ये क्या हो गया।

* हे प्रभु रक्षा करो।

अव्यय

Class - 40

अभ्यास प्रश्न

① परमात्मा की कृपा सर्वत्र व्याप्त है।
→ स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय

② देशभर में कोरोना का प्रकोप जारी है।
→ स्थानवाचक क्रिया विशेषण अव्यय

③ गीता जल्दी - जल्दी मुँह में लड्डू ठूसने लगी।
→ रीतिवाचक क्रियाविशेषण

④ माँ सुबह नाश्ता बनाती है।
→ काल वाचक

⑤ मैं रोज पढ़ता हूं।
→ काल वाचक विशेषण

⑥ रूप के अनुसार क्रिया विशेषण कितने प्रकार के होते हैं? → ③

(7) क्रिया विशेषण एक भेद है।

→ अव्यय का

(8) आजकल मौसम बदलने लगा है।

→ कालवाचक क्रिया विशेषण

(9) क्रिया विशेषण के कितने भेद होते हैं।

→ (4)

(10) (i) माधवी अत्यंत सुंदर है। → परिमाण वाचक

(ii) वह बहुत थक गया है। → परिमाण वाचक

(iii) मेरे गांव के चारो ओर जंगल है। → क्रिया विशेषण

(iv) जल्दी चलो ताकि समय पर पहुंच जाएं → समुच्चय बोधक

(v) 'समानाधिकरण' किस अव्यय का भेद है → स

(vi) रोगी को थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाओ → परिमाण वाचक क्रिया विशेषण

(11) छत पर पक्षी बैठे हैं।

→ संबंध बोधक

⑫ धन के बिना व्यवसाय चलाना कठिन है।

→ संबंध बोधक अव्यय

⑬ 'वह लाचार है, क्योंकि वह अंधा है।'

→ कारणवाचक

⑭ अर्थ के आधार पर संबंधवाचक अव्यय को कितने भाग में विभक्त किया जाता है? → 13

⑮ अरे! हैं! ऐ! ओह! इत्यादि किस प्रकार के अव्यय हैं? → आश्चर्य बोधक अव्यय

⑯ 'हाय! अब मैं क्या करूँ → विस्मय बोधक अव्यय

⑰ अफसोस! मैं नहीं जा सका → शोक सूचक अव्यय

⑱ रविवार है, वह घर पर (ही) रहेगा → निपात

निपात → ही, भी, तक, भर, मात्र, तो आदि।

→ [लिंग] ←

Class → 41

* लिंग संस्कृत भाषा का शब्द होता है।
* लिंग का शाब्दिक अर्थ चिह्न, पहचान, निशान होता है।

→ लिंग ② प्रकार के होते हैं।

① स्त्रीलिंग → जो स्त्री **जाति** का बोध कराऐ।
[काजल, अच्छी, मेरी, कलम, प्लेट, चम्मच]

② पुल्लिंग → जो पुरूष **जाति** का बोध कराऐ।
[कमल, अच्छा, मेरा, चमचा, गिलास, सूट]

परिभाषा → वे संज्ञा शब्द जो स्त्री, पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे शब्द लिंग कहलाते हैं।

→ **उभयलिंग** → जो शब्द स्त्री, पुरुष दोनों का बोध कराते हैं, उभयलिंग शब्द कहलाते हैं।

जैसे- डॉ॰, वकील, प्रोफेसर, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, ड्राइवर, जज, आदि मनगढंत

① पुल्लिंग शब्द

* वे शब्द जो पुरुष जाति का बोध कराते हैं। पुल्लिंग कहलाते हैं।

→ मोबाइल, शहर, पंखा, कैमरा, गिलास, बोर्ड आदि

NOTE →* जिन शब्दो में आ, आव, त्व, पन, न मे प्रत्यय आते है, वे पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं।
* लेकिन अपवाद को ध्यान रखते हुए
↳ [कमला - स्त्रीलिंग]

पुल्लिंग शब्द → मोटापा, मोटा, बुढ़ापा, बचपन, अपनापन, महत्व, लेनदेन, आदि।

→ मुख्य पुल्लिंग शब्दों की पहचान-

(i) महासागरों के नाम → हिंद महासागर, प्रशांत महासागर, अरब सागर आदि

(ii) पर्वत और कुछ ग्रहों के नाम-
[हिमालय, अरावली, विंध्याचल, सतपुड़ा, शिवालिक आदि]
[सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि, अरुण, वरुण]

* **अपवाद** → पृथ्वी ग्रह स्त्रीलिंग है।

→ [दही, पानी, हाथी] → पुलिंग

(iii) दिन व महीनों के नाम-

[सोमवार, मंगलवार, बुधवार ----]

[मार्च, अप्रेल, जून, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर आदि]

अपवाद - जनवरी, फरवरी, मई जुलाई, आदि स्त्रीलिंग

(iv) हिन्दी के महीने-

[चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, अषाढ, सावन, कार्तिक आदि]

(v) पेड़ो के नाम-

[पीपल, नीम, शीशम, आम, बरगद आदि]

अपवाद → इमली, खेजड़ी यह स्त्रीलिंग है।

(vi) अनाजों के नाम **अपवाद** - ज्वार, मक्का, जई, सरसों

[गेंहू, चावल, चना, जौं, उड़द, आदि] अरहर, मूँग।

लिंग

Class → 42

Part - 02

→ पुल्लिंग

* धातु एंव द्रव पदार्थों के नाम

[सोना, पीतल, जस्ता, ताँबा, पानी, घी, डीजल रिफाइंड, शर्बत, सिरका आदि।]

अपवाद → चाँदी, मणि, शिकंजी, लस्सी, चाय आदि

* हिंदी वर्णमाला

[हिन्दी वर्णमाला में इ, ई, ऋ, ण को छोड़कर सभी वर्ण पुल्लिंग है] [इ, ई, ऋ, ण → स्त्रीलिंग]

* रत्नों के नाम

[हीरा, पुखराज, मोती, पन्ना, मूँगा, माणिक आदि]

* शरीर के अंगों के नाम

[माथा, दाँत, हाथ, पैर, ओष्ठ, कान, मुँह, नाखून अंगूठा, तालु, गला, आदि]

अपवाद - ऊँगली , कलाई , आँख , जीव्हा , ठोढ़ी , कोहनी
जाँघ आदि

* जल , स्थल , और भूमण्डल के नाम
[वायुमण्डल , पर्वत , पठार , आकाश , पाताल , सरोवर
समुद्र , तालाब , आदि] [ब्रह्मपुत्र , सोन नदी]

* समय संबंधित , विभागो के नाम
[काल , सवेरा , दिनांक , दिन , काल , चक्र , पखवाड़ा
महीना , माह , सप्ताह , पाक्षिक , वर्ष आदि]
[जलविभाग , ग्रामविभाग] [**अपवाद** - तिथियाँ (स्त्रीलिंग)]

* जिन शब्दो में (त्र) आता है; वे पुल्लिंग होते है!
[नेत्र , चैत्र , चरित्र , क्षेत्र , क्षत्रिय आदि]

* जिन शब्दो में (ज) आता है, वे पुल्लिंग होते है।
[सरोज , जलज , नीरज , पंकज , स्वेदज , पिण्डज आदि]

* जिन शब्दों में (न) आता है।
[पालन , नमन , वचन , गमन , आगमन आदि]

* जिन भाववाच्यक संज्ञा के अंत में (त्व, पन, आ, पा, व) आने पर पुल्लिंग होती है।

[महत्व, बहुत्व, बचपन, बुढ़ापा, माधुर्य, नृत्य आदि]

* जिन शब्दो के अंत में (आर, आस, आप) आता है।

[विकार, आकार, उल्लास, विकास समुदाय आदि]

* 'अ' आने पर [मोह, क्रोध, द्वेष, स्पर्श आदि]

[ईर्ष्या - स्त्रीलिंग]

* अंत में (वाला, खाना, दान) आते हैं, पुल्लिंग होते

[सब्जीवाला, दूधवाला, दवाखाना, डाकखाना, खानदान पीकदान आदि]

NOTE- '**अधिकारी**' शब्द उभयलिंग है।

(i) होली एक अच्छा त्योहार है → पुल्लिंग

(ii) रक्षाबंधन आ गया → पुल्लिंग

(iii) ईद आ गयी → स्त्रीलिंग

(iv) दीपावली आ गई → स्त्रीलिंग

→ [लिंग] ← Part-03 Class-43

② स्त्रीलिंग

* जो संज्ञा शब्द स्त्रीजाति का बोध कराते हैं, स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

उदा०- अनु, साक्षी, रूचि, शीतल, आदि।

पहचान → ① **ईकारांत संज्ञाएँ** → नदी, रोटी, नारी, टोपी आदि **अपवाद** → घी, पानी, हाथी, मोती आदि

② **ऊकारांत संज्ञाएँ** → लू, बालू, दारू, आदि।
अपवाद → आलू, आँसू, टेसू आदि।

③ **अनुस्वारांत** → जूँ, सरसों आदि [अपवाद - गेहूँ]

④ **सकारांत संज्ञाएँ** → प्यास, मिठास, रास (लगाम)
अपवाद → निकास

⑤ कृदंत नकारांत संज्ञाएँ → जलन, सूजन, पहचान आदि

⑥ कृदंत अकारांत संज्ञाएँ – लूट, दौड़, समझ, पुकार

अपवाद → मेल, नाच, उतार, आदि

⑦ जिन भाववाचक संज्ञा में [हट, वट, ट] आता है।
→ गड़गड़ाहट, सजावट, बनावट, झंझट आदि, आहट

⑧ अंत में (ख) आने पर → ईख, राख, भूख, चीख
आँख आदि

⑨ शरीर के अंग → आँख, नाक, ऊँगली, हथेली
कलाई, कोहनी, जीभ, आदि।

⑩ पेड़ों के नाम → इमली, नाशपाती, लीची, खेजड़ी
चमेली आदि।

⑪ झीलों व नदियों के नाम → चिल्का, सांभर, वूलर
कृष्णा, गोदावरी, डल, गंगा, यमुना, कावेरी
झेलम आदि।

अपवाद → ब्रह्मपुत्र , सोन [पुल्लिंग]

⑫ मसालों के नाम → हल्दी , लौंग , इलायची , सौंफ मिर्च आदि

अपवाद → नमक , जीरा , जायफल , तेजपाल , केसर धनिया ।

⑬ खाने-पीने की वस्तुएँ → खीर , पकौड़ी , पूड़ी चपाती , दाल , सब्जी , आदि

अपवाद → पराठा , दलिया , दही , रायता , आदि ।

⑭ भाषा एवं लिपियों के नाम → हिंदी , बिहारी , मराठी फारसी , अरबी , देवनागरी ।

⑮ राशियों के नाम → मेष , तुला , मीन , वृश्चिक आदि

पुल्लिंग - स्त्रीलिंग

① मान → मती
② श्रीमान → श्रीमती
③ धनवान → धनवती
④ आयुष्मान → आयुष्मती
⑤ शक्तिमान → शक्तिवती
⑥ बुद्धिमान → बुद्धिमती

ROJGAR WITH ANKIT

पुल्लिंग - स्त्रीलिंग

① वान → वती
② भाग्यवान → भाग्यवती
③ बलवान → बलवती

① तपस्वी → तपस्विनी
② साँप → साँपिन
③ भवदीय → भवदीया
④ विद्वान → विदुषी

NOTE- कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जो सदैव पुल्लिंग स्त्रीलिंग होते हैं, उन्हें नित्य लिंग की संज्ञा भी दी जाती है।

① खरगोश → मादा खरगोश
② खटमल → मादा खटमल
③ कछुआ → मादा कछुआ
④ तोता → मादा तोता
⑤ कोयल → नर कोयल
⑥ छिपकली → नर छिपकली
⑦ मैना → नर मैना

① देवर → देवरानी
② भाई → बहन
③ जीजी → जीजा
④ साली → साला
⑤ चाचा → चाची
⑥ दादा → दादी
⑦ मामा → मामी

→ जातिवाचक लिंग

① पण्डित → पण्डिताइन
② जाट → जाटनी
③ गुर्जर → गुर्जरी
④ नाई → नाइन
⑤ ठाकुर → ठकुराइन
⑥ कुम्हार → कुम्हारिन

[लिंग] Part-04 Class-44

[अभ्यास प्रश्न]

① दिए गए शब्दों का स्त्रीलिंग रूप ज्ञात करो।

(i) परोपकारी → परोपकारिनी

(ii) मालिक → मालकिन

(iii) नायक → नायिका

(iv) विद्वान → विदुषी

(v) चौधरी → चौधराइन

(vi) गुणवान → गुणवती

(vii) धोबी → धोबिन

(viii) सेठ → सेठनी

(ix) पापी → पापिन

(x) गायक → गायिका

(xi) वीर → वीरांगना

(12) हाथी → हथिनी

(13) ज्ञानवान → ज्ञानवती

(14) मिहतर → मितरी

(15) * लगन, मीमांसा, आहट → स्त्रीलिंग

* माधुर्य, बुढ़ापा, सारस → पुल्लिंग
* शराब, गठरी, रात → स्त्रीलिंग
* खटमल, मजाक, व्यय → पुल्लिंग
* दही, दाग, खीरा → पुल्लिंग

{वचन} Class-45

परिभाषा

* वचन का शाब्दिक अर्थ संख्या वचन होता है। जिसका मतलब वचन होता है।

* वचन संख्या का बोध कराता है। वचन का अर्थ कहना भी होता है।

* वे शब्द जो किसी वस्तु, प्राणी, स्थान का एक या अनेक होने का बोध कराते हैं। वचन कहलाते हैं।

उदा० → लड़का, कलम, पुस्तक, बेंच आदि।

→ हिन्दी में वचन → (2)

(1) एकवचन

(2) बहुवचन

(i) लड़का पढ़ता है। [एकवचन]

(ii) लड़के पढ़ते हैं। [बहुवचन]

NOTE- कारक की विभक्ति का प्रयोग करके बचन का तिर्यक रूप बनता है।

जैसे- लड़कों, घोड़ों, कुत्तों, बच्चों आदि

एकवचन	बहुवचन	तिर्यक रूप
① बच्चा	बच्चे	बच्चों
② नारी	नारियाँ	नारियों
③ लड़की	लड़कियाँ	लड़कियों

→ तिर्यक रूप को सविभक्ति रूप भी कहते हैं।

* एक शब्द में दो वचन कभी-भी नहीं आते हैं।

① लड़का बाजार गया है। [एकवचन]

② लड़के बाजार गए हैं। [बहुवचन]

③ मुर्गा बोल रहा है।

④ मुर्गे बोल रहे हैं।

⑤ दवाई असर कर रही है।

⑥ दवाइयाँ असर कर रहीं हैं।

ROJGAR WITH ANKIT

एकवचन	→ बहुवचन	→ तिर्यक रूप
① लड़की	→ लड़कियाँ	→ लड़कियों
② धागा	→ धागे	→ धागों
③ सड़क	→ सड़कें	→ सड़कों
④ पंखा	→ पंखे	→ पंखों
⑤ कुर्सी	→ कुर्सियाँ	→ कुर्सियों
⑥ कपड़ा	→ कपड़े	→ कपड़ों
⑦ महिला	→ महिलाएँ	→ महिलाओं
⑧ बात	→ बातें	→ बातों
⑨ सब्जी	→ सब्जियाँ	→ सब्जियों
⑩ किताब	→ किताबें	→ किताबों
⑪ सभा	→ सभाएँ	→ सभाओं
⑫ नदी	→ नदियाँ	→ नदियों

	(ई) एकवचन	→	(इ) बहुवचन
1	राखी	→	राखियाँ
2	इकाई	→	इकाइयाँ
3	नारी	→	नारियाँ
4	दवाई	→	दवाइयाँ
5	तिथि	→	तिथियाँ
6	कहानी	→	कहानियाँ
7	रोटी	→	रोटियाँ
8	खूबी	→	खूबियाँ
9	बुराई	→	बुराइयाँ
10	स्त्री	→	स्त्रियाँ
11	टोपी	→	टोपियाँ
12	विधि	→	विधियाँ
13	बिल्ली	→	बिल्लियाँ
14	तितली	→	तितलियाँ
15	टुकड़ी	→	टुकड़ियाँ
16	साड़ी	→	साड़ियाँ

ROJGAR WITH ANKIT

→ [वचन] ← Part-02 Class-46

(एकवचन) → (बहुवचन)

इया → इयाँ

1. गुड़िया → गुड़ियाँ
2. चिड़िया → चिड़ियाँ
3. बुढ़िया → बुढ़ियाँ
4. बिंदिया → बिंदियाँ
5. डिबिया → डिबियाँ
6. पुड़िया → पुड़ियाँ
7. बिटिया → बिटियाँ
8. खिड़की → खिड़कियाँ
9. चूड़ी → चूड़ियाँ

अ → एँ

1. कलम → कलमें
2. पुस्तक → पुस्तकें
3. गेंद → गेंदें
4. बहन → बहिनें
5. आँख → आँखे
6. तलवार → तलवारें
7. बंदूक → बंदूकें
8. नहर → नहरें
9. रात → रातें

उ/ऊ → एँ

1. वधू → वधुएँ
2. धातु → धातुएँ
3. बहू → बहुएँ
4. वस्तु → वस्तुएँ
5. ऋतु → ऋतुएँ
6. धेनु → धेनुएँ

ROJGAR WITH ANKIT

आ → एँ

1. इच्छा → इच्छाएँ
2. सभा → सभाएँ
3. लता → लताएँ
4. कथा → कथाएँ
5. अध्यापिका → अध्यापिकाएँ
6. कल्पना → कल्पनाएँ
7. कविता → कविताएँ
8. भाषा → भाषाएँ
9. माता → माताएं
10. कक्षा → कक्षाएँ

NOTE → कुछ शब्दो मे गण, जन, वृंद, वर्ग, दल जाति आदि प्रत्यय जोड़कर बहुवचन बनाये जाते हैं।

1. वर्ग → छात्रवर्ग, कर्मचारीवर्ग, मित्रवर्ग
2. लोग → साधु लोग, नेतालोग, चाचालोग, आपलोग
3. गण → बालक गण, विधार्थी गण, अध्यापक गण
4. वृंद → अध्यापक वृंद, नारीवंद, मनिवंद

⑤ जाति → स्त्रीजाति , पुरुषजाति

⑥ जन → गुरुजन , भक्तजन , सुधिजन

* कुछ शब्द हमेशा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

* व्यक्तिवाचक संज्ञा वाले शब्द सदैव एकवचन में आते हैं। [राम, सीता, हिमालय, किसी शहर का नाम]

(i) द्रव्यवाचक संज्ञा → सदैव एकवचन में आते हैं।
[पानी , दूध , घी , डीजल , लस्सी , समता आदि]

(ii) भाववाचक संज्ञा शब्द → सदैव एकवचन में आते हैं।
[भूख , प्यास , प्रेम , घृणा आदि]

→ सदैव एकवचन [जनता, ताँबा , पीतल , सोना , चाँदी , हवा दवा , आग , सामग्री , वर्षा , आदि]

→ सदैव बहुवचन रहने वाले शब्द

(i) आदर सूचक शब्द

* पिता जी दिल्ली जा रहे हैं।

* हमारे प्रथम Pm प० जवाहर लाल नेहरु थे।

(ii) सदैव बहुवचन [प्राण , आँसू , होश, दर्शन , हस्ताक्षर

हालचाल , समाचार पत्र , दाम , बाल , केश , तेवर

होश , अनेक , रोम , रोंगटे , अक्षत , आदि]

(iii) बड़प्पन दिखाने वाले शब्द → सदैव बहुवचन

* हमें कक्षा में गलत बात समझ नहीं आती

* कल तुम्हें स्कूल जाना है।

* मालिक नौकर को जब कोई आदेश देता है।
वहाँ बहुवचन शब्द आता है।

[वचन] Part-03 Class-47

अभ्यास प्रश्न

① वचन किसका बोध कराता है।

→ प्राणी या वस्तु के एक या अनेक होने का।

② हिन्दी में कितने वचन होते हैं? → ②

③ लड़के → बहुवचन

↳ लड़के ने रमेश को मारा → वाक्य में लड़के शब्द एकवचन के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

④ * तेल → एकवचन

* प्रत्येक → एकवचन

* जनता, पानी, आकाश → एकवचन

* दर्शन, घरों, लताओं → बहुवचन

* मिठाई, कवि → एकवचन

* मिठाइयाँ, कविगण → बहुवचन

(5) * लड़की , पुस्तक , सूरज → एकवचन

* लड़कियाँ , होंठ , पुस्तकें → बहुवचन

(6) उर्दू शब्द 'सौदा' का बहुवचन रूप क्या होगा ?

→ उसके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(7) * मैं बुरा इंसान हूँ। → एकवचन

* हम बुरे इंसान हैं। → बहुवचन

(8) * दिशा , बाँह , नदी → एकवचन

* दिशाएँ , बाँहे , नदियाँ → बहुवचन

* रीति , नीति , विधि → एकवचन

* रीतियाँ , नीतियाँ , विधियाँ → बहुवचन

* पत्नी , चादर , चिड़िया → एकवचन

* पत्नियाँ , चादरें , चिड़ियाँ , साधु → बहुवचन

* बहू , भारती , शिक्षक , चाकू , पति → एकवचन

* बहुएँ , भारतीयों , शिक्षकगण , चाकू , पति → बहुवचन

कारक

Class → 48

परिभाषा

* वाक्य में जिस शब्द का संबन्ध क्रिया से होता है उसे कारक कहते हैं।

उदा० → अजय ने कुत्ते को डण्डे से मारा।

अजय → कर्ता, कुत्ते → कर्म, डण्डे से → करण साधन, मारा → क्रिया

* हिन्दी में कारकों की संख्या → 8 होती है।
* संस्कृत में कारको की संख्या → 6 होती है।
  ↳ संस्कृत में संबंध, सम्बोधन कारक नहीं माना
* कारक के बाद में आने वाला चिह्न परसर्ग, विभक्ति, कारक चिह्न कहलाता है।
* संज्ञा के साथ कारक चिह्न अलग-अलग लिखे जाते हैं, लेकिन सर्वनाम के साथ जुड़कर आते हैं।

→[संज्ञा]→ सीता ने खाना खा लिया।

→[सर्वनाम]→ उसने खाना खा लिया।

कारक	कारक चिह्न	पहचान
① कर्ता	ने	काम करने वाला
② कर्म	को	जिस पर काम का प्रभाव पड़े
③ करण	से, के द्वारा	जिसके द्वारा कर्ता काम करता
④ सम्प्रदान	के लिए, के वास्ते	जिसके लिए काम किया जाए
⑤ अपादान	से [अलगाव]	जिससे भय, तुलना अलगाव हो
⑥ संबंध	का, की, के, रा, री, रे	अन्य पदों से संबंध
⑦ अधिकरण	में, पर	क्रिया के आधार का पता चलता
⑧ संबोधन	अरे!, ओ, अरे हे	किसी को पुकारने में

Q→ राम माँ के लिए साड़ी लाया. वाक्य में कौन सा कारक है? → ① कर्म ③ सम्प्रदान ✓

② करण ④ कर्ता

ROJGAR WITH ANKIT

→ [कारक] ←

→ Part ÷ 2
Class ÷ 49

(1) कर्त्ता कारक (ने) ÷

↳ उदाहरण ÷ राधा ने खाना खाया / [भूतकाल]
÷ मानव सो रहा है /
÷ राधा चित्र बनाती है / [वर्तमान काल]
÷ राम अब जाएगा / [भविष्य काल]

विशेष ÷ सकर्मक व भूतकाल के वाक्यों के साथ 'ने' कारक की विभक्ति आती है /

(2) कर्म कारक (को) ÷

↳ उदा. ÷ डॉ ने रोगी को देखा
÷ माता जी बालक को समझाती है /
÷ राधा ने नृत्य किया [कर्म कारक]
(राधा ↳ कर्त्ता, नृत्य ↳ कर्म)
÷ राम ने श्याम को पुस्तक दी /
÷ अध्यापक छात्रों को डाटते हैं /
÷ सड़क के दोनों तरफ पेड़ हैं /

dono trff wale sentence wale meh bhi krmm aata hai

(3) करण कारक (से, के द्वारा) :- इसमें साधन होता क्रिया करने का

↳ उदा. – मुझे पत्र के द्वारा सूचना मिली।

:- मैं तुमसे टेलीफोन पर बात करूँगा।
(साधन है)

⇒ विशेष – अंग भंग के वाक्य करण कारक से आते हैं।

↳ उदा. :- मोहन पैर से लंगड़ा है।

:- सीता आँख से अंधी है।

:- राम ने बाण से रावण को मारा। [एक वाक्य में अनेक कारक होते हैं।]
(कर्ता) (कर्म) (करण)

(4) संप्रदान (देना) [भाव आता है] :- विभक्ति :- के लिए, के वास्ते, को

↳ उदा. – मोहन माँ के लिए दवाई लाया।

:- राम स्नान के लिए नदी पर जाता है।

:- वह नौकरी के वास्ते दर-दर भटकता है।

:- राजा गरीबों को दान देता है
↳ के लिए अर्थ प्रकट हो रहा है।

:- मोहन गाय को नहलाता है। [कर्म कारक]

:- मोहन गाय को भूसा देता है।

(5) अपादान कारक (से – अलगाव, तुलना, डर) :-

↳ उदा. :- गंगा हिमालय से निकलती है।

:- विद्यार्थी शिक्षक से पढ़ते हैं [ग्रहण से अपादान कारक होता है]

:- खुशी कुत्ते से डरती है।

:- सीता गीता से सुन्दर है।

:- कवि दिल्ली से जयपुर जाएगा।

(6) संबन्ध कारक [का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने] :-

↳ उदा. :- यह आपका बेटा है।
:- मेरे पिताजी सेना में तैनात है।
:- अपना व्यवहार सबके साथ एक जैसा रखो।
:- अपनी बहन की तरह सबकी इज्जत करो।

(7) अधिकरण कारक [में, पर] :- इससे क्रिया के आधार व स्थान का पता चलता है।

↳ उदा. - घर-घर में शोर मच रहा है।
:- SSC GD की परीक्षा मार्च में होगी।
:- मैं एक घंटे में घर जाऊँगा।
:- तोता डाल पर बैठा है।
:- पक्षी आकाश में उड़ते है।

(8) संबोधन कारक [अरे!, ओ!, हे!] :-

↳ उदा. - अरे! उधर मत जाओ उधर खतरा है।
:- हे! भगवान मेरी रक्षा करो।
:- अरे! तुम कहाँ जा रहे हो।
:- अजी! सुनते हो।

ROJGAR WITH ANKIT

→ [कारक] ←

Part-3
Class-50

(1) 'रमेश जयपुर से दिल्ली जा रहा है/ ÷ अपादान कारक
↳ यह अलगाव का बोध हो रहा है/

(2) पढ़ते समय मेरी आँखो से पानी निकलता है/ ÷ अपादान कारक

(3) गंगा हिमालय से निकलती है/ ÷ अपादान कारक

(4) महादेवी की गाय का नाम गौरा था / ÷ संबंध कारक
↳ यह संबंध का बोध करा रहा है/

(5) गरिमा दूध पी रही है/ ÷ कर्म कारक

(6) मैंने डंडे से साँप मारा / ÷ करण कारक
↳ साधन का बोध करा रहा है/

(7) वह दुकान पर नहीं है / ÷ अधिकरण कारक

(8) चन्द्रमा आकाश में चमकता है / ÷ अधिकरण कारक

(9) मैंने सुरेश को बुलाया / ÷ कर्म कारक

(10) तुम सीढ़ी से चढ़ जाओ ÷ करण कारक

(11) उत्तर भारत में बहुत गरमी पढ़ती है/ ÷ अधिकरण कारक
↳ स्थान का बोध करा रहा है/

(12) तालाब में मछलियाँ है / ÷ अधिकरण कारक

(13) 'उसने चाकू से फल काटे' ÷ करण कारक

(14) अपादान कारक ÷ बहू सास से ले जाती है/

(15) राजा सेवक को कंबल देता है। :- संप्रदान कारक
↳ यहाँ देने का बोध हो रहा है

16) 'झगड़ा मेरे और उसके मध्य में था' :- अधिकरण कारक

(17) 'गरीबों के निमित्त धन इकट्ठा करो' :- सम्प्रदान कारक

(18) 'माँ बच्चे को दूध पिला रही है' :- कर्म कारक

(19) संप्रदान कारक :- गरीब के निमित्त वस्त्र दान करो।

(20) कर्ता कारक नहीं है :-
(a) सचिन क्रिकेट खेल रहा है।
✓(b) बिजली चमक रही है।
(c) सुरेश ने सूरज को बुलाया।
(d) संजय व्यायाम करता है।

(21) 'वीरों ने देश के हेतु बलिदान दे दिया' :- संप्रदान कारक

(22) अपादान कारक नहीं है।
(a) मैं जयपुर से चला आ रहा हूँ।
(b) सूर्य पृथ्वी से दूर है।
(c) राजीव छत से कूद पड़ा।
✓(d) सब प्राणी आँखों से देखते हैं।

(23) कौन-सा क्रम सही नहीं है?
✓(a) पेड़ से पत्ता गिरा - ~~करण~~ कारक [अलगाव का बोध :- अपादान कारक]
(b) ओ लड़के! धीरे चल - संबोधन कारक
(c) छत के ऊपर चले जाओ - अधिकरण कारक
(d) आसमान का रंग नीला है - संबंध कारक

(24) 'जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे सूचित करने वाला संज्ञा रूप' :- कर्म कारक

ROJGAR WITH ANKIT

(25) करण कारक नहीं है ?

(a) लड़का छत से गिर पड़ा / [अपादान कारक]

(b) पिताजी कार से कार्यालय जाते है /

(c) प्राचार्य ने यह आदेश चपरासी के द्वारा भिजवाया है /

(26) 'देवेंद्र मैदान में खेल रहा है' / :- अधिकरण कारक

(27) 'मेंढक को पत्थर से मत मारो' / :- करण कारक

(28) सम्प्रदान कारक :- बच्चों के लिए मिठाई लाओ

(29) क्रिया का प्रभाव या फल जिस संज्ञा / सर्वनाम पर पड़ता है' :- कर्म कारक

(30) 'अमेरिका ने भारत को आर्थिक सहायता दी' :- सम्प्रदान कारक
↳ यहाँ यहाँ पर "के लिए" बोध हो रहा है /

⇒ गृह कार्य :- "मैं साँप से डरता हूँ" कारक बताइए ?

(a) करण
(b) अपादान
(c) कर्ता
(d) संबंध

:[वाच्य]: CLASS - 51

↳ शाब्दिक अर्थ :- सही बोलने का ढंग / लिहाज

:- इन वाक्यों को क्रिया के आधार पर निर्धारित किया जाता है/

:- क्रिया के आधार पर 3 वाच्य होते है :-
- → कर्तृ वाच्य
- → कर्म वाच्य
- → भाव वाच्य

★ वाच्य की परिभाषा :- जिस वाक्य मे क्रिया को करने वाले कर्ता, कर्म, भाव का पता चलता है, उसे वाच्य कहते है/

↳ उदा॰ :- राम पत्र लिखता है/ - कर्ता के अनुसार [कर्तृ वाच्य]

:- कहानी लिखी गई / - कर्म की प्रधानता है [कर्म वाच्य]

:- उससे चला नही गया /- नकारात्मक भाव की प्रधानता [भाव वाच्य]

:- दूध पिया जाता है/- कर्म की प्रधानता है [कर्म वाच्य]

1) कर्तृवाच्य :- कर्ता के साथ ने कारक की विभक्ति आती है और (शून्य) नही भी आती है/ [अकर्मक / सकर्मक दोनो होती है]

2) कर्म वाच्य :- कर्ता निर्जीव होता है, यदि कर्ता सजीव होगा तो के द्वारा विभक्ति के साथ आता है/
[सकर्मक होता है]

3) भाव वाच्य :- कर्ता के साथ से विभक्ति आती है और अन्यपुरुष / एकवचन / नकारात्मक भाव होता है/
[अकर्मक होता है]

(1) कर्तृवाच्य :-

↳ परिभाषा :- जिस वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन, कर्ता के अनुसार आते हैं, और कर्ता की प्रधानता होती है, वहाँ कर्तृवाच्य होता है।

↳ उदा॰ :- मोहन ने आम खाया।
:- राधा खो-खो खेलती है।
:- बच्चे क्रिकेट खेलते हैं।
:- राधा सो रही है।
:- कृष्ण सो रहा है।
:- राम ने दही खाया।

(2) कर्म वाच्य :-

↳ परिभाषा :- जिस वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन कर्म के अनुसार आते हैं, वहाँ कर्म वाच्य होता है।

★ यहाँ कर्ता के साथ "के द्वारा" लगा रहता है।

↳ उदा॰ :- चाय पी जाती है।
:- पानी पिया जाता है।
:- कहानी पढ़ी गई।
:- उपन्यास पढ़ा गया।
:- मोहन के द्वारा पत्र लिखा गया। [सजीव कर्ता के साथ विभक्ति लगाते हैं]
:- सुनीता के द्वारा खीर खायी जाती थी।
:- राम के द्वारा दही खाया गया।

(3) भाव वाच्य :-

ROJGAR WITH ANKIT

↳ परिभाषा :- जिस वाक्ये में क्रिया भाव के अनुसार आती है। और वाक्य मे क्रिया नकारात्मक, एकवचन, अन्यपुरुष मे होती है।

★ कर्त्ता के साथ (से) विभक्ति आती है।

↳ उदा० :- मोहन से चला नही जाता।

:- पिता जी से बैठा नही जाता।

:- चलो अब चला जाए।

:- मुझसे खेला नही जाता है।

अपवाद :- काजल से खाया नही जाता।

प्रश्न :- अकर्मक क्रिया है :-

(a) खाना (b) पढ़ना (c) लिखना (d) चलना

(भाव वाच्य के अपवाद होते है)

÷ [वाच्य] ÷ CLASS - 52

(1) वाच्य कितने प्रकार के होते है? ÷ 3 [कर्तृ, कर्म, भाव]

(2) "कोहली द्वारा शतक लगाया गया" इस वाक्य का कर्तृवाच्य मे रूपान्तरित वाक्य ÷ कोहली ने शतक लगाया

(3) जिस वाक्य मे कर्त्ता की प्रधानता होती है, लिंग, वचन प्राय: कर्त्ता के अनुसार होते है, वे वाक्य ..... कहलाते है?
÷ कर्तृवाच्य

4) 'राम आम खाता है' मे वाच्य का कौनसा रूप है?
÷ कर्तृवाच्य

(5) 'पुस्तक पढ़ी जाती है' मे वाच्य है ÷ कर्मवाच्य

(6) कर्मवाच्य का उदाहरण है ÷ शीला से पढ़ा भी नहीं जाता।

(7) 'आम खाया जाता है।' मे वाच्य है ÷ कर्मवाच्य

(8) कर्मवाच्य वाला वाक्य चुने। ÷ बिल्ली के हाथो चूहा मारा गया।

(9) कर्मवाच्य में प्रधान होता है ÷ कर्म
↳ क्रिया के लिंग, वचन, कर्म के अनुसार आते है।

(10) जिस वाक्य मे कर्म के अनुसार क्रिया मे परिवर्तन होता है, उस वाक्य को कहते है ÷ कर्मवाच्य

(11) कर्मवाच्य का उदाहरण है ÷ पत्र लिखा जाता है।

(12) 'मस्म वचन जब सीता बोली' ÷ कर्मवाच्य

(13) मै खाता हूँ, कर्मवाच्य रूप होगा ÷ मुझसे खाया जाता है।

(15) 'उसके द्वारा अपने भाई को पढ़ाया गया'/ :- कर्मवाच्य

(16) जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष, कर्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार न होकर एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष हों :- भाववाच्य

(17) भाववाच्य का उदाहरण :- धूप में चला नहीं जाता /

(18) क्रियाएँ सदैव एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष में होती :- भाववाच्य

(19) भाववाच्य :- उन लोगों से आज खेला नहीं जाता /

(20) भाववाच्य :- तोते से उड़ा नहीं गया /

(21) भाववाच्य :- अब चला जाए /

(22) मुझसे खड़ा भी हुआ नहीं जाता / :- भाववाच्य

(23) भाववाच्य है :- मोहन से बैठा नहीं जाता /

(24) 'मुझसे उठा नहीं गया'/ :- भाववाच्य

(25) 'मोहन से चला नहीं जाता' /:- भाववाच्य

(26) भाववाच्य है :- अब चला जाए /

(27) "उससे बैठा नहीं जाता है" :- भाववाच्य

(28) भाववाच्य है :-

[गृह कार्य]

(a) दादी से चला नहीं जाता /
(b) मोहन ने खाना नहीं खाया /
(c) कुलियों ने सामान नहीं उठाया /
(d) मैंने दरवाजा नहीं खोला /

→ [काल] ← Class-53

काल

शाब्दिक अर्थ → समय / मृत्यु

→ **परिभाषा**

* क्रिया का वह रूप जिससे हमें यह पता चलता है, कि क्रिया किस काल **(समय)** में हुई है, वह काल कहलाता है।

उदा०- ① राम पत्र लिखता है। [वर्तमान काल]

② मोहन गया। [भूतकाल]

③ हम दिल्ली जाएँगे। [भविष्य काल]

→ **काल के भेद → ③**

① → भूतकाल (बीता हुआ समय)

② → वर्तमान काल (जो समय चल रहा है।)

③ → भविष्य काल (आगे आने वाला समय)

③ पूर्ण भूतकाल

* क्रिया का बीते समय में पूर्ण होने का बोध होता है।

उदा० ① राधा ने गीत गाया था।

② श्याम ने पाठ पढ़ा था।

③ मोहन पत्र लिख चुका था।

④ मैं कल दिल्ली गया था।

④ अपूर्ण भूतकाल

* क्रिया का बीते समय में पूर्ण होने का बोध नहीं होता है।

उदा० ① विशाल खाना खा रहा था।

② माता जी खाना बना रही थी।

③ पिता जी चाय पी रहे थे।

④ किसान खेत जोत रहा था।

① साधारण भूतकाल

* जिस क्रिया के होने का निश्चित समय का पता नही चलता है, वो सा० भूतकाल होता है।

उदा० ① हमने हिन्दी पढ़ी।
② मोहिनी ने पत्र लिखा
③ मोहन ने दूध पिया
④ मैंने परीक्षा दी।
⑤ राम गया।
⑥ हम घूमने गये।

② आसन्न भूतकाल

* साधारण भूतकाल के वाक्यों के अंत में है, लगाकर आसन्न भूतकाल के वाक्य बनते है।

उदा० ① राम ने गाना गाया है।
② राम आया है।
③ मोहन पढ़ा है।
④ राम जयपुर गया है।

→ भूतकाल के भेद → ⑥

→ वर्तमान काल के भेद → ⑤

→ भविष्य काल के भेद → ③

① **भूतकाल** → जो क्रिया बीते समय में होती है, उसे भूतकाल कहते है।

उदा० ① माँ अखबार पढ़ रही है।

② गीता सोकर उठी है।

③ मोहन स्कूल गया।

* इसके ⑥ भेद होते है।

① साधारण भूतकाल

② आसन्न भूतकाल

③ पूर्ण भूतकाल

④ अपूर्ण भूतकाल

⑤ संदिग्ध भूतकाल

⑥ हेतुहेतुमद भूतकाल

⑤ संदिग्ध भूतकाल

* साधारण भूतकाल के अंत में होगा, होगी, होगे लगाने से संदिग्ध भूतकाल

उदा० ① राम आया होगा
② राधा ने पुस्तक पढ़ी होगी।
③ पूजा ने पत्र लिख लिया होगा

⑥ हेतु हेतु मद भूतकाल

* इस काल के वाक्यो में पहली वाली क्रिया पर दूसरी क्रिया निर्भर करती है।

उदा०- ① यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।
② यदि डॉ० समय पर आजाता तो रोगी बच जाता।
③ यदि आप पहले RWA से पढ़ लेते तो HC होते।

[काल] Part-02 Class-54

② वर्तमान काल

* जो समय चल रहा है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

उदा० ① बच्चा खेल रहा है।

② बच्चा छेड़ने से रोता है।

* इसके ⑤ भेद हैं।

① साधारण वर्तमानकाल

② तात्कालिक / अपूर्ण वर्तमानकाल

③ पूर्ण वर्तमानकाल

④ संदिग्ध वर्तमानकाल

⑤ संभाव्य वर्तमानकाल

① साधारण वर्तमानकाल

* क्रिया का वर्तमानकाल में सामान्य रूप में होना साधारण वर्तमानकाल कहलाता है।

[ता है, ती है, ते हैं।]

उदा० - ① मोहन पत्र लिखता है।

② पिता जी चाय पीते हैं।

③ माता जी खाना बनाती है।

④ राधा पाठ पढ़ती है।

② तात्कालिक / अपूर्ण वर्तमानकाल

* क्रिया के चलते रहने का बोध होता है।

[रहा है, रहे हैं, रही है]

① बालक पढ़ रहे हैं।

② अध्यापक हिन्दी पढ़ा रहे हैं।

③ मोहन जयपुर जा रहा है।

③ पूर्ण वर्तमानकाल

* क्रिया का चल रहे समय में पूर्ण होने का बोध होता है।

उदा० ① मोहन पढ़ चुका है।
② बालक खेल चुके हैं।
③ माताजी खाना बनाकर आयी है।
④ हम हिन्दी पढ़ चुके हैं।

④ संदिग्ध वर्तमानकाल

* साधारण वर्तमानकाल के अंत में होगा लगाकर संदिग्ध वर्तमानकाल बनता है।

① राम पत्र लिखता होगा।
② सीता पढ़ती होगी।
③ वह खाता होगा।

⑤ संभाव्य वर्तमानकाल

* तात्कालिक / अपूर्णवर्तमानकाल में होगा लगाकर संभाव्य वर्तमानकाल बनता है।

विशेष- हो, वाले वाक्य भी संभाव्य में आते हैं।

उदा० - ① राधा गाना गा रही होगी।

② कृष्ण नाच रहा होगा।

③ वह खाता हो।

③ भविष्य काल

* आने वाले समय का पता चलता है।

उदा० - ① राम आएगा।

② शायद आज वर्षा हो।

* इसके ③ भेद होते हैं।

① साधारण भविष्यकाल

② संभाव्य भविष्यकाल

③ हेतुहेतुमद भविष्यकाल

① साधारण भविष्यकाल

* क्रिया का भविष्य में साधारण रूप से होने का बोध होता है।

उदा० ① राम कल आएगा।

② मोहन पढ़ेगा।

③ सोनू दिल्ली जाएगा।

④ वो मुझसे बात करेगी।

② संभाव्य भविष्यकाल

* क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने की संभावना होती है।

Ex- ① शायद चोर पकड़ा जाए।

② शायद आज वर्षा हो।

③ हो सकता है, कि आज मैं घूमने जाऊँ।

③ हेतु हेतुमद् भविष्यकाल

* पहली वाली क्रिया पर दूसरी क्रिया आने वाले समय पर निर्भर करती है।

उदा०- ① यदि वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी

② वह आए तो मैं जाऊँ।

③ यदि राम आएगा तो सीता जाएगी।

④ यदि हम मेहनत करेंगे तो हमें मंजिल जरूर मिलेगी।

विराम-चिह्न

Class-55

→ विराम का अर्थ - ठहरना/रुकना/ठहराव है।

विशेष → श्री कामता प्रसाद गुरू जी के अनुसार विराम चिह्न की संख्या (20) होती है।

① अल्प विराम [,]

* जब वाक्य में ठहराव थोड़े से समय के लिए होता है वहाँ अल्प विराम का प्रयोग करते हैं।
* किसी तिथि को लिखते समय भी इसका प्रयोग करते है। **जैसे-** 15 अगस्त, 1947
* जब वाक्य की शुरुआत में - नहीं, सचमुच निस्संदेह, अच्छा आदि शब्दों को प्रयोग किया जाता है, वहाँ इसका प्रयोग करते हैं।

जैसे ① अच्छा, कल तुम कक्षा में नहीं आए।

② सचमुच, तुम मुझे जानते हो।

③ राम, श्याम और मोहन घूमने गए हैं।

④ हाँ, ठीक है चले जाना।

② अर्द्धविराम [;]

* जब वाक्य में अल्पविराम की अपेक्षा ज्यादा ठहराव होता है।

* जिन वाक्यों में - किन्तु, परन्तु, इसलिए, लेकिन वरन् फिर भी आदि जैसे शब्द आते हैं, वहाँ अर्द्धविराम लगाया जाता है।

जैसे - ① वह आता तो; लेकिन समय नहीं मिला।

② वह बात तो करता है; किन्तु मौका नहीं मिलता।

③ मैं असफल होता रहा; फिर भी मेहनत करता रह

③ पूर्ण विराम [।]

* जब हमारी बात खत्म हो जाती है, तो हम अपना वाक्य पूरी तरह बंद कर देते हैं।

जैसे- ① राम ने रावण को मारा।

② लक्ष्मण ने पत्र लिखा।

* काव्य के भाग में जैसे- दोहा, छंद आदि में हम पूर्णविराम का प्रयोग करते हैं।

जैसे- जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। [चौपाई]

④ अपूर्ण विराम (उपविराम, अविराम, न्यून विराम) [:]

* जब वाक्य में बात जारी रहे, और आगे बढ़ने की इच्छा हो

जैसे- ① मुझे तुमसे एक शिकायत है,: कल तू मेरे साथ स्कूल नहीं गया।

⑤ प्रश्नवाचक विराम [?]

* जब वाक्य के माध्यम से प्रश्न किया जाता है, तो प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग करते हैं।

जैसे- ① तुम कब आये थे? ② तुम कौन हो?

ROJGAR WITH ANKIT

⑥ विस्मयादि बोधक / विस्मय बोधक [!]

* जो चिह्न दुःख, हर्ष, शोक, करुणा, विस्मय भय आदि को प्रकट करते है।

जैसे- ① हे, भगवान! रक्षा करो।

② अरे! वहाँ मत जाना।

③ आप दीर्घायु हो!

⑦ संबोधन चिह्न [!]

* संबोधित करते समय इसका प्रयोग किया जाता है

जैसे- ① सुनिए! यहाँ आओ।

② अजी! सुनते हो।

③ भाइयो और बहनों! भारत का विकास मेरी प्रथम प्राथमिकता है।

[विराम चिह्न] Part-02

Class-56

⑧ लाघव चिह्न [०]

* इस चिह्न का प्रयोग संक्षेप के रूप में किया जाता है।

जैसे- ① जि० → पटना

② बी० एस० एफ०

③ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

④ पी० एच० डी०

⑨ त्रुटि विराम / हंसपद चिह्न [^]

* जब वाक्य का कोई पद छूट जाता है, तब इस विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

Ex- ① महात्मा गाँधी जी ^(को) राष्ट्रपिता कहा जाता है।

② मेरा भारत ^(महान्) है।

⑩ योजक | सामासिक चिह्न [-]

* इसका प्रयोग विलोम शब्द में भी किया जाता है।
* दो विशेषता बताने पर भी इसका प्रयोग किया जाता है। Ex- मोटा - पतला
* (का) का लोप करने पर भी योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

Ex- भारत का भूगोल → भारत - भूगोल

* शब्द की पुनरावृत्ति पर भी इसको लगाया जाता है। Ex- प्यार - प्यार , धीरे - धीरे

⑪ अवतरण / उद्धरण चिह्न [इकहरा ' ' , दुहरा " "]

(i) इकहरा उद्धरण चिह्न

* ① जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' उपन्यास लिखा।

② विद्यालय का नाम 'टैगोर' विद्यालय है।

(ii) दुहरा उद्धरण चिह्न [“ ”]

* इस चिह्न का प्रयोग किसी के द्वारा कही गयी बात को ज्यों का त्यों दिखाने के लिए किया जाता है।

Ex① सुभाष चंद्र बोस जी ने कहा “तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें पानी दूँगा”।

② पं० जवाहर लाल नेहरू जी ने कहा “आराम हराम है”।

⑫ तुल्यता बोधक चिह्न [=]

Ex- ① 1 दिन = 24 घण्टे

② 1 वर्ष = 365, 366 दिन

⑬ कोष्ठक चिह्न [( )]

* इस चिह्न का प्रयोग अर्थ को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है।

उदा० ① उसने विपरीत (उल्टा) अर्थ नहीं निकाला।

② मैंने राधा (कृष्ण की प्रेमिका) से प्रश्न पूछा।

③ राम ने अग्नि (आग) लगाई

⑭ लोप चिह्न (.......)

* वाक्य में उचित विकल्प से पूर्ति करने के लिए वाक्य को सार्थक बनाने के लिए लोप चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

Ex- ① राम जी को 14 वर्ष......... का वनवास हुआ।

⑮ पुनरावृत्ति, अनुवृत्ति चिह्न [,, ,,]

* दोहराने के समय इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

Ex- ① मनीषा बाजार जा रही है।
मोहिनी बाजार ,, ,, है।

② लखन पढ़ रहा है।, राम पढ़ ,, ,, है।

(16) पाद चिह्न / पाद टिप्पणी चिह्न

* इसका प्रयोग स्पष्टीकरण के लिए किया जाता है

*
+
\- मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ!
*
,

(17) निर्देशक चिह्न (—)

* विशेष बात का उल्लेख करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

उदा० (1) जैसे - मैं, तुम, आप

(2) दिल्ली - व्यक्तिवाचक संज्ञा है।

(3) हिंदी में वर्ण दो प्रकार के हैं, — (1) स्वर
(2) व्यंजन

(18) पदलोप चिह्न (........)

Ex- (1) राम की पत्नी सीता हैं, ... पर वह राजा जनक की पुत्री है।

(19) समाप्ति सूचक चिह्न [—०—]

* इस चिह्न का प्रयोग पाठ, कहानी, अध्याय की समाप्ति पर किया जाता है।

—०— , —०—

(20) विवरण चिह्न [:→]

* किसी के बारे में विस्तार से लिखने के लिए या किसी की परिभाषा देने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

Ex- परिभाषा :→

→ [काल, विराम चिह्न] ← (Class-57)

प्रश्न उत्तर

① 'काल' के कितने भेद होते हैं।

→ तीन

② * यदि नेहा परिश्रम करती तो परीक्षा में अवश्य उत्तीर्ण होती → हेतुहेतुमद भूतकाल

* सत्संग में जाने के बाद मन को शांति मिली है। → आसन्न भूतकाल

* महेश गीत गा रहा था → अपूर्ण भूतकाल

* मैंने आज एक फिल्म देखी थी → पूर्ण भूत

* आधुनिक युग की मीरा महादेवी वर्मा ने मेरा परिवार नामक संस्मरण लिखा → सामान्य भूत

* मैंने आम खाया है। → आसन्न भूत

* रीना पढ़ती होगी → संदिग्ध वर्तमान काल

③ सोनू खा रहा है। → अपूर्ण वर्तमान काल

④ गीता ने पुस्तक पढ़ी है। → पूर्ण वर्तमान

⑤ वह रोज देर से उठता है। → सामान्य वर्तमान

⑥ संभवतः वह लिखता हो → संभाव्य वर्तमान

⑦ गायक गीत गा रहा है। → तात्कालिक वर्तमान

⑧ संभव है, कि कल हम सिनेमा देखने जाएंगे →
→ संभाव्य भविष्यत काल।

⑨ आप गाएँ तो मैं नाचूँ → हेतु-हेतुमद भविष्यत

⑩ अध्यापिका नृत्य सिखाएंगी → सामान्य भविष्यत

⑪ सुनील जरा इधर आना, वाक्य में उचित विराम चिह्न का प्रयोग होगा → ,

⑫ समानाधिकरण शब्दों के बीच में किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है। → अल्पविराम ,

⑬ जहाँ अल्पविराम की अपेक्षा थोड़ा अधिक रुकना हो वहाँ → अर्द्धविराम लगाते है।

ROJGAR WITH ANKIT

(14) दिए गए वाक्यों में उचित विराम चिह्न लगाएँ

(i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है → । पूर्णविराम

(ii) किधर चलें → ? प्रश्नवाचक

(iii) आना जाना → योजक चिन्ह -

(15) घृणा, आश्चर्य, हर्ष, आदि भावों को व्यक्त करने वाले शब्दों के साथ → विस्मयादिबोधक ! चिह्न लगाते हैं।

(16) किसी के द्वारा कहे गए कथन को मूल रूप से लिखने के लिए → उद्धरण चिह्न लगाते हैं।

→ [तत्सम - तद्भव] ← Class - 58

→ व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द के भेद → ④

(i) तत्सम
(ii) तद्भव
(iii) देशज
(iv) विदेशज
(v) संकर

(i) तत्सम शब्द

* वे शब्द जो संस्कृत भाषा से आए थे और आज भी बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं।

(तत + सम → उसी के समान)

* ये बहुत कठिन होते हैं। , इनका उच्चारण करते समय संघर्ष करना पड़ता है।

① उजाला → उज्ज्वल (तत्सम)

② आम → आम्र (तत्सम)

* (ं) अनुस्वार और संयुक्त व्यंजन (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र) तत्सम शब्दों में मिलते है।

* आधा वर्ण तत्सम शब्दों में आता है।

* ये ध्वनियाँ संस्कृत भाषा की, तथा बोलने में कठिन होती हैं।

② तद्भव शब्द

* वे ध्वनियाँ जिनका जन्म तत्सम शब्दो से हुआ है, तद्भव कहलाती हैं।

जैसे- पानी, प्यार, आम, आदि।

(तद्भव → उसी से उत्पन्न)

पहचान- * ँ चंद्रबिन्दु, 'ख' सरल भाषा वाले शब्द तद्भव शब्द होते हैं।

* तद्भव शब्दों का प्रयोग हिन्दी में होता है।

③ देशज शब्द

* देशज शब्द का जन्म हमारी साधारण बोलियों से होता है।

Ex- झोला, लोटा, डोंगा आदि

④ विदेशज शब्द

* विदेशज बाहर से आए हुए हैं, जिनका जन्म विदेशी भाषा से हुआ है।

Ex- रिक्शा, आलू, तंबाकू, आदि।

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
① अटारी →	अट्टालिका	⑥ अमोल →	अमूल
② अखाड़ा →	अक्षवाट	⑦ अमचूर →	आमचूर्ण
③ अकेला →	एकल	⑧ अनूठा →	अनुत्थ
④ अस्सी →	अशीति	⑨ अनाड़ी →	अनार्य
⑤ असाढ़ →	आषाढ़	⑩ अदरक →	आर्द्रक

तद्भव	तत्सम
11 अंधा →	अंध
12 अंतड़ी →	अंत्र
13 अंगूठी →	अँगुष्ठिका
14 अंगरखा →	अंगरक्षक
15 अंगुली →	अंगुलीय
16 अंगूठा →	अंगुष्ठ
17 अंगीठी →	अग्निष्ठिका
18 आँच →	अर्चि
19 आग →	अग्नि
20 आसरा →	आश्रय
21 आम →	आम्र
22 आप →	आत्मा
23 आदत →	आदमत्व
24 आज →	अद्य
25 आँसू →	अश्रु

तद्भव	तत्सम
26 आँख →	अक्षि
27 आस →	आशा
28 आलस →	आलस्य
29 उजाला →	उज्ज्वल
30 आँवला →	आमलक
31 इतवार →	आदित्यवार
32 ईंट →	इष्टिका
33 ईख →	इक्षु
34 खेत →	क्षेत्र
35 ईंधन →	इंधन

* **तत्सम** → श, ष

* **तद्भव** → ड़, ढ़ (ताड़नजात

ROJGAR WITH ANKIT

तत्सम, तद्भव

Part-02 Class-59

तद्भव	तत्सम
36 उल्लू	→ उलूक
37 उगना	→ उद्गत / उद्गम
38 ऊँट	→ उष्ट्र
39 ऊन	→ ऊर्ण
40 ओझा	→ उपाध्याय
41 कंगन	→ कंकण
42 कंधा	→ स्कंध
43 कहानी	→ कथानिका
44 काँच	→ काच
45 कछुआ	→ कच्छप
46 कपड़ा	→ कर्पट
47 किवाड़	→ कपाट
48 कुआँ	→ कूप
49 कटहल	→ कंठफल

तद्भव	तत्सम
50 कपूत	→ कुपुत्र
51 कबूतर	→ कपोत
52 सपूत	→ सुपुत्र
53 कान	→ कर्ण
54 अखरोट	→ अक्षोट
55 अनाज	→ अन्न
56 अमी / अमिय	→ अमृत
57 आशीष	→ आशीष
58 ओखली	→ उलूखल
59 कचहरी	→ कृत्यगृह
60 कैंची	→ कर्तरी
61 कुँवारा	→ कुमारक
62 कपास	→ कर्पास
63 किसान	→ कृषक

तद्भव	तत्सम
63 काजल →	कज्जल
64 कुम्हार →	कुम्भकार
65 कपूर →	कर्पूर
66 कलेश →	क्लेश
67 कर्तब →	कर्तव्य
68 करोड़ →	कोटि
69 काँटा →	कंटक
70 केकड़ा →	कर्कट
71 कोयल →	कोकिल
72 कौआ →	काक
73 खत्री →	क्षत्रिय
74 खम्भा →	स्तंभ
75 खाँसी →	कास
76 खाट →	खट्वा
↓ 77 चारपाई	
78 खीर →	क्षीर

तद्भव	तत्सम
79 खुर →	क्षुर
80 खेल →	खेला
81 गँवार →	ग्रामीण
82 गनेश →	गणेश
83 गाँव →	ग्राम
84 गागर →	गर्गर
85 गाहक →	ग्राहक
86 गुसाईं →	गोस्वामी
87 गेंद →	कंदुक
88 गेहूँ →	गोधूम
89 गोबर →	गोमय
90 गोत →	गोत्र
91 ग्यारह →	एकादश
92 ग्वाल →	गोपालक
93 घड़ा →	घट
94 घी →	घृत

तद्भव	तत्सम
(95) घाव →	घात
(96) घूँघट →	गुंठन
(97) घोड़ा →	घोटक
(98) चना →	चणक
(99) चाँदनी →	चंद्रिका
(100) चिड़िया →	चटिका
(101) चीता →	चित्रक
(102) छिलका →	शकल
(103) छुरी →	छुरिका
(104) जड़ →	जटा
(105) जमाई →	जामातृ/जामात्र
(106) जमुना →	यमुना
(107) जनेऊ →	यज्ञोपवीत
(108) जीभ →	जीह्वा
(109) जुआ →	द्यूत
(110) जोगी →	योगी

तद्भव	तत्सम
(111) टकसाल →	टंकसाल
(112) ठाँव →	स्थान
(113) ठाकुर →	ठक्कुर
(114) जलना →	ज्वलन
(115) जब →	यदा
(116) चबाना →	चवर्ण
(117) चाम →	चर्म
(118) चक्का →	चक्र
(119) चूना/चूरन →	चूर्ण
(120) चोंच →	चंचु
(121) जाड़ा →	जाड्य
(122) जग →	जगत/संसार लोक
(123) जहाँ →	यत्र
(124) झरना →	झरन
(125) जैसा →	यादृश
(126) जूठा →	जुष्ट

तद्भव	तत्सम
(127) -चोरी →	-चौरिका
(128) -चौक →	-चतुष्क
(129) -चौपाया →	-चतुष्पद

तद्भव, तत्सम

Part-03 Class-60

तद्भव	तत्सम
(1) चुनना	चुनौती
(2) छाँह	छाया
(3) छाता	छत्रक
(4) छमा	क्षमा
(5) जिजमान	यजमान
(6) छेनी	छेदनी
(7) डंक	दंश
(8) डाँड़	दण्ड
(9) ढीठ	धृष्ट
(10) तपसी	तपस्वी
(11) तलवार	तरवारि
(12) ताँबा	ताम्र
(13) त्योहार	तिथिवार
(14) तिनका	तृण

तद्भव	तत्सम
(15) आखर	अक्षर
(16) दही	दधी
(17) दूध	दुग्ध
(18) दाई	धात्री, धात्रा
(19) थोड़ा	स्तोक
(20) दूब	दूर्वा
(21) देवर	द्विवर
(22) दूग	द्रक
(23) धनिया	धनिका
(24) धुआँ	धूम
(25) धूल	धूलि
(26) धोना	धावन
(27) डाइन	डाकिनी
(28) डाढ़	दंष्ट्रा

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
29 नंगा →	नग्न	45 जौ →	यव
30 नखत →	नक्षत्र	46 जामुन →	जंबूल / जंबु
31 नंदोई →	ननोद्रपति	47 दातुन →	दंत धावन
32 नस →	नस्य	48 दूल्हा →	दुर्लभ
33 नाई →	नापित	49 केला →	कदली
34 नारियल →	नारिकेल	50 दियासलाई →	दीपशलाका
35 निडर →	निदर	51 धतूरा →	धत्तूर
36 नींबू →	निम्बक	52 नोन (नमक) →	लवण
37 नीम →	निम्ब	53 पनही →	उपानह
38 नैन →	नयन	54 पलंग →	पर्यंक
39 नाक →	नासिका	55 पाहन →	पाषाण
40 नीचे →	नीच्य	56 पापड़ →	पर्पट
41 नेवला →	नकुल	57 पकवान →	पक्वान्न
42 पंख →	पक्ष	58 पिटारा →	पिटक
43 पंछी →	पक्षी	59 फोड़ा →	स्फोट
44 पंगत →	पंक्ति	60 फिटकरी →	स्फटिक

तद्भव	तत्सम
61 फाँसी →	पाशिका
62 बछड़ा →	वत्स
63 बरात →	वरयात्रा
64 बनिया →	वाणिक
65 बैंगन →	वातकि
66 बेर →	बदरी
67 भँवरा/भौंरा →	भ्रमर
68 भतीजा →	भ्रातृज
69 भाप →	वाष्प
70 भालू →	भल्लूक
71 मोती →	मौक्तिक
72 माखन →	म्रक्षण
73 मिर्च →	मरीच
74 मामा →	मातुल
75 राखी →	रक्षा
76 भैंस →	महिषी
77 भैंसा →	महिषा

तद्भव	तत्सम
78 रोटी →	रोटिका
79 रसोई →	रसवती
80 लंगोट →	लिंग पट्ट
81 लौंग →	लवंग
82 लोहार →	लौहकार
83 लेई →	लेपिका
84 लहसुन →	लशुन
85 लखपति →	लक्षपति
86 लँगड़ा →	लंग
87 शीशम →	शिशंपा
88 सूई →	सूचिका / सूचि
89 सलाई →	शलाका
90 साड़ी →	शाटिका
91 सरसों →	सर्सप
92 सुनार →	स्वर्णकार
93 सुअर →	सूकर
94 हथिनी →	हस्तिनी

तद्भव	तत्सम
96 हाथी →	हस्ति
97 ससुराल →	श्वसुरालय
98 सेठ →	श्रेष्ठी
99 सिक्ख →	शिष्य
100 सौंप →	समर्पण
101 सिंघाड़ा →	श्रृंगाटक
102 हल्दी →	हरिद्रा
103 हुलास →	उल्लास
104 हड्डी →	अस्थि
105 हींग →	हिंगु
106 हिरन →	हिरण

तद्भव, तत्सम — Part-04 (Class-61)

प्रश्न-उत्तर

① तद्भव से तत्सम बनाऐं /

1. अजान → अज्ञान
2. अचरज → आश्चर्य
3. अकाज → अकार्य
4. अखरोट → अक्षोट
5. अंगीठी → अग्निष्ठिका
6. आँख → अक्षि
7. आम → आम्र
8. ईख → ईक्षु
9. उछाह → उत्साह
10. ऊन → ऊर्ण
11. कोख → कुक्षि
12. केवट → कैवर्त
13. कुछ → किंचित
14. खत्री → क्षत्रिय
15. खेत → क्षेत्र
16. खंडहर → खण्डगृह
17. होली → होलिका
18. गाँठ → ग्रंथि
19. गागर → गर्गर
20. चौपाई → चतुष्पदी
21. गधा → गर्दभ
22. गीध → गृध
23. गोधूम → गेहूँ
24. किशन → कृष्ण
25. कान → कर्ण
26. अगहन → अग्रहायण

विलोम शब्द

Class-62

* ऐसे शब्द जो एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं।

उदा० - ① हँसना → रोना
② खुशी → दुःख
③ अच्छा → बुरा
④ चाचा → चाची
⑤ नया → पुराना

1-नियम- लिंग परिवर्तन के आधार पर

① राजा → रानी, प्रजा, रंक
② वर → वधू
③ दादा → दादी

2- नियम→ भिन्न जातीय के आधार पर

Ex- ① कड़वा → मीठा
② अनुराग → विराग

3- **नियम** → प्रत्यय के आधार पर विलोम

Ex- ① गणतंत्र → राजतंत्र

② एकतंत्र → बहुतंत्र

③ अल्पसंख्यक → बहुसंख्यक

4- उपसर्ग के आधार पर

Ex- ① साध्य → असाध्य

② ईश्वर → अनीश्वर

③ दुराचार → सदाचार

④ आहूत → अनाहूत

5- **नियम** → नञ समास के आधार पर

Ex- ① संभव → असंभव

② शांत → अशांत

③ आस्तिक → नास्तिक

6- **नियम** → तत्सम का विलोम तद्भव शब्द रूप में
तद्भव का विलोम तत्सम शब्द रूप में।

Ex- रात → दिन रात्रि → दिवा, दिवस

ROJGAR WITH ANKIT

विलोम शब्द

1	अनुगामी	विरोधी
2	अंधकार	प्रकाश
3	अंत	आदि
4	अग्नि	जल
5	अच्छा	बुरा
6	अटल	ढुलमुल
7	अधिकतम	न्यूनतम
8	अनुभवी	अनुभवहीन
9	अनुग्रह	विग्रह
10	आहूत	अनाहूत
11	रुचि	अरुचि
12	अंदर	बाहर
13	अंगीकार	अस्वीकार
14	अंतरंग	बहिरंग
15	अंदर	बाहर
16	अग्र	पश्च
17	ऊपर	नीचे
18	अग्रज	अनुज
19	अज्ञ	विज्ञ
20	अथ	इति
21	अधम	उत्तम
22	अधीन	पराधीन
23	अनंत	अंत
24	अनाथ	सनाथ
25	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
26	अभिमुख	प्रतिमुख
27	अमावस्या	पूर्णिमा
28	अमीर	गरीब
29	अमृत	विष
30	अर्जित	अनर्जित
31	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
32	अवनि	अम्बर

(33) अनाजी →	फलाहारी
(34) अमर →	मर्त्य
(35) अर्जन →	व्यमन
(36) अर्पण →	ग्रहण
(37) अनुरूप →	प्रतिरूप
(38) अल्पप्राण →	महाप्राण
(39) अहिंसा →	हिंसा
(40) आजादी →	गुलामी
(41) आज्ञाकारी →	अवज्ञाकारी
(42) आम →	खास
(43) आडम्बर →	सादगी
(44) आबाद →	बर्बाद
(45) आयात →	निर्यात
(46) आदान →	प्रदान

ROJGAR WITH ANKIT

विलोम शब्द

Part-2 | Class-6

शब्द	विलोम
① आक्रमण	रक्षा
② आगामी	विगत
③ आदर	अनादर
④ ईमानदारी	बेईमानी
⑤ उन्नत	अवनत
⑥ उधार	नगद
⑦ उल्लास	विषाद
⑧ उपरिलिखित	अधोलिखित
⑨ उन्मूलन	रोपड़
⑩ उद्यम	निरुद्यम
⑪ उपजाऊ	बंजर
⑫ ऊपर	नीचे
⑬ उचित	अनुचित
⑭ उत्तरी	दक्षिणी
⑮ उर्ध्वगामी	अधोगामी
⑯ उग्र	सौम्य
⑰ उत्कर्ष	अपकर्ष
⑱ उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
⑲ ऋजु	वक्र
⑳ ऋण	उऋण
㉑ एकता	अनेकता
㉒ एक	अनेक
㉓ एड़ी	चोटी
㉔ एकाग्र/तल्लीन	चंचल
㉕ कीर्ति	अपकीर्ति
㉖ कसूरवार	बेकसूर
㉗ अतल	वितल
㉘ अमित	परमित
㉙ अदेय	देय
㉚ अधिकार	अनधिकार
㉛ अधिकृत	अनधिकृत
㉜ आमिष/सामिष	निरामिष
㉝ उपत्यका	अधित्यका
㉞ ऋद्धि	सिद्धि

35 एकाग्र →	चंचल
36 चिरंजीवी →	नश्वर
37 तारुण्य →	वार्धक्य
38 तन्वंगी →	स्थूलांगी
39 दैविक →	भौतिक
40 निषेध →	विहित
41 निरामिष →	सामिष
42 प्रस्फुटन →	संकुचन
43 कर्कश →	मधुर
44 श्री गणेश →	इति श्री
45 अर्वाचीन →	प्राचीन
46 ऋजु →	वक्र
47 अनिवार्य →	वैकल्पिक
48 आविर्भाव →	तिरोभाव
49 उन्मूलन →	रोपड़
50 ग्रस्त →	मुक्त
51 रुग्ण →	स्वस्थ

52 सहोदर →	अन्योदर
53 परोक्ष / अप्रत्यक्ष	प्रत्यक्ष
54 कृतज्ञ →	कृतघ्न
55 गरल →	सुधा
56 संधि →	विग्रह
57 समास →	व्यास
58 हर्ष →	विषाद, शोक
59 मूक →	वाचाल
60 सामान्य →	असामान्य
61 मसृण →	रूक्ष
62 चिरंतन →	नश्वर
63 स्थावर →	जंगम
64 पाश्चात्य →	पौर्वात्य
65 नैसर्गिक →	कृत्रिक
66 समष्टि →	व्यष्टि
67 ध्वंस →	निर्माण
68 नूतन →	पुरातन

69 तरुण →	वृद्ध
70 शुष्क →	आर्द्र
71 आवर्त →	अनावृत
72 उदयाचल →	अस्ताचल
73 ग्राह्य / ग्राह्यम	त्याज्य
74 जाग्रत →	सुषुप्ति

विलोम शब्द

Part-03 Class-64

1	ऋणात्मक →	धनात्मक
2	विधवा →	सधवा
3	पण्डित →	मूर्ख
4	कृत्रिम →	प्राकृतिक
5	वैभव →	पराभव
6	महात्मा →	दुरात्मा
7	उत्तरायण →	दक्षिणायन
8	थोक →	फुटकर
9	स्वार्थ →	निस्वार्थ
10	कल्पित →	यथार्थ
11	आरोह →	अवरोह
12	ख्यात →	प्रतिख्यात
13	क्षणिक →	शाश्वत
14	तेजस्वी →	निस्तेज
15	सृष्टि →	प्रलय
16	उत्थान →	पतन

17	ज्येष्ठ →	कनिष्ठ
18	जड़ →	चेतन
19	उन्मीलन →	निमीलन
20	राजा →	रानी/प्रजा/रंक
21	संश्लेषण →	विश्लेषण
22	अधुनातन →	पुरातन
23	निंदा →	स्तुति
24	धवल →	काला/कृष्ण
25	तिमिर →	प्रकाश
26	परुष →	कोमल
27	आरूढ़ →	अनारूढ़
28	निर्मल →	मलिन
29	मानव →	दानव
30	अपव्ययी →	मितव्ययी
31	आसक्त →	अनासक्त
32	सकारात्मक →	नकारात्मक

33 धनवान	→ धनहीन	49 स्वाधीन	→ पराधीन
34 यौवन	→ वार्धक्य	50 शुक्ल	→ कृष्ण
35 अनुरक्ति	→ विरक्ति	51 तीक्ष्ण	→ कुण्ठित
36 विख्यात	→ कुख्यात	52 उपार्जित	→ अनुपार्जित
37 उन्मुख	→ विमुख	53 अक्षर	→ क्षर
38 स्तुत्य	→ निंद्य	54 कृश	→ हष्ट पुष्ट
39 कृपण	→ दाता/उदार	55 खण्डन	→ मंडन
40 कौटिल्य	→ आर्जव	56 चपल	→ स्थिर
41 भूगोल	→ खगोल	57 भ्रांत	→ निर्भ्रांत
42 अवर	→ प्रवर	58 गुरु	→ शिष्य, लघु
43 वादी	→ प्रतिवादी	59 तृष्णा	→ वितृष्णा
44 आवेशित	→ अनावेशित	60 तटस्थ	→ साक्षेप
45 सुलभ	→ दुर्लभ	61 संगठन	→ विघटन
46 परिश्रम	→ आलस्य	62 प्रवेश	→ निकास
47 विहित	→ निषिद्ध	63 परास्त	→ विजयी
48 सहयोगी	→ प्रतियोगी	64 ईप्सित	→ अनीप्सित
		65 छमा	→ बेछमा

विलोम शब्द

Part-04 Class-65

① निष्काम	सुकाम
② पूर्ववर्ती	परवर्ती
③ मिथ्या	सत्य
④ इहलोक	परलोक
⑤ स्वतंत्रता पूर्वक	परतंत्रता पूर्वक
⑥ मौखिक	लिखित
⑦ अपना	पराया
⑧ आधिक्य	अनाधिक्य
⑨ उत्कर्ष	अपकर्ष
⑩ कोलाहल	शांति
⑪ गहरा	उथला, छिछला
⑫ कलंकित	अकलंकित
⑬ एकपक्षीय	बहुपक्षीय
⑭ बसंत	पतझड़
⑮ शूरता	भीरू
⑯ सुदूर	निकट, पास

⑰ स्वाधीनता	पराधीनता
⑱ अपशकुन	शकुन
⑲ मूढ़	ज्ञानी
⑳ निर्भीक	भीरू
㉑ वांछनीय	अवांछनीय
㉒ सुगंध	दुर्गंध
㉓ सुंदरता	कुरूपता
㉔ रक्षक	भक्षक
㉕ व्याप्त	अव्याप्त
㉖ वियोग	संयोग
㉗ सभ्य	असभ्य
㉘ निष्पाप	पाप
㉙ अनघ	अघी
㉚ उपरि	अधः
㉛ क्रोधित	शांत
㉜ अधिक	न्यून

33	डूबना →	तैरना
34	जागरण →	शयन
35	बाद →	सूखा
36	आकुंचन →	प्रसारण
37	आपत्ति →	विपत्ति
38	गुण →	दोष/अवगुण
39	झुकाव →	तनाव
40	गौरव →	लाघव
41	जटिल →	सरल
42	अपेक्षा →	उपेक्षा
43	संकीर्ण →	विस्तीर्ण
44	असीम →	ससीम
45	आदर →	अनादर
46	ऐश्वर्य →	अनैश्वर्य
47	दरिद्रता →	सम्पन्नता
48	वैभव →	दारिद्रय
49	बहुमत →	अल्पमत

50	हार →	जीत
51	भावी →	अतीत
52	भिन्नतम →	सहमत
53	संतुष्ट →	असंतुष्ट
54	साधु →	असाधु/साध्वी
55	कवि →	कवयित्री
56	स्वीकार →	अस्वीकार
57	सहयोग →	असहयोग
58	हानि →	लाभ
59	यश →	अपयश
60	भाग्य/सौभाग्य →	दुर्भाग्य
61	मितव्यय →	अपव्यय
62	प्रचुर →	अल्प
63	प्रभावी →	अप्रभावी
64	कोप →	कृपा
65	तुच्छ →	महान
66	विराट →	क्षुद्र

66	निरक्षर →	साक्षर
67	अनुदात्त →	उदात्त
68	अंधियारा →	उजियारा
69	ज्योति →	तम
70	साँझ →	भोर
71	सफल →	विफल
72	परवलंबी →	स्वावलंबी
73	प्रथम →	अंतिम
74	सज्जन →	दुर्जन
75	नरम →	कठोर, कड़ा
76	वैतनिक →	अवैतनिक
77	दहन →	शमन
78	न्याय →	अन्याय
79	मौन →	मुखर
80	मूक →	वाचाल
81	सात्विक →	तामसिक
82	औदार्य →	अनौदार्य

83	संन्यासी →	गृहस्थ
84	पत्थर →	मोम
85	आशा →	निराशा / अनाशा
86	साहस →	निस्साहस, भय
87	प्रधान →	गौण
88	आविर्भाव →	तिरोभाव
89	उन्नति →	अवनति

विलोम शब्द

Class-66

① साधारण →	विलक्षण
② दिवस →	रात्रि
③ अग्रज →	अनुज
④ उन्नति →	अवनति
⑤ अपमान →	सम्मान
⑥ कोलाहल →	शांति
⑦ गुरु →	लघु
⑧ संपन्न →	विपन्न
⑨ योग →	भोग
⑩ अविचल →	विचल
⑪ आरम्भ →	अंत
⑫ अव्यवस्था →	सुव्यवस्था
⑬ उथला →	गहरा
⑭ आग्रह →	दुराग्रह
⑮ जातीय →	विजातीय
⑯ निर्मल →	मलिन
⑰ परुष →	कोमल
⑱ गमन →	आगमन
⑲ पाश्चात्य →	पौर्वात्य
⑳ कल्पित →	यथार्थ
㉑ आत्मघात →	आत्मरक्षा
㉒ ह्रस्व →	दीर्घ
㉓ अज्ञ →	विज्ञ
㉔ हास →	रूदन
㉕ श्वेत →	श्याम
㉖ आवरण →	अनावरण
㉗ उर्वर →	ऊसर
㉘ सुमति →	कुमति
㉙ विधि →	निषेध

[पर्यायवाची शब्द] Class-67

परिभाषा

* जो शब्द समान अर्थ के कारण दूसरे शब्दों का स्थान ले लेते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहा जाता है

उदा० → पानी, जल, नीर तोय, वारि, सलिल मेघपुष्प आदि।

Q- निम्नलिखित शब्दों में जल का पर्यायवाची कौन सा होगा?

(A) पयोद (B) जलज (C) जलधि ✓(D) मेघपुष्प

* पानी + द, धर → बादल के पर्याय बनते हैं।
* पानी + ज → कमल के पर्याय बनते हैं।
* पानी + धि, निधि → समुद्र के पर्याय बनते हैं।
* आँख + पानी के पर्यायवाची → आँसू के पर्याय बनते हैं।
* पुष्प; मछली + धनुष → कामदेव के पर्यायवाची बनते।
* कामदेव की पत्नी के नाम रति + पति के पर्याय

① पानी के पर्याय + द, धर

* पयोद , नीरद , पयोधर
* कमल → जलज , नीरज , पंकज
* समुद्र → जलधि , नीरनिधि
* आँख → नेत्रनीर , चक्षुजल
* कामदेव → रतिनाथ , रतिस्वामी , पुष्पधन्वा , मकरध्वज

① आम → रसाल , अतिसौरभ , सहकार , आम्र , अमृतफल
अंब , फलश्रेष्ठ ।

② अग्नि → पावक , अनल , कृशानु , दहन , वह्नि , वायुसखा
हुतासन , धूमकेतु , धनन्जय , ज्वलन , ज्वाला
वैश्वानर ।

③ आकाश → व्योम , नभ , गगन , द्यो , अंबर , अंतरिक्ष
अनन्त , अभ्र , आसमान , दिव , शून्य ।

④ आँगन → अजिर , प्रांगण , बगर ।

⑤ अमृत → पीयूष , अमिय , सुधा , जीवनोदक , मधु , अमी

⑥ अनाज → शस्य , अन्न , दाना , धान्य , गल्ला ।

(7) अनाथ → बेसहारा, निराश्रित, यतीम, दीन, नाथहीन।

(8) अंश → अंग, अवयव, भाग, शरीर, खण्ड, हिस्सा
सहायक।

(9) अगम्य → दुस्तर, कठिन, विकट, औघट।

(10) आँख → अक्षि, नयन, दृग, नेत्र, लोचन, चक्षु, विलोचन
दृष्टि, प्रेक्षा, अम्बक, चख, प्रेक्षण।

(11) अंधकार → तम, अँधेरा, तिमिर, अंधियारा, तमस।

(12) आसक्ति → अनुरक्ति, लगाव, स्नेह, लिप्तता, मोह, प्रेम
अनुराग, प्रणय, प्रीति।

(13) अप्सरा → देवांगना, देवबाला, सुरबाला, दिव्यांगना
सुरसुंदरी।

(14) अचल → शैल, गिरि, नग, महिधर, अद्रि, अटल, अडिग
स्थिर, दृढ़, अविचल।

(15) अज्ञानी → अज्ञ, मूर्ख, अनभिज्ञ, मूढ़, पागल।

(16) अभिलाषा → आकांक्षा, इच्छा, स्पृहा, कामना, ईप्सा
मनोरथ, चाह, उत्कंठा, ऐषणा, चाव।

(17) अतः → परिणामतः, अतएव, इसलिए, लिहाजा।

(19) अनार → दाड़िम , रामबीज , शुकप्रिय , शुकोदन।

(20) अन्वेषण → खोज , जाँच , गवेषण , अनुसंधान , शोध।

(21) अभिप्राय → आशय , तात्पर्य , मतलब , मायने , उद्देश्य , मंशा

(22) अधर → ओठ , ओष्ठ , रदपुट , लब , रदच्छद।

(23) अतिथि → मेहमान , पाहुना , अभ्यागत , गृहागत।

(24) अनुपम → अतुल , अनोखा , अपूर्व , अद्वितीय , बेजोड़

(25) अकुलाना → व्याकुल , परेशान , बेचैन , उद्विग्न , विकल

ROJGAR WITH ANKIT

→ [पर्यायवाची] ← Part-02 Class-68

① अनार → दाड़िम, रामबीज, शुकप्रिय, शुकोदन।

② अधम → अनाचार, अन्याय, अपकर्म, अनीत, जुल्म, पाप

③ अभिजात → श्रेष्ठ, आर्य, कुलीन, विशिष्ठ, योग्य।

④ अशक्त → मंद, आलसी, सुस्त, ढीला।

⑤ अनुभूति → बोध, जानकारी, विवेक, बुद्धि, समझ।

⑥ आँसू → अश्रु, नयनवीर, नयननीर, नेत्रनीर, नेत्रवारि

⑦ आशय → तात्पर्य, भाव, अर्थ, मतलब, अभिप्राय।

⑧ आनंद → आमोद, प्रमोद, हर्ष, सुख, चैन, आह्लाद मोद, विनोद, प्रसन्नता, उल्लास।

⑨ आविर्भाव → उद्‌भव, उत्पन्न, पैदाइश, स्त्रोत, जन्म अवतरण।

⑩ अंक → गोद, संख्या, हृदय, नंबर, सर्ग, पार्श्व।

(11) अपार → असीम, अनंत, निस्सीम, बेशुमार, बेहद।
(12) आयुष्मान → चिरंजीव, शतायु, दीर्घायु, चिरायु, दीर्घजीवी
(13) आपत्ति → विपत्ति, आपदा, आफत, विपदा, मुसीबत।
(14) आहार → भोजन, खाना, खाद्य-पदार्थ, खाद्य-सामग्री
(15) आडंबर → ढोंग, पाखंड, प्रपंच, स्वांग, दिखावा, ढकोसला
(16) ईश्वर → जगदीश, जगन्नाथ, परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु
दीनानाथ, भगवान, स्वयंभू, विभु, ब्रह्म, अज
(17) ईर्ष्या → डाह, मत्सर, कुढ़न, द्वेष, जलन, स्पर्धा, हसद।
(18) इंद्राणी → शची, पुलोमा, इन्द्रा, इन्द्रवधू, शतावरी।
(19) इच्छा → ईहा, वासना, स्पृहा, लिप्सा, उत्कंठा, लालसा
तृष्णा, अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, ख्वाहिश।
(20) ईख → रसाल, रसद, पौंड़ी, गन्ना, ऊख, रसदंड।
(21) उपहास → परिहास, मजाक, हँसी, मखौल, अपमान।
(22) ऊर्जा → शक्ति, ओज, स्फूर्ति, बल, जोर, ताकत।
(23) ऊँट → लंबोष्ठ, महाग्रीव, क्रमेलक, उष्ट्र।
(24) ऊँचा → उच्च, श्रेष्ठ, उर्ध्व, ऊपर, बुलंद, उत्तुंग, बड़ा
उठा हुआ, तुंग।

(25) उत्साह → उमंग, जोश, हौसला, उबाल, साहस, उल्लास

(26) उपवास → व्रत, अनसन, फाका, लंघन, निराहार।

(27) ओज → बल, ताकत, पराक्रम, दम, शक्ति, ऊर्जा।

(28) ऐश्वर्य → वैभव, संपन्नता, धन-संपत्ति, समृद्धि, ऋद्धि

(29) ओस → हिमकण, तुषार, हिमबिंदु, तुहिनकण, हिमसीकर

(30) कनक → सोना, धतूरा, गेहूँ, स्वर्ण, जातरूप, हिरण्य
हाटक, कंचन, हेम, कुंदन, कलधौत।

(31) कुशल → दक्ष, निपुण, प्रवीण, चतुर, होशियार।

(32) क्रोध → अमर्ष, रोष, गुस्सा, कोप, तैश, रिस।

(33) कुमुदिनी → नलिनी, कैरव, चंद्रप्रिया, इंदुकमल।

(34) कोयल → कोकिल, पिक, श्यामा, मदनशलाका, बसंतदूत
कलघोष, परभृत।

(35) कामदेव → मनसिज, मन्मथ, पुष्पधन्वा, रतिपति,
अनंग, मकरध्वज, मदन, मीनकेतु, कंदर्प,
पंचसर, मनोज, प्रद्युम्न, कामग, रतिनाथ।

(36) कपड़ा → वसन, वस्त्र, पट, चीर, अंबर, पहरावा
दुकूल, परिधान

(37) कृष्ण → वासुदेव , हरिकंश , नंदनंदन , गिरिधर , श्याम
कंसारि , वंशीधर , मोहन , माधव , गोविंद
मुरारी , दामोदर , कन्हैया , वनमाली , मुकुंद ।

(38) कौआ → काक , काग , वायस , एकाक्ष , पिशुन , काण

(39) कली → कलिका , मुकुल , कोरक , गुंचा , पखुंडी
डोंडी , कुडमल ।

(40) कल्पवृक्ष → पारिजात , कल्पतरु , देववृक्ष , कल्पद्रुम
सुरतरु , मन्दार , कल्पशाल , हरिचंदन ।

[पर्यायवाची] ← Part-03 {Class-69}

Q- अतिसौरभ का पर्यायवाची क्या होगा ?

(A) बादल (B) भ्रमर (C) जलज ✓(D) आम

① कमल → पंकज , पद्म , अम्बुज , नीरज , इन्दीवर , सरोज , राजीव , कुवलय , अरविंद , जलज , सरसिज जलजात , पुंडरीक , शतदल , कंज , अब्ज , पद्य , नलिन

② काँच → शीशा , दर्पण , आबगीन , श्वेतरंजन , आईना।

③ कृतज्ञ → आभारी , उपकृत , कृतार्थ , अनुगृहीत , ऋणी।

④ किरण → मरीचि , रश्मि , दीप्ति , प्रभा , अंशु , केतु , कर अर्चि।

⑤ किशोर → तरुण , युवा , युवक , जवान।

⑥ कर → टैक्स , शुल्क , महसूल।

⑦ किसान → हलधर , कृषक , काश्तकार , खेतिहर।

⑧ किनारा → कूल , पुलिन , पर्यंत , तीर , तट , छोर।

⑨ कुबेर → अलकेश , यक्षराज , धनद , किन्नरेश , धनेश्वर धनपाल , धनराज , धनेश , धनाधिप।

(10) खरगोश → शशक, शश, खरहा।

(11) खल → शठ, दुष्ट, पामर, कुटिल, नृशंस, पामर
दुर्जन, धूर्त, अधम, चुगलखोर, धोखेबाज, नीच

(12) खर → गदहा, तिनका, तेज, एक राक्षस, प्रखर।

(13) खिड़की → गवाक्ष, झरोखा, बारी, वातायन, दरीचा।

(14) खगेश → वैनतेय, गरुड़, सर्पारि, नागांतक, हरियान

(15) गदहा → धूसर, खर, बैशाखनंदन, रासभ, चक्रीवान

(16) गाय → धेनु, गौरी, गइया, गौ, सुरभि, भद्रा।

(17) गुस्सा → क्रोध, अमर्ष, रोष, क्षोभ, कोप।

(18) गरीब → दरिद्र, निर्धन, अकिंचन, कंगाल, दीन।

(19) गणेश → विनायक, गणपति, एकदंत, लंबोदर, गजानन
मोदकप्रिय, मूषकवाहन, गजवदन, गौरीसुत, हेरम्ब
भवानीनंदन, विघ्ननाशक, महाकाय।

(20) गेह → गृह, सदन, भवन, निकेतन, घर, निलय,
आयतन, आगार, धाम, मकान, आलय, अयन

(21) चाँदनी → कौमुदी, ज्योत्सना, चंद्रिका, चंद्रकला,
अंजोरिया, जुन्हाई, चन्द्रातप, रोशनी।

(22) जूता → उपानह , पनही , खड़ाऊ , पदत्राण , चर्मपादुका

(23) जंगल → कान्तार , वन , कानन , अरण्य , विपिन , अटवी दाव ।

(24) गंगा → भागीरथी , मंदाकिनी , सुरसरिता , देवनदी , जाह्नवी , त्रिपथगा , अलकनंदा , सुरसरि , विष्णुपदी

(25) घास → तृण , तिनका , दूर्वा , दूब , कुश , शाद ।

(26) घोड़ा → तुरंग , अश्व , घोटक , सैंधव , हय , रविसुत वाजि, (बाजि) हरि ।

(27) चतुर → हाजिरजवाब , तीव्रबुद्धि , प्रवीण , फुर्तीला , नागर होशियार , विदग्ध , पटु , निपुण सयाना ।

(28) ढेर → ओघ , अंबार , राशि , पुंज , जमाव , समूह ।

(29) तालाब → पुष्कर , सरोवर , पोखर , सरसी , तड़ाग ताल , पद्माकर , हद , सर , कासार ।

(30) तरकश → निषंग , त्रोण , तूणीर , तूण ।

(31) तोता → सुआ , दाड़िमप्रिय , रक्ततुण्ड , शुक , कीर

(32) तलवार → करवाल , कृपाण , खड्ग , असि , चन्द्रहास तेग , शमशीर ।

(33) जल → नीर , अंबु , सलिल , पानी , तोय , वारि , पय

- अमृत , मेघपुष्प , उदक !

(35) जगत → विश्व , संसार , दुनिया , भव , भुवन , मृत्युलोक
जग , जहान !

[पर्यायवाची] Part-04 Class-70

① जीभ → रसना, जीव्हा, जुबान, रसज्ञा।

② झण्डा → पताका, केतु, निशान, ध्वज, केतन।

③ झूठ → अनृत, असत्य, मिथ्या, वितथ्य, अतथ्य।

④ टीका → व्याख्या, भाष्य, विवृत्ति, वृत्ति, भाषांतरण।

⑤ दूध → अमृत, क्षीर, पीयूष, दुग्ध, गोरस, पय।

⑥ दिनांक → मिती, तारीख, तिथि।

⑦ दर्पण → पारदर्शक, आइना, शीशा, प्रतिबिम्बक, आरसी, मुकुर, प्रतिमान।

⑧ दिन → वासर, वार, दिवस, दिवा।

⑨ द्वेष → बैर, शत्रुता, खार, विरोध, दुश्मनी, जलन, मात्सर्य, कुढ़न।

⑩ दुर्गा → चण्डिका, सिंहवाहिनी, कालिका, कल्याणी, कुमारी, कामाक्षी, सुभद्रा, महागौरी, नारायणी, भगवती, महामाया, भवानी, चण्डी, शक्ति, दुर्गे

⑪ मनीषी → पंडित, विद्वान, चिंतक।

⑫ द्रौपदी → कृष्णा, पांचाली, द्रुपदसुता, याज्ञसेनी।

(13) देवता → देव , अमर , सुर , बिबुध , आदित्य , निर्जर
गीर्वाण , त्रिदश , अमर्त्य ।

(14) नदी → सरिता , निर्झरिणी , तरंगिणी , पयस्विनी , लहरी
अपगा , निम्नगा , तटिनी , कल्लोलिनी , सरी ।

(15) नित्य → शाश्वत , अमर , अविनाशी , अमर्त्य , अनश्वर
सदा , सनातन , सर्वदा , सदैव , अहर्निश , रोज
प्रतिदिन , हमेशा ।

(16) नैसर्गिक → प्राकृतिक , स्वाभाविक , वास्तविक

(17) नौका → नाव , तरणी , डोंगी , पतंग , जलयान , तरी
बेड़ा , बनवाहन , नैया ।

(18) दास → अनुचर , भृत्य , सेवक , परिचर , नौकर , चाकर
किंकर ।

(19) दुःख → पीड़ा , व्यथा , कष्ट , क्लेश , वेदना , यातना
उद्वेग , खेद , विषाद , सन्ताप , क्षोभ , यन्त्रणा
संकट , शोक , उत्पीड़न ।

(20) पंकिल → मैला , मलिन , गंदला , गंदा , मटमैला ।

(21) पक्षी → विहग , खग , पंछी , द्विज , अण्डज , विहंग ,
पतंग , परिंदा , चिड़िया , पखेरू ।

(22) पण्डित → सुधी , विद्वान , कोविद , विचक्षण , सुविज्ञ , ज्ञानी
बुध , धीर , मनीषी , प्राज्ञ

(23) पत्थर → संग , प्रस्तर , पाहन , शिला , पाषाण , अश्म ।

(24) पुत्री → तनया , आत्मजा , सुता , लड़की , बेटी , दुहिता

(25) बंदर → कपि , कपीश , हरि , शाखामृग , मर्कट

(26) पार्वती → उमा , गौरी , शिवा , भवानी , गिरिजा , कुमारी
सती , अम्बिका , शैल-सुता , ईश्वरी , आर्या
सर्वमंगला , चण्डी , अपर्णा ।

(27) पृथ्वी → भू , भूमि , अचला , धरा , धरित्री , वसुंधरा ,
वसुधा , अवनि , मेदिनी , मही , प्रभूमि , जगती
क्षोणी , क्षिति , वसुमती , बीजप्रसु , इला ।

(28) फूल → कुसुम , सुमन , प्रसून , पुष्प , लतांत , मंजरी

(29) पवन → वायु , समीर , हवा , मारुत , प्रकम्पन , समीरण
वात , प्रभंजन , प्राण , अनिल , बयार , पवमान ।

(30) पर्वत → भूधर , गिरि , शैल , नग , भूमिधर , मेरु
महीधर , अचल , पहाड़ , तुंग ।

(31) पशु → जानवर , चौपाया , मवेशी , जन्तु , चतुष्पाद

(32) पुत्र → तनय , आत्मज , सुत , लड़का , बेटा , औरस , पूत

(33) पत्नी → भार्या , दारा , जाया , जोरू , वामा , परिणीता , कलत्र

(34) फौज → लश्कर , कटक , अनीकिनी , कुमक , अनीक , चमू सेना ।

(35) बाण → तीर , तोमर , विशिख , शिलीमुख , नाराच , शर इषु , सायक , आशुग ।

(36) बालिका → बाला , कन्या , बच्ची , लड़की ।

(37) बिजली → विद्युत , चपला , चंचला , सौदामिनी , तड़ित कौंचनवली , दामिनी , शम्पा , घनवल्ली , बीजुरी , क्षणप्रभा

(38) ब्रह्मा → पितामह , स्वंयभू , चतुरानन , विरंचि , विधि , स्रष्टा , प्रजापति , कमलासन , हिरण्यगर्भ , हंसवाहन लोकेश , कर्तार , सदानंद , अण्डज , गिरापति ।

(39) ब्राह्मण → विप्र , द्विज , भूसुर , भूदेव , महीसुर ।

(40) भ्रमर → मधुकर , मधुप , अलि , भृंग , भौंरा , षट्पद मधुराज , मधुभक्षी ।

(41) मार्ग → पथ , डगर , रास्ता , पंथ , सड़क , राह ।

(42) मछली → झष, जल-जीवन, मीन, मत्स्य, शफरी।

(43) महादेव → शिव, शम्भु, शंकर, महेश, गिरीश, चंद्रशेखर, रूद्र, नीलकंठ, त्रिलोचन, भूतनाथ, पशुपति, महेश्वरी, त्रिपुरारि, गिरिजापति, कपर्दी, वामदेव, कैलाशपति, शितिकंठ

(44) मुख → मुँह, मुखड़ा, चेहरा, आनन।

(45) मुर्गा → तमन्चुक, ताम्रचूड़, कुक्कुट, अरूणशिखा

(46) माँ → माई, अम्बिका, मातु, माता, मातरि, मैया, महतारि, अम्बा, जननी, जनयित्री, धात्री, प्रसू।

(47) मित्र → मीत, सखा, यार, हमदम, सुहृद, दोस्त।

(48) मेघ → धराधर, घन, जलधर, वारिद, जीमूत, पयोद।

(49) युवती → सुंदरी, श्यामा, तरूणी, यौवनवती, रमणी, नवयौव.

(50) रंक → निर्धन, धनहीन, दरिद्र, कंगाल, अकिंचन।

(51) रमणी → स्त्री, वनिता, नारी, औरत, वामा।

(52) रावण → दशकंध, दशानन, लंकेश, लंकाधिपति, दैत्येन्द्र, दशकण्ठ, दशवदन।

(53) लक्ष्मी → श्री, कमला, रमा, पद्मा, हरिप्रिया, इंदिरा, समुद्रजा।

पर्यायवाची — Part-05 — Class-71

① युवती → सुंदरी, श्यामा, तरुणी, यौवनवती, रमणी, नवयौवन

② रंक → निर्धन, धनहीन, दरिद्र, कंगाल, अकिंचन।

③ रमणी → स्त्री, वनिता, नारी, औरत, वामा, महिला।

④ लज्जा → व्रीड़ा, संकोच, लाज, शर्म, हया।

⑤ यती → संन्यासी, मुनि, वैरागी, संत, ऋषि, साधु, योगी

⑥ यमुना → कालिन्दी, अर्कजा, रवितनया, कृष्णा, कालगंगा
सूर्यसुता, भानुजा, तरणि, तनुजा, अर्कसुता।

⑦ मेंढक → दादुर, भेक, शालु, वर्षा, भू, मण्डूक, वर्षाप्रिय

⑧ मोर → मयूर, केकी, कलापी, शिखी, ध्वजी, नीलकंठ
सारंग।

⑨ मोक्ष → मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य, अपवर्ग, परमपद, परमधाम

⑩ रात → निशीथ, रैन, रात्रि, रजनी, क्षपा, यामिनी, विभावरी
शर्वरी, तमी, त्रियामा, तमिस्त्रा, क्षणदा।

⑪ लहर → तरंग, हिलोर, लहरी, ऊर्मि, प्रवाह, वेग, वीचि।

⑫ वंश → कुल, घराना, खानदान।

⑬ विष्णु → गरुड़ध्वज, अच्युत, जनार्दन, चक्रपाणि, मुकुंद
नारायण।

- अमृत , मेघपुष्प , उदक !

(34) जगत → विश्व , संसार , दुनिया , भव , भुवन , मृत्युलोक
जग , जहान !

(14) विवाह → ब्याह , पाणिग्रहण , परिणय , शादी , गठबंधन
निकाह , गठजोड़ !

(15) सर्प → अहि , भुजंग , मणिधर , विषधर , व्याल , फणी ,
उरग , पन्नग , साँप !

(16) सरस्वती → भारती , शारदा , वीणा , गिरा , ब्राह्मी , वीणापाणि
वागीश !

(17) सिंह → शार्दूल , हरि , केहरी , केशरी , मृगराज , मृगेन्द्र
वनराज , व्याघ्र , केशी , नाहर , मृगारि , शेर !

(18) सीता → भूमिजा , वैदही , जनकतनया , जानकी , रामप्रिया
जनकसुता !

(19) सुअर → वराह , सूकर !

(20) सौम्य → नम्र , शांत , विनीत , शिष्ट , मिलनसार !

(21) स्थावर → अटल , अचल , स्थिर , निश्चल , दृढ़ !

(22) हिमालय → हिमगिरि , हिमपति , हिमाद्रि , नगराज , शैलेन्द्र
नगपति , गिरिराज !

(23) हिरण → मृग, सारंग, हरिण, सुरभी, कुरंग।

(24) हिम → तुषार, नीहार, बर्फ, तुहिन।

(25) अधीर → बेचैन, अद्विग्न, आकुल, व्यग्र, अशांत, उतावला

(26) अमर → अनश्वर, नित्य, सनातन, अविनाशी।

(27) स्वर्ग → द्यौ, देवलोक, सुरलोक, इन्द्रपुरी, वैकुण्ठ।

(28) हंस → मराल, सरस्वतीवाहन, कलकंठ।

(29) हनुमान → पवन कुमार, महावीर, रामदूत, मारुतिनंदन
आंजनेय, कपीश, पवनपुत्र, बजरंगबली, केशरीनंदन

(30) हाथी → हस्ती, गज, करी, कुंजर, द्विरद, नाग, दन्ती
कुम्भी, सिंधुर, मतंग, वितुण्ड, द्विप, वारण, गयंद।

(31) उद्देश्य → ध्येय, निमित्त, मकसद, प्रयोजन, हेतु, तात्पर्य
अभिप्राय।

(32) ऊसर → अनुपजाऊ, सस्यहीन, बंजर।

(33) कछुआ → कूर्म, कमठ, कच्छप।

(34) कबूतर → कपोत, परेवा, पारावत।

(35) झगड़ा → कलह, टंटा, तकरार, विवाद।

(36) तंबू → खेमा, डेरा, वितान, शामियाना।

(37) छल → प्रपंच, फरेब, चकमा, झांसा।

(38) जीत → फतह , विजय , जय ।

(39) कुत्ता → सारमेय , सोनहा , शुनक , श्वान , कुक्कुर ।

(40) केला → कदली , भानुफल , काष्ठीला , रम्भा ।

(41) घी → घृत , नवनीत

(42) तीखा → प्रखर , तीक्ष्ण , पैना ।

(43) दरवाजा → पल्ला , कपाट , पट , किवाड़ ।

(44) बर्बर → असभ्य , अशिष्ट , उद्दत ।

(45) गंभीर → गूढ़ , जटिल , दुरूह , क्लिष्ट ।

(46) चूहा → गणेशवाहन , मूषक , आखु , उंदुर ।

(47) बगीचा → उपवन , उद्यान , वाड़ी ।

(48) अमृत → अमी , अमिय , पीयूष , सुधा ।

Rojgar with ankit

हिन्दी

{ज्वाला बैच
अग्नि बैच}

पर्यायवाची अभ्यास प्रश्न

1. सरस्वती के पर्यायवाची शब्द से वाक्य की पूर्ति कीजिए ।
प्रात: काल **शारदा** का स्तोत्र पढ़िए ।

2. निम्न में से कौन-सा शब्द 'हाथ' का पर्यायवाची शब्द नहीं है ?
(a) कर (b) पाणि (c) बाहु (D) दन्त

3. निम्न में से कौन-सा शब्द 'कुबेर' का पर्यायवाची शब्द नहीं है ?
(a) किन्नरपति (b) धनाधिप (c) यक्षराज (D) मुनि

4. निम्नलिखित वाक्य में रेखांकित शब्द का पर्यायवाची नहीं है ,
रासबिहारी बोस दिल्ली 'षड्यन्त्र' के मुख्य अभियुक्त थे ।
(a) कुचक्र (b) साजिश (c) साजिद (D) दुरभिसंधि

5. भगवान 'दिवाकर' जीवनदायी हैं : रेखांकित का पर्यायवाची है ,
(a) शशि (b) अब्ज (c) नयन (D) सूर्य

6. निम्न में से 'जल' का पर्यायवाची है ?
(a) अंबुधि (b) नीरज (c) वारिज (D) नीर

7. गंगा नदी भारत देश मे हजारों लोगो की जीवनदायिनी है :
'गंगा' का पर्यायवाची नहीं है ,
(a) सुरसरिता (b) देवपगा (c) हंसजा (D) विष्णुपदी

8. सिंह की सवारी सबके बस की बात नहीं है. रेखांकित शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है।
(a) मणि (b) सिंह (c) वनराज (D) केसरी

9. 'सुरभी' का पर्यायवाची बताइए।
(a) हिरण (b) गाय (c) शेर (D) कुत्ता

[सुरभी - हिरण
सुरभि - गाय

10. 'अग्नि' का पर्यायवाची नहीं है?
(a) अनल (b) अभंग (c) हुताशन (D) पावक

11. 'अकस्मात' शब्द का पर्यायवाची है?
(a) अचानक (b) अदृश्य (c) आकाश (D) अनिवार्य

12. 'हवा' शब्द का पर्यायवाची शब्द है?
(a) सर (b) वासव (c) गजराज (D) बयार

13. तुम्हारे चले जाने से मुझे बहुत 'दुख' हुआ, रेखांकित शब्द का पर्यायवाची है?
(a) व्यथा (b) तापस (c) ईप्सा (D) बेशर

14. भगवान 'इंद्र' स्वर्ग के राजा हैं। रेखांकित शब्द का पर्यायवाची है।
(a) सुरेश (b) खगेश (c) माधव (D) इंदु

15. 'कमल' का पर्यायवाची है।
(a) नीरद (b) कंचन (c) जलद (D) राजीव

16. 'बिजली' का पर्यायवाची शब्द नही है।
(a) चंचला (b) तटिनी (c) दामिनी (D) तड़ित

17. 'नाव' का पर्यायवाची है।
(a) रैन (b) कश्ती (c) रेत (D) तरु

18. 'चन्द्रमा' का पर्यायवाची शब्द है।
(a) अंशुमाली (b) दिनकर (c) शशि (D) घोटक

19. 'किनारा' का पर्यायवाची है ?
(a) पानी (b) तट (c) तारिका (D) आलय

20. 'जंगल' शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है।
(a) कांतार (b) अयस (c) विपिन (D) कानन

21. 'लक्ष्य' शब्द का पर्यायवाची शब्द नही है।
(a) उद्देश्य (b) भवन (c) मंजिल (D) निशाना

22. 'पंडित' शब्द का सही पर्यायवाची शब्द प्रयोग किया गया है।
(a) मनीशी मेरे द्वार पर आये है। (b) मनिषी मेरे द्वार पर आये है।
(c) मनीषी मेरे द्वार पर आये है। (D) मनीसी मेरे द्वार पर आये है।

23. 'पयोद' शब्द का पर्यायवाची शब्द है।
(a) जलधर (b) वारिश (c) मलिन (D) सहचर

24. 'किरण' का पर्यायवाची है।
(a) अंसु (b) रश्मि (c) रस्मि (D) किरन

25. 'जल' ही जीवन है रेखांकित शब्द का पर्यायवाची है।
(a) दृग (b) हर (c) मतंग (D) पानी

→ [वाक्यांश के लिए एक शब्द] ← (Class-73)

→ परिभाषा

* जो अनेक शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें वाक्यांश कहते हैं।
* वाक्यांश एक वाक्य का अंश होता है।
* और वे अपना अर्थ प्रकट करते हैं।
* यह अपनी बात कहने की एक कला होती है।
* ऐसे शब्दों से अपनी भाषा को संक्षिप्त रूप दिया जाता है
* वाक्यांश के माध्यम से भाषा को सुंदर बनाया जाता है और वाक्यांश के माध्यम से भाषा में सुन्दरता व्यक्त होती है।

Ex- ① जिसका इस दुनिया में कोई न हो → अनाथ

② जिसके इस दुनिया में सब हैं। → सनाथ

③ जो आँखो के सामने हो → प्रत्यक्ष

④ जो आँखो से परे हो → परोक्ष / अप्रत्यक्ष

⑤ जिसको भय न हो → निर्भय / निडर

⑥ जिसके पास बहुत धन हो → धनाढ्य / धनवान

7. जिसके पास कुछ भी न हो → अकिंचन/निर्धन, दीन
8. ऊपर कहा गया → उपर्युक्त
9. नीचे कहा हुआ → अधोलिखित
10. व्याकरण जानने वाला → वैयाकरण
11. जो कभी न मरे → अमर
12. जो कभी बूढ़ा न हो → अजर
13. जिसे कोई हरा न सके → अजेय
14. जहाँ कोई न जा सके → अगम्य
15. जहाँ जाना कठिन हो → दुर्गम
16. ईश्वर में विश्वास रखने वाला → आस्तिक
17. ईश्वर में विश्वास न रखने वाला → नास्तिक
18. जो दिखाई न दे → अदृश्य
19. जिसका कोई शत्रु न हो → अजातशत्रु
20. बिना वेतन काम करने वाला → अवैतनिक
21. लौह पथ गामिनी → रेलगाड़ी
22. जहाँ अनाथ बच्चे रहते हो → अनाथालय
23. गायों के रहने का स्थान → गौशाला
24. प्रतिदिन होने वाला → दैनिक
25. सप्ताह में एकबार होने वाला → साप्ताहिक
26. पंद्रह दिन में एक बार होने वाला → पाक्षिक

27. एक माह में होने वाला → मासिक
28. एक वर्ष में होने वाला → वार्षिक
29. 100 वर्षों में एक बार होने वाला → शताब्दी
30. उत्तर, पूर्व के बीच का कोण (दिशा) → ईशान कोण
31. पूर्व, दक्षिण के बीच की दिशा → आग्नेय
32. द०, पश्चिम के बीच की दिशा → नैऋत्य
33. उत्तर, पश्चिम के बीच की दिशा → वायव्य

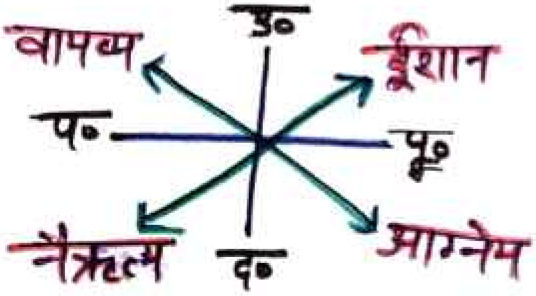

34. उपकार मानने वाला → कृतज्ञ
35. उपकार न मानने वाला → कृतघ्न
36. लेख लिखने वाला → लेखक
37. लेख लिखने वाली → लेखिका
38. छः माह में होने वाला → छमाही
39. जिसका कोई आकार न हो → निराकार
40. जिसका आकार हो → साकार
41. जो भूमि से उपजा हो → उर्वरा
42. जो भूमि उपजाऊ न हो → ऊसर / अनुर्वरा (बंजर)
43. जो काम कठिन हो → दुस्कर

(५४) जो काम कठिन हो → दुस्कर

(५५) गोद लिया पुत्र → दत्तक पुत्र

(५६) सत्य बोलने वाला → सत्यवादी

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

Part-02

Class-74

1. वह कवि जो तत्काल कविता करे → आशुकवि
2. किसी विषय पर तत्काल बोलना → आशुभाषण
3. अंडे से जन्म लेने वाला → अंडज
4. जिसे वचन द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सके → अनिर्वचनीय
5. जो सबके आगे रहता हो → अग्रणी
6. जिसकी गिनती पहले हो → अग्रगण्य
7. जिसमें शक्ति न हो → अशक्त
8. जिसकी आयु कम हो → अल्पायु
9. जो दिखाई न दे → अदृश्य
10. जिसे बुलाया न गया हो → अनाहूत
11. जिसकी आशा न की जाए → अप्रत्याशित
12. बिना देख-रेख का जानवर → अनेर
13. जिसका मूल्य न आँका जा सके → अमूल्य
14. फूल की रज → पराग
15. जो मुकदमा दायर करता है → वादी
16. वह स्थान जहाँ से यमुना निकलती है। → यमुनोत्री
17. वह स्थान जहाँ से गंगा निकलती है → गंगोत्री
18. पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उदय होता है → उदयांचल

19 बहुत बोलने वाला → वाचाल
20 जो अचानक आँखों से ओझल हो गया हो → अंतर्धान
21 आय व्यय के आंकड़ों की जाँच करने वाला → अंकेक्षक
22 जहाँ जाया न जा सके → अगम्य
23 जिसे सुना न जा सके → अश्राव्य
24 जिसमें सबकी सम्मति हैं, → सर्व सम्मति
25 दो बार जन्म लेने वाला → द्विज
26 पहले जन्म लेने वाला → अग्रज
27 परलोक से संबंध रखने वाला → पारलौकिक
28 जिसके आने की तिथि न हो → अतिथि
29 जिसका इलाज न हो सके → असाध्य
30 जो भेदा न जा सके → अभेद्य
31 अंक में स्थान पाया हुआ → अंकस्थ
32 आग में झुलसा हुआ → अनलदग्ध
33 दोपहर के बाद का समय → अपराह्न
34 जिस पर आक्रमण न किया गया हो → अनाक्रांत
35 जिसका कभी अंत न हो → अनंत
36 पहला पहर → पूर्वाह्न
37 दूसरा पहर → मध्याह्न
38 तीसरा पहर → अपराह्न
39 चौथा पहर → प्रदोषकाल
40 दूसरों के दोष को खोजने वाला → छिद्रान्वेषी
41 दो पहाड़ों के बीच का खाली स्थान → घाटी
42 जिसकी रक्षा न की जाती हो → अरक्षित

(43) नगर में रहने वाला → नागरिक
(44) किसी वाद का विरोध करने वाला → प्रतिवादी
(45) जिससे किसी प्रकार की हानि न हो → निरापद
(46) जहाँ आसानी से पँहुचा जा सके → सुगम
(48) हाथ से लिखी एक भी पुस्तक → पांडुलिपि
(49) देवताओं का उपवन → नंदन कानन
(50) बाह्य संसार के ज्ञान से अनभिज्ञ हो → अलोकज्ञ
(51) जिसकी पत्नी मर गई हो → विधुर
(52) जो माफ करने योग्य नहीं हो → अक्षम्य
(53) किसी कार्य में निपुण → पारंगत
(54) वह व्यक्ति जो छुटकारा दिलाता है। → त्राता
(55) विदेश में सामान बेचना → निर्यात
(56) ऊपर कहा गया → उपर्युक्त
(57) जो सहनशील न हो → असहिष्णु
(58) स्त्री जो कविता लिखती हो → कवयित्री
(59) द्रुपद की पुत्री → द्रोपदी
(60) नयन बिल्कुल हिरणी से → मृगनयनी
(61) जो किसी भी गुट में नहीं हो → तटस्थ
(62) बहुत अधिक खर्च करने वाला → अपव्ययी
(63) किसी से लगाव ही नहीं रखने वाला → निर्लिप्त
(64) पिता या पूर्वजों से प्राप्त संपत्ति → पैतृक संपत्ति
(65) सबके मन की बात जानने वाला → अन्तर्यामी

66 कम बोलना → मितभाषी

67 विदेश से सामान खरीदना → आयात

68 दूर से फेंककर चलाया जाने वाला हथियार → अस्त्र

69 हाथ से फेंककर चलाया जाने वाला हथियार → शस्त्र

70 कभी न निष्फल होने वाला → अमोघ

71 'जो दूसरों के अधीन हो' → पराधीन

72 'जो जन्म से अंधा हो' → जन्मांध

73 'जो मोक्ष चाहता हो' → मुमुक्षु

74 जीतने की इच्छा → जिगीषा

75 अपनी हत्या करने वाला → आत्मघाती

76 जो स्त्री विद्वान हो → विदुषी

77 पूछने योग्य → प्रष्टव्य

78 जो पुरुष पढ़ा लिखा हो → विद्वान

[वाक्यांश के लिए एक शब्द] Part-03

Class-75

1. महल का भीतरी भाग → अंतः पुर
2. गुरु के समीप रहकर शिक्षा ग्रहण करने वाला → अंतेवासी
3. कनिष्ठिका या मध्यमा के बीच की अंगुली → अनामिका
4. बढ़ा चढ़ा कर कहना → अतिशयोक्ति
5. जिसका अनुभव किया गया हो → अनुभूत
6. परंपरा से चली आ रही कथा → अनुश्रुति
7. जो भूमि उपजाऊ हो → उर्वर
8. जो भविष्य की बात सोचता हो → अग्रसोची
9. धरती और आकाश के बीच का स्थान → अंतरिक्ष
10. जो कानून के विरुद्ध हो → अवैध
11. जो सदा से चला आ रहा है → अनवरत
12. जिस पुस्तक में 8 अध्याय हो → अष्टाध्यायी
13. किसी मत या कार्य पर सहमति प्रकट करना → अनुमोदन
14. जिसे जीता न जा सके → अजेय
15. जो स्त्री सूर्य भी न देख सके → असूर्यपश्या
16. धन से संबंध रखने वाला → आर्थिक
17. गुण दोषों का विवेचन करने वाला → आलोचक
18. गंगा से उत्पन्न → गांगेय

(19) जिनका संबंध अध्यात्म से है → आध्यात्मिक
(20) विशिष्ट अवसर पर विशिष्ट लोगो के समक्ष दिया गया विद्वतापूर्ण भाषण → अभिभाषण
(21) आदि से अंत तक → आद्योपांत
(22) जो क्षीण न हो सके → अक्षय
(23) जिसका कोई पार न हो → अपार
(24) आकाश से तारे का टूटना → उपप्लव
(25) ऊपर की ओर उछाला हुआ → उत्क्षिप्त
(26) छाती के बल चलने वाला → उरग
(27) जो किए गए उपकारों को न मानता हो → कृतघ्न
(28) जो कल्पना से परे हो → कल्पनातीत
(29) तीनों कालों की बात जानने वाला → त्रिकालज्ञ
(30) देखने की इच्छा → दिदृक्षा
(31) दिशाएँ ही जिनका वस्त्र है → दिगम्बर
(32) जिसके पेट में माँ ने रस्सी (दाम) बाँध दी हो → दामोदर
(33) झगड़ा लगाने वाला मनुष्य → नारद
(34) जहाँ खाना मुफ्त मिलता हो → सदाव्रत
(35) उच्च कुल में पैदा व्यक्ति → कुलीन
(36) जो बाएँ हाथ से सधा हुआ हो → सव्यसाची
(37) मदिरा पीने का प्याला → चषक
(38) जो नभ में चलता है → खेचर
(39) जिसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हो → आजानुबाहु
(40) अवसर के अनुरूप बदल जाने वाला → अवसरवादी

41. जिसकी कोई शत्रु नही जन्मा है → अजातशत्रु
42. खोज करने वाला → अन्वेषक
43. जिस पर अनुग्रह किया गया हो → अनुग्रहीत
44. वह भाई जो अन्य माता से उत्पन्न हुआ हो → अन्योदर
45. जिसका निवारण न हो सके → अनिवार्य
46. अपने जीवन पर स्वंय लिखी कथा → आत्मकथा
47. जो शुद्ध न किया गया हो → अपरिमार्जित
48. तिलक लगाने में किस अन्न का प्रयोग → अक्षत
49. जिसका जन्म छोटी जाति में हुआ हो → अंत्यज
50. बहुत कम बरसात होना → अनावृष्टि
51. जिसकी ग्रीवा सुंदर हो → सुग्रीव
52. दूसरों की बातों में दखल देना → हस्तक्षेप
53. मृत्यु को जीतने वाला → मृत्युंजय
54. पत्थर को गढ़ने वाला औजार → छेनी
55. किसी एक में ही आस्था रखने वाला → अनन्य
56. हवन में जलाई जाने वाली लकड़ियां → समिधा
57. जो विद्यार्थी पढ़ाने का कार्य करता हो → शिक्षक
58. जो गिना न जा सके → अनगिनत
59. जो इंद्रियों से परे हो → अतीन्द्रिय
60. जो अपनी जगह से न डिगे → अडिग
61. जिसे पार करना कठिन हो → दुस्तर
62. जो उचित समय पर न हो → असामयिक
63. जो पहरा देता है → प्रहरी

64. जिस पेड़ के पत्ते झड़ गए हों → अपर्ण
65. जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा न हो → अगोचर, अतींद्रिय
66. साधारण या व्यापक नियम के विरूद्ध चीजें → अपवाद
67. क्रम के अनुसार → यथाक्रम
68. जिसमें दया की भावना न हो → निर्दय
69. पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि → अधित्यका
70. चार भुजाओं वाला → चतुर्भुज
71. आधे से अधिक लोगों की मिलकर एक राय → बहुमत
72. बिना विचार किया गया विश्वास → अंधविश्वास
73. अपने ही कुल का नाश करने वाला → कुलांगार

[वाक्यांश के लिए एक शब्द] Part-04

(Class-76)

① कठिनाई से होने वाला कार्य → कष्टसाध्य
② जिसकी गहराई का पता न लग सके → अगाध
③ जो निगाह से परे हो → परोक्ष
④ मरने की इच्छा → मुमूर्षा
⑤ जिसके पार देखा न जा सके → पारदर्शक
⑥ ऊपर की ओर जाने वाला → ऊर्ध्वगामी
⑦ जिसकी सीमा न हो → असीम
⑧ जो समान न हो → विषम, असमान
⑨ राजनीतिज्ञों व राजदूतों की नीति संबंधी कला → कूटनीति
⑩ शरीर का कोई भाग → अवयव
⑪ वह धन जो आधिकारिक रूप से राज्य को मिलता हो → राजस्व
⑫ बिना स्वार्थ कार्य करने वाला → निःस्वार्थ
⑬ जिसकी तुलना किसी से न की जा सके → अतुलनीय
⑭ रजोगुण वाले व्यक्ति → राजसिक
⑮ समस्त पृथ्वी से संबंध रखने वाला → सार्वभौमिक
⑯ विरह से उत्पन्न अग्नि → विरहाग्नि
⑰ जहां तक सके → यथासंभव
⑱ जिसका मन दूसरी ओर लगा हो → अन्यमनस्क

(19) नवीन बनाने की क्रिया → आधुनिकीकरण
(20) युद्ध करने की इच्छा → युयुत्सा
(21) युद्ध की इच्छा रखने वाला → युयुत्सु
(22) सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा → एषणा
(23) जिंदा रहने की इच्छा → जिजीविषा
(24) भूतों अर्थात जीवों द्वारा होने वाला दुःख → आधिभौतिक
(25) खाने की इच्छा → बुभुक्षा
(26) करने की इच्छा → चिकीर्षा
(27) तैरने की इच्छा रखने वाला → तितीर्षु
(28) खाने की इच्छा रखने वाला → बुभुक्षु
(29) पीने की इच्छा → पिपासा
(30) पीने की इच्छा रखने वाला → पिपासु
(31) जानने की इच्छा → जिज्ञासा
(32) जानने की इच्छा रखने वाला → जिज्ञासु
(33) मरने की इच्छा रखने वाला → मुमूर्षु
(34) तैरने की इच्छा → तितीर्षा
(35) जो किसी के समान हो → तुल्य
(36) विवाहित पत्नी से जन्म लेने वाली संतान → औरस
(37) गैर विवाहित पत्नी से जन्म लेने वाली संतान → जारज
(38) पहले जन्म लेने वाली बड़ी बहन → अग्रजा
(39) हथिनी की तरह चलने वाली स्त्री → गजगामिनी

(५०) हवन की अग्नि → हवि
(५१) मछली जैसी आँखों वाली → मीनाक्षी
(५२) मृग जैसी आँखों वाली → मृगनयनी

वाक्यांश अभ्यास प्रश्न

Part-05

Class-77

① देश में विदेश से माल आने की क्रिया → आयात

② धन से संबंध रखने वाला → आर्थिक

③ गुण-दोषों का विवेचन करने वाला → आलोचक

④ जिनका संबंध आध्यात्म से है। → आध्यात्मिक

⑤ अपने जीवन पर स्वंय लिखी कथा → आत्मकथा

⑥ जिसका जन्म छोटी जाति (निचले वर्ण) में हुआ हो → अंत्यज

⑦ आदि से अंत तक → आद्योपांत

⑧ गोद में सोने वाली स्त्री → अंकशायिनी

⑨ अवसर के अनुरूप बदल जाने वाले → अवसरवादी

⑩ वह स्त्री जो छिपकर अपने प्रिय से मिलने जाती है → अभिसारिका

⑪ परंपरा से चली आ रही बात → अनुश्रुति

⑫ जिसका कोई शत्रु नहीं जन्मा है → अजातशत्रु

⑬ पूरब और उत्तर के बीच की दिशा → ईशान

⑭ आकाश से तारे का टूटना → उपप्लव

⑮ पर्वत की तलहटी → उपत्यका

⑯ ऊपर की ओर उछाला हुआ → उत्क्षिप्त

⑰ बहुत कम बरसात होना → अल्पवृष्टि

⑱ अपनी विवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र → औरस

(19) कंजूसी से धन व्यय करने वाला → मितव्ययी
(20) उत्तराधिकार में प्राप्त संपत्ति → रिक्थ
(21) मदिरा पीने का प्याला → चषक
(22) जिसके शिर पर चंद्रमा हो → चंद्रशेखर
(23) जो हर समय दूसरों की बुराइयाँ खोजता हो → छिद्रान्वेषी
(24) जो बात लोगों से सुनी गई हो → जनश्रुति
(25) तैरने या पार करने का इच्छुक → तितीर्षु
(26) भूसी की आग → तुषाग्नि
(27) शक्तिशाली, दयालु, शांतधीर, योद्धा नायक → धीरोदात्त
(28) आधी रात का समय → निशीथ
(29) रंगमंच के पर्दे के पीछे का स्थान → नेपथ्य
(30) जो मुकदमा दायर करता है → वादी
(31) वह स्थान जहां से यमुना निकलती है → यमुनोत्री
(32) दो बार जन्म लेने वाला → द्विज
(33) सौ वर्ष का समय → शताब्दी

मुहावरे एवं लोकोक्ति

Class → 78

मुहावरा	लोकोक्ति
* मुहावरा 'अरबी' भाषा का शब्द है।	* (लोक + उक्ति) यह हिंदी भाषा का शब्द होता है।
* मुहावरा का शाब्दिक अर्थ 'अभ्यास करना' होता है।	* इसका अर्थ - 'कहावत' होता है।
* मुहावरा छोटा होता है।	* लोकोक्ति बड़ी होती है।
* मुहावरा एक 'वाक्यांश' होता है।	* लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है।
* मुहावरे का प्रयोग वाक्य में किसी भी स्थान पर किया जा सकता है।	* लोकोक्ति का प्रयोग केवल वाक्य के अंत में किया जाता है।
* मुहावरे के अंत में 'प्रत्यय' आता है।	* इसमें कोई भी प्रत्यय नहीं आता
* मुहावरा स्वतंत्र नहीं होता	* लोकोक्ति स्वतंत्र होती है।
* मुहावरे के एक से ज्यादा अर्थ निकलते हैं।	* लोकोक्ति जैसा बोली जाती है, वैसा ही अर्थ देती है।
* मुहावरा 'गद्यात्मक' होता है।	* यह 'गद्यात्मक' एवं 'पद्यात्मक' दोनों होती है।

* मुहावरा काल, वचन, पुरुष के आधार पर बदल जाता है।
* लोकोक्ति नहीं बदली जाती।

उदा०- ① अंगूठा दिखाना → मुहावरा

② काला अक्षर भैंस बराबर → लोकोक्ति

मुहावरे एंव लोकोक्ति

① अंगारों पर पैर रखना →	खतरनाक काम करना
② अढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना →	सबसे अलग सोच-विचार रखना।
③ अक्ल का दुश्मन होना →	मूर्ख होना / अज्ञानी होना
④ अधर में लटकना या झूलना →	दुविधा में पड़े रह जाना।
⑤ अन्धे के आगे रोना →	व्यर्थ प्रयत्न करना।
⑥ ओस चाटे प्यास नहीं बुझती →	बहुत कम से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है।
⑦ अक्ल का पुतला →	अधिक बुद्धिमान
⑧ अंतर के पट खोलना →	हृदय की बात कह देना
⑨ अधजल गगरी छलकत जाए →	कम ज्ञान सम्मान वाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं।

10. अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम →	ईश्वर सभी आवश्यकताओं को पूरी करता है।
11. अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान →	ईश्वर की कृपा से नाकाबिल भी काबिल हो जाता है।
12. आया है जो जाएगा राजा रंक फकीर →	एक दिन सभी को मरना है।
13. आधा तीतर आधा बटेर →	बेमेल होना, सुचारु रूप से नहीं
14. आग में घी डालना →	क्रोध भड़काना
15. आसमान पर थूकना →	अच्छे व्यक्ति को कलंकित करना
16. आस्तीन का साँप →	विश्वासघाती मित्र
17. आँखों में चर्बी चढ़ना →	अधिक घमण्ड होना
18. इति श्री करना →	समाप्त करना / श्रीगणेश (आरंभ)
19. इज्जत उतारना →	मट्टी पलीत करना / तिरस्कार करना
20. उड़ती चिड़िया के पंख गिनना →	विशेष जानकारी प्राप्त कर लेना
21. ऊँट के मुंह में जीरा →	अपर्याप्त वस्तु

मुहावरे एवं लोकोक्ति

[Part-02] Class-79

① ऊँची दुकान फीके पकवान → आडम्बर ही आडम्बर
② कुएँ में भांग पड़ना → सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना
③ कान का कच्चा होना → हर एक की बात मान लेना
④ कागजी घोड़े दौड़ाना → केवल लिखा-पढ़ी करते रहना
⑤ कूच कर जाना → चले जाना - मर जाना
⑥ कुएं में बाँस डालना → बहुत तलाश करना
⑦ काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती → कपटपूर्ण व्यवहार एक बार ही चलता है।
⑧ काँटों में घसीटना → संकट में डालना
⑨ करवटें बदलना → बेचैन रहना
⑩ कोल्हू का बैल → खूब परिश्रमी / बेहद मेहनती
⑪ किस खेत की मूली → अधिकारहीन, शक्तिहीन, तुच्छप्राणी
⑫ खून का प्यासा → जान से मारने पर उतारू
⑬ खोदा पहाड़ निकली चुहिया → अधिक परिश्रम के बाद साधारण लाभ
⑭ ख्याली पुलाव से पेट नहीं भरता → केवल सोचते रहने से काम नहीं होता
⑮ खून के घूँट पीना → अपमान सहना
⑯ खाल खींचना → बहुत पीटना
⑰ गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है → बुरे के साथ नेक भी
⑱ गड़े मुर्दे उखाड़ना → प्रतिवाद करना (विरोध करना, बरबाद करना)

(19) गर्दन उठाना → प्रतिवाद करना
(20) गज भर की छाती होना → उत्साहित होना
(21) घर खीर तो बाहर भी खीर → धनवान की इज्जत सब करते हैं।
(22) घर में गंगा बहाना → घर में सभी सुविधाएँ होना
(23) घी - खिचड़ी होना → खूब मिलजुल जाना
(24) चिकने मुँह को सब चूमते हैं → सामर्थ्यवान के सब साथी हैं।
(25) चोर की दाढ़ी में तिनका → अपराधी सदैव सशंकित रहता है।
(26) चंडाल चौकड़ी → निकम्मे बदमाश लोग
(27) चाँदी का जूता मारना → रिश्वत या घूस देना
(28) चुल्लू भर पानी में डूब मरना → अत्यंत लज्जित होना
(29) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात → सुख क्षण-भंगुर होता
(30) छोटे मियाँ, छोटे मियाँ बड़े मियाँ सुभान अल्लाह → छोटे से बड़ा अवगुणों में भारी
(31) जादू वही जो सिर पर चढ़ कर बोले → सत्यता छिपाई नहीं जा सकती
(32) जी अच्छा होना → तबियत ठीक होना
(33) जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि → कवि की कल्पना सूक्ष्म और व्यापक होती है।
(34) जितने डफली उतने राग → भिन्न-भिन्न मत होना।
(35) जिसकी लाठी उसकी भैंस → शक्तिशाली व्यक्ति की ही विजय होती है।
(36) जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ → दो व्यक्तियों का एक साथ अवगुणी होना।

(37) जैसी करनी वैसी भरनी → कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति

(38) जो गरजते हैं वो बरसते नहीं → डींग मारने वाले कभी काम नही करते

(39) जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारो → सामर्थ्य के अनुसार काम करना

(40) जड़ काटते जाएं पानी देते जाएं → भीतर से दुश्मन ऊपर से दोस्त

(41) जोगुड़ खाये सो कान छिदाये → लाभ पाने वाले को कष्ट सहना पड़ता है।

(42) जी का जंजाल होना → अच्छा न लगना

(43) जहर की पुड़िया → झगड़ालू औरत

(44) जहाँ जाए भूखा वहाँ पड़े सूखा → भाग्यहीन को कहीं सुख नहीं मिलता

(45) झूठ के पाँव नही होते → झूठा व्यक्ति बात पर स्थिर नहीं रह पाता

(46) टके की मुर्गी नौ टके महसूल → कम कीमती वस्तु अधिक मूल्य पर देना

(47) टका सा जवाब देना → साफ इंकार करना

(48) टिप्पस लगाना → सिफारिस करवाना

(49) टेढ़ी उँगली से घी निकालना → बलपूर्वक काम निकालना चतुराई पूर्वक कार्य करना

(50) ठकुर-सुहाती करना → हाँ में हाँ मिलाना

(51) ठठेरे-ठठेरे बदलौअल → धूर्त का धूर्त से चाल चलना

(52) ड्योढी का खुलना → दरबार में आने-जाने को मिलना

(53) ढाक के वही तीन पात → सुख: या दु:ख दोनों में समान
(54) ढोल के भीतर पोल → केवल ऊपरी दिखावा
(55) तख्ता उलटना → अपदस्थ होना
(56) तालू से जीभ न लगना → बोलते रहना (वाचाल)
(57) दंतकथा → निराधार बात
(58) दाँत खट्टे करना → पराजित करना
(59) दाँतो तले उँगली दबाना → आश्चर्य चकित होना
(60) द्रोपदी का चीर होना → अन्त न होना
(61) दुर के ढोल सुहावने → वास्तविकता दुर से ही अच्छी लगती है।
(62) दिन भर चले अढ़ाई कोस → समय अधिक लगना काम कम हो
(63) दादा कहने से बनिया गुड़ देता है → मधुर जुबान से काम बन जाता है।
(64) दिल्ली दुर है → सफलता में देरी है।
(65) दुध का दुध पानी का पानी → निष्पक्ष न्याय
(66) दो नाव पर पैर रखना → दुविधापूर्ण स्थिति होना
(67) देवता कुचकर जाना → घबरा जाना
(68) धूप मे बाल सफेद होना → अनुभवहीन होना
(69) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का → जो कहीं का न हो
(70) धोती ढीली होना → घबरा जाना
(71) धरती पर पाँव न रखना → घमंडी होना/अहंकारवादी होना।

ROJGAR WITH ANKIT

मुहावरे एंव लोकोक्ति

Part-03

Class-80

① धज्जियां उड़ाना → नष्ट, भ्रष्ट करना
② नदी नाव संयोग → थोड़े समय का साथ
③ नौ की लकड़ी नब्बे खर्च → वस्तु के मूल्य से उसके रख-रखाव का खर्च अधिक
④ भाई की बारात में जने-जने ठाकुर → जहाँ सभी नेता हो
⑤ निन्यानवे के फेर में पड़ना → धन संग्रह की चिंता में पड़ना
⑥ नाक का बाल होना → किसी का प्रिय होना।
⑦ नाक रगड़ना → दीनता पूर्वक प्रार्थना करना
⑧ पानी का बुलबुला → क्षण भंगुर
⑨ पेट में दाढ़ी होना → छोटी उम्र में बहुत ज्ञान होना
⑩ पत्थर की लकीर → अत्यंत सत्य
⑪ पाँचो उँगलियाँ बराबर नही होती → सब मनुष्य समान नहीं हो सकते।
⑫ प्यासा कुएँ के पास जाता है → जिसे जरूरत होती है, वही दूसरो के पास जाता है।
⑬ पाँचो उँगलियों में घी होना → चारों ओर से लाभ होना
⑭ पाँव उखड़ना → हिम्मत हारना, साहस खोना
⑮ पानी रखना → मर्यादा बनाए रखना

(16) फलूदा खाते दाँत टूटे तो टूटे → स्वाद के लिए नुकसान भी मंजूर है।

(17) फूँक से पहाड़ उड़ाना → असम्भव कार्य करने की कोशिश करना

(19) बतीसी बंद होना → उदासी छा जाना

(20) बाँझ का जाने प्रसूत की पीड़ा → अभाव खटकता रहता है,

(21) बंदर घुड़की या भभकी → प्रभावहीन धमकी

(22) बड़े घर की हवा खाना → जेल जाना

(23) बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम → उम्र के हिसाब से ची अच्छी लगती है।

(24) बड़े बोल का सिर नीचा → जो घमंड करता है, उसको नीचा देखना पड़ता है।

(25) बगुला भगत → कपटी व्यक्ति / ढोंगी व्यक्ति

(26) बिन रोए तो माँ भी दूध नहीं पिलाती → बिना यत्न किये कुछ भी नहीं मिलता।

(27) बाप न मारे मेंढकी, बेटा तीरंदाज → बड़े से छोटे का आगे निकल जाना

(28) बहती गंगा में हाथ धोना → अवसर का लाभ उठाना

(29) बड़े बोल का सिर नीचा → घमण्डी का सिर नीचा होता है।

(30) बद अच्छा बदनाम बुरा → झूठी अपकीर्ति बुरी होती है।

(31) बिंध गया सो मोती रह गया सो सीप → जो वस्तु काम में आ जाए वही अच्छी

(32) भागे भूत की लंगोटी सही → आशा के विपरीत कुछ मिलना

(33) भौंरा न छोड़े केतकी तीखे कंटक जान → प्रेम बाधाएँ नहीं जानता

(34) मेंढक को भी जुकाम हुआ है। → अपनी शक्ति से बढ़कर बात करना

(35) मूसलों ढोल बजाना → बहुत खुश होना

(36) मुँह चिकना पेट खाली → केवल ऊपरी दिखावा

(37) मन फट जाना → व्यथित होना / रिश्तों में दरार आना

(38) मुए बैल की बड़ी-बड़ी आँखे → जो चीज नहीं रही उस की प्रशंसा

(39) मुट्ठी गरम करना → रिश्वत देना

(40) मुग बोलना → बहुत समय बाद होना

(41) राई का पहाड़ बनाना → बढ़ा-चढ़ा कर कहना

(42) लिफाफा खुल जाना → भेद खुल जाना

(43) ललाट में लिखा होना → भाग्य में बंधा होना

(44) शंकर होना → अत्यंत सीधा होना

(45) शैतान की आँत → लम्बी बात / लम्बी वस्तु

(46) सूर्य को दीपक दिखाना → किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की प्रशंसा करना।

(47) सींग काटकर बछड़ों में मिल जाना → बूढ़ा होकर बच्चों जैसा काम करना

(48) घाट-घाट का पानी पीना → कई क्षेत्र का अनुभव होना

(49) लहू लगाकर शहीदों में मिलना → झूठी प्रशंसा चाहना

(50) लिखे ईसा पढ़े मूसा → गंदी लिखावट

(51) लाल फीता शाही → सरकारी अड़ंगा

(52) लेने के देने पड़ना → लाभ के बदले हानि

(53) शेरों का मुँह किसने धोया → सामर्थ्यवान के लिए कोई उपाय नहीं।

(54) सूप तो सूप छलनी भी बोले → दोषी द्वारा दूसरों का दोष निकालना।

(55) सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना → कार्य में विघ्न का उपस्थित होना

(56) सुई की नोंक के बराबर → जरा सा भी

(57) हथेली पर सरसों नहीं जमती → बात कहते ही काम नहीं होता

(58) हाथ कंगन को आरसी क्या → प्रत्यक्ष वस्तु के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती

(59) हुक्का पानी बन्द करना → जाति से बहिष्कृत करना

(60) हीजड़े के घर बेटा हुआ → असंभव बात

(61) हवा से बातें करना → बहुत तेज दौड़ना

(62) हीरे की कनी चाटना → प्राणनाशक कार्य करना

(63) हाथ पसारना → याचना करना

(64) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना → आत्मप्रशंसा करना

(65) ऊँगली पर नचाना → वश में रखना
(66) औकात पहचाना → यह जानना कि किसी में कितना सामर्थ्य है।
(67) कूपमण्डूक होना → सीमित ज्ञान
(68) कमर कसना → तैयार होना
(69) टूट पड़ना → आक्रमण करना
(70) ठन-ठन गोपाल → पैसा पास न होना
(71) नाकों-चने चबाना → बहुत तंग करना
(72) बाँए हाथ का खेल → अति सरल काम
(73) भैंस के आगे बीन बजाना → बेसमझ आदमी को उपदेश देना
(74) मुँह पकड़ना → बोलने न देना
(75) लोहे के चने चबाना → कठिनाइयों का सामना करना
(76) आँखे चार होना → देखा-देखी होना या प्रेम होना
(77) आँखे थकना → प्रतीक्षा में निराश होना
(78) आग उगलना → क्रोध प्रकट करना
(79) ऐड़ी-चोटी का पसीना एक करना → खूब परिश्रम करना
(80) काला अक्षर भैंस बराबर → अनपढ़ / निरा मूर्ख
(81) खटाई में पड़ना → झमेले में पड़ना
(82) खरी-खोटी सुनना → भला-बुरा कहना
(83) चार दिन की चाँदनी → क्षणिक सुख / बहुत थोड़ा सुख
(84) छाती पर पत्थर रखना → असह्य दुःख को दिल में दबा लेना
(85) दूध के दाँत न टूटना → ईर्ष्या से हृदय जलना

86. भीगी बिल्ली बनना → लाचार होना / डर जाना
87. मैदान मारना → विजय प्राप्त करना
88. मुर्गी को तकवे का घाव भी बहुत है → कमजोर आदमी थोड़ा सा कष्ट भी नहीं सह सकता
89. अंडे सेना → घर में बेकार बैठे रहना
90. अठखेलियाँ सूझना → हँसी दिल्लगी करना / मस्ती मजाक करना
91. अपना-अपना राग अलापना → अपनी ही बातें कहना
92. अबे-तबे करना → आदर से न बोलना
93. आँख का काजल → अत्यंत प्रिय
94. आँच न आने देना → जरा सा भी कष्ट न होने देना
95. आँधी के आम → सस्ती चीजें
96. उधेड़-बुन में पड़ना / रहना → सोच-विचार करते रहना
97. कंधे से कंधा छिलना → भारी भीड़ होना
98. काला नाग → खोटा या घातक व्यक्ति
100. खाक में मिलाना → नष्ट करना
101. गाँठ में बाँधना → खूब याद रखना
102. गाजर मूली समझना → तुच्छ समझना
103. गूलर का फूल → दुर्लभ वस्तु
104. चाँदी का जूता → रिश्वत का धन
105. चिकना घड़ा → बेशर्म
106. छक्के छूटना → बुद्धि चकरा जाना
107. जमीन आसमान का फर्क → बहुत बड़ा अंतर

(108) जीती मक्खी निगलना → जानते हुए भी धोखा
(109) ढ़ाई घड़ी का आना → अचानक मर जाना
(110) बाजार गर्म होना → काम धंधा तेज होना
(111) पानी पीकर जात पूँछना → काम करने के बाद विचार करना
(112) मक्खियाँ मारना → बेकार बैठे रहना
(113) बिल्ली के भागों छींका टूटा → अकस्मात् कोई काम बन जाना
(114) अक्ल बड़ी या भैंस → शारीरिक शक्ति का महत्व कम बुद्धि का अधिक
(115) अटका बनिया देय उधार → गरज आ पड़े तो आदमी सब कुछ मान जाता है।
(116) ऊँट किस करवट बैठता है → निर्णय किसके पक्ष में होता है।
(117) खुदा की लाठी में आवाज नहीं → कोई नहीं जानता कि भगवान कब, कैसे क्या कर देते हैं।
(118) चट मँगनी पट ब्याह → तत्काल कार्य होना
(119) चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाऐ → बहुत कंजूसी
(120) छछूंदर के सिर में चमेली का तेल → अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज देना
(121) तु डाल-डाल, मैं पात-पात → एक से बढ़कर दूसरा चालाक
(122) देशी कुतिया विलायती बोली → किसी की नकल में अपनापन छोड़ना।

{मुहावरे एवं लोकोक्ति}

CLASS -81

- 'घर में नहीं दो दाने, बुढ़िया चली भुनाने' → व्यर्थ का दिखावा करना।
- "चिराग तले अन्धेरा" → निकट का दोष न देख पाना।
- 'खरी मजदूरी चोखा काम' → पूरी मजदूरी देने पर अच्छा कार्य होता है।
- लोकोक्ति है :- उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे
- 'ओछे की प्रीति बालू की भीति' → बालू की दीवार की भाँति ओछे लोगों का प्रेम अस्थायी होता है।
- 'आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास' → किसी कार्य विशेष की उपेक्षा कर दूसरे कार्य को करना।
- "अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप' लोकोक्ति का अर्थ है :- किसी भी बात या वस्तु का अधिक होना ठीक नहीं।
- 'हाथ कंगन को आरसी क्या' :- प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण क्या
- 'सुदामा के तन्दुल' का अर्थ :- सामान्य किन्तु प्रेमपूर्वक भेंट
- 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' :- अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ झुंझलाना।
- लोकोक्ति है :- अधजल गगरी छलकत जाय
- 'अन्दर-अन्दर कड़ाही में गुड़ पकना' :- गुप्त मंत्रणा होना
- 'अण्डे का शहजादा' :- अनुभवहीन व्यक्ति
- आँसू पीकर रह जाना' :- चुपचाप दुःख सह लेना

ROJGAR WITH ANKIT

- मुहावरा है :– आँखो में धूल झोंकना
- 'काले तिल चबाना' :– पराधीन होना /
- 'काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती :– छल-कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता /
- 'गोद मे लड़का शहर भर मे ढिंढोरा' :– पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना /
- 'चोर के पैर नहीं होते' :– पापी का मन अस्थिर होता है /
- 'द्रौपदी का चीर' :– कभी समाप्त न होना /
- 'पानी पीकर जात पूछना' :– काम निकलने के बाद सोचना /
- 'बाँझ क्या जाने प्रसव की पीड़ा' :– जिस पर बीतती है, वही जानता है /
- 'ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे' :– बड़े काम छिपकर नहीं किए जा सकते,
- 'सब्ज बाग दिखाना' :– अच्छी बातें कहकर बहकाना /
- 'पानी का बुलबुला होना' :– क्षणभंगुर होना /
- 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' :– अधिक परिश्रम का थोड़ा लाभ मिल
- 'तीन लोक से मथुरा न्यारी' :– सबसे निराला /
- 'कोयले की दलाली में हाथ काले' :– खराब काम का परिणाम भी खराब ही होता है /
- 'अन्धे को दीपक दिखाना' :– ना समझ को उपदेश देना /
- 'आगे कुआँ पीछे खाई' :– दोनो ओर मुसीबत /
- 'आदर और निरादर करना :– पान-पनही खिलाना /

:————!————!————!–

उपसर्ग - प्रत्यय

- उपसर्ग और प्रत्यय शब्दांश होते हैं।
- यह किसी मूल्य शब्द के आगे और पीछे लगते हैं।
- उपसर्ग और प्रत्यय का कोई अपना अर्थ नहीं होता है।
- इनका प्रयोग किसी शब्द की रचना में किया जाता है।
- **उपसर्ग का प्रयोग मूल शब्द के पहले किया जाता है।**
- **प्रत्यय का प्रयोग मूल शब्द के पीछे किया जाता है।**
- एक शब्द में एक से ज्यादा उपसर्ग का प्रयोग किया जा सकता है।

⇒ उदा० :- हिमांशु :- हिम (मूल्य शब्द) + अंशु (प्रत्यय)

उपसर्ग :-

↳ उप → समीप / पास / निकट
\+
सर्ग → सृष्टि करना

↳ परिभाषा :- जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले प्रयोग होकर उसके अर्थ में बदलाव करते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।

→ उदा० :- अमर → अ + मर
:- अजय → अ + जय
:- अनाथ → अ + नाथ

↳ उपसर्ग के भेद :- होते हैं।

(1) संस्कृत के उपसर्ग [संख्या - 22 (परन्तु हिन्दी में 19 प्रयोग होते हैं)]

(2) हिन्दी के उपसर्ग [संख्या - 22/13/10]

(3) विदेशी उपसर्ग [संख्या - 22]

(1) संस्कृत के उपसर्ग :-

- अति → अति + अंत (अत्यंत), अत्याचार, अति आवश्यक, अतिरिक्त, अतिवृष्टि, अतिसौरभ, अतिक्रमण, अतिसुन्दर
- अधि → अधिकरण, अध्यक्ष (अधि + अक्ष), अधिकार, अधिनायक, अधिकृत, अधिवेशन
- अभि → अभिमान, अभिमुख, अभिनेता, अभिनय, अभ्यास
- अनु → अनुचर, अनुज, अन्वेषण, अनुच्छेद, अनुराग, अनुप्रास, अनुमोदन, अनुकूल
- अप → अपयश, अपशकुन, अपहरण, अपशब्द, अपकार, अपकीर्ति, अपमान
- आ → आजीवन, आरक्षण, आकाश, आमरण, आदर, आचरण, आडंबर, आदर
- अव → अवमानना, अवशेष, अवगुण, अवमूल्य, अवयव
- उप → उपसर्ग, उपकार, उपर्युक्त, उपहार, उपद्रव, उपयोग
- सु → स्वच्छ, स्वागत, सुपात्र, सुकवि, सुकर्म, सुविचार
- उत/उद् → उद्घाटन, उत्पन्न, उद्गम, उद्भव, उच्चारण, उत्कर्ष, उत्पात, उदास, उद्योग

हिन्दी

उपसर्ग प्रत्यय #2

{ज्वाला बैच
अग्नि बैच}

नि - निवास, निडर, निबंध, निवेदन, निकट, नियम, निवारण

प्रति - प्रत्येक, प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिदिन, प्रतिशत

परि - पर्यटन, परिमाण, परित्याग, परिश्रम, परिवद

वि - विज्ञान, विराम, विपक्ष, वियोग, विदेश

प्र - प्रचार, प्रमाण, प्रहार, प्रवेश, प्रगति, प्रयोग

दुर - दुर्जन, दुर्लभ, दुर्भाग्य, दुराचार, दुरुपयोग

निर् - निर्मल, निर्बल, निर्भर, निर्गुण, निराकार, निर्माण
निर्यात, निरपराध,

दुस् - दुष्परिमाण, दुष्कर्म, दुस्साहस, दुश्शासन.

निस् - निस्संदेह, निष्फल, निश्चय, निष्पाप,

सम - संसार, संयोग, सम्मान, संतोष, सम्मुख,

परा - परामर्श, पराक्रम, पराजय, पराधीन, पराकाष्ठा

22. अपि - अपिधान, अपितु, अपिहित

Note. (अ - अज्ञान, अटल, अमर, अजर, अभाव,
Note अ हिन्दी के उपसर्ग मे आता है।

(2) हिन्दी के उपसर्ग —

- **अ** – अलौकिक, असत्य, अनाथ, अगुण, अहिंसा, अधर्म, अज्ञान, अभाव, अकाज, अखण्ड,
- **अन** – अनपढ़, अनजान, अनमोल, अनहोनी.
- **अध** – अधमरा, अधपका, अधखिला.
- **औ** – औजार, औगुन, औसत, औसान, औघट
- **कु** – कुचक्र, कुपुत्र, कुयोग, कुमार्ग, कुख्यात
- **दु** – दुधारु, दुबला, दुबारा, दुलारा,
- **नि** – निडर, निकम्मा, निहत्था, निपात, नियोग,
- **भर** – भरमार, भरसक, भरपेट, भरपूर
- **बिन** – बिनब्याहा, बिनचखा, बिनबदला, बिनबादल
- **आप** – आपबीती, आपसुनी, आपकही, आपलोग
- **उ** – उजड़ना, उतारना, उलझना, उतावला, उलाहना
- **उन्** – उनचालीस, उनसठ, उन्नति, उन्नतीस, उन्नासी,
- **स** – सहित, सपूत, सपरिवार, सरल, सतर्क, सचेत, सजग, सकुशल, सफल,

हिन्दी

{ज्वाला बैच अग्नि बैच}

उपसर्ग प्रत्यय # 3

14. चिर - चिरायु, चिरकाल, चिरंजीव, चिरंजीवी
15. पच - पचमेल, पचरंगा, पचकूटा, पचना
16. बहु - बहुवचन, बहुभुज, बहुमूल्य, बहुलक, बहुगुणी, बहुमत
17. सम - समान, समकोण, समतुल्य
18. ति - तिराहा, तिरंगा, तिकोना, तिजोरी
19. पर - परोपकार, परलोक, परहित, ~~परिणाम~~
20. चौ - चौराहा, चौमासा, चौमुख, चौपाई, चौकोर

अंग्रेजी उपसर्ग

1. जनरल - जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी
2. सब - सब इंस्पेक्टर, सब मजिस्ट्रेट, सब जज
3. वाइस - वाइस प्रेसीडेंट, वाइस प्राइम मिनिस्टर
4. डिप्टी - डिप्टी इंस्पेक्टर, डिप्टी कलेक्टर
5. चीफ - चीफ मिनिस्टर, चीफ सेक्रेटरी
6. हेड - हेड कांस्टेबल, हेड मास्टर

अरबी फारसी के उपसर्ग (क़, ख़, ग़, ज़, फ़)

1. दर - दरख्त, दरख्वास्त, दरगाह, दरकिनार
2. गैर - गैरवाजिब, गैरहाजिर, गैर कौम, गैर जिम्मेदार
3. ऐन - ऐन मौका, ऐन वक्त
4. अल - अलबेला, अलबौरा
5. कम - कमजोर, कमसिन, कमबख्त
6. खुश - खुशमिजाज, खुशहाल, खुशदिल

7. (ना) - नाइंसाफ, नापसंद, नामुमकिन
8. (बद) बदनसीब, बदनाम, बदसूरत
9. (हम) हमदम, हमशक्ल, हमसफर, हमदर्दी
10. (ला) लाइलाज, लाजवाब, लावारिस, लापरवाह
11. (हर) हरदम, हरपल, हरघड़ी

* प्रत्यय →

प्रति (साथ) + अय (चलनेवाला)

शब्दांश उपसर्ग (अपना अर्थ होता है) + मूल शब्द + शब्दांश प्रत्यय (अपना कोई अर्थ नहीं होता है।) ← यह स्वतन्त्र नहीं होता

• शब्द के साथ जुड़कर उसका विशेष अर्थ देता है।

प्रत्यय - जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पीछे जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन (बदलाव) कर देते है। उन्हें प्रत्यय कहते है।

उदा :→ सुन्दरता - सुन्दर + ता   मूर्ख + ता - मूर्खता
मानवता - मानव + ता
मिलावट - मिला + वट

Q मानवता शब्द में प्रत्यय क्या होगा?
(a) वता (b) मानव (c) ता (d) नवता

Q छलिया शब्द में प्रत्यय बताओ?
(a) छल (b) या (c) इया (d) लिया

Q प्रत्यय के कितने भेद है? (a) 4 (b) 2 (c) 3 (d) 6
(1) कृत प्रत्यय (क्रिया)
(2) तद्धित प्रत्यय (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण)

Rojgar with ankit

हिन्दी
उपसर्ग प्रत्यय # 4

{ ज्वाला बैच
अग्नि बैच }

प्रत्यय के दो भेद होते हैं। – (1) कृत प्रत्यय – कृत प्रत्यय से बनने वाला शब्द कृदंत शब्द होता है।

(2) तद्धित प्रत्यय - तद्धित प्रत्यय से बनने वाला शब्द तद्धितांत शब्द कहलाता है।

1- कृत प्रत्यय - जो शब्द क्रिया या धातु के अंत मे जुड़कर एक नए शब्द का निर्माण करते हैं, उन्हे कृत प्रत्यय कहते हैं।

- अक - लेखक, गायक, पाठक, कारक, नायक, धावक आदि
- अन - पालन, सहन, नयन, मोहन, झाड़न, पठन
- ना - घटना, तुलना, वेदना, देखना, खेलना
- अनीय - माननीय, दर्शनीय, पूजनीय, रमणीय
- आ - सूखा, गीला, काला, पूजा, इच्छा
- आई - लिखाई, सुनाई, पढ़ाई, दिखाई, सिलाई
- आन - मकान, उड़ान, मिलान, लगान
- इ - हरि, गिरि
- इया - बढ़िया, घटिया, छलिया
- इत - पठित, लिखित, फलित, पुष्पित
- ई - बोली, हँसी, त्यागी, फाँसी, रेली
- इत्र - चरित्र, पवित्र, खनित्र
- इयल - मरियल, सड़ियल

उक - इच्छुक, भिक्षुक, भावुक
तव्य - कर्तव्य, वक्तव्य
ता - आता, जाता, रहता, खाता, पीता, सोता
ति - शक्ति, अति, प्रीति, भक्ति.
ते - खाते, पीते, रहते, जाते, सोते, रोते, पढ़ते, लिखते
त्र - अस्त्र, शस्त्र, सर्वत्र, अन्यत्र
न - क्रंदन, वंदन, खिन्न, झाड़न
म - दाम, धाम, आदि
य - पूज्य, दंत्य, कृत्य, पाश्चात्य,
रु - गोरु, शेरु,
वाला - देने वाला, लेने वाला, सहनेवाला, पढ़ने वाला,
ऐया - गवैया, खवैया, रखैया, द. डसैया, चढ़ैया, आदि,
हार - होनहार, पालनहार, रखनहार, आदि

ROJGAR WITH ANKIT

उपसर्ग, प्रत्यय

Part-05 Class-86

तद्धित प्रत्यय 02 → 8 भाग

परिभाषा → वे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम, तथा विशेषण के अंत में प्रयोग किये जाते है, तद्धित प्रत्यय कहलाते है।

① कर्तृ प्रत्यय (कर्ता)

* आर → सुनार, लोहार
* आरी → जुआरी, पुजारी
* इया → मजाकिया
* वाला → दूधवाला, सब्जीवाला
* हार → पालनहार
* दार → समझदार, कर्जदार

② भाववाचक

* त्व → देवत्व, स्त्रीत्व
* पन → बचपन, अपनापन
* वट → सजावट, गिरावट
* हट → चिकनाहट, घबराहट
* त → रंगत, संगत
* आस → मिठास, खटास, चटास

③ ऊनावाचक

* क → ढोलक
* री → छतरी
* इया → गुड़िया (बुढ़िया)
* ई → टोपी
* की → छोटकी
* टा → चोट्टा
* ड़ा → दुखड़ा (मुखड़ा)
* ड़ी → पगड़ी
* ली → डोली, टोली
* वा → बचवा

④ संबंधवाचक

* हाल → ननिहाल
* एल → नकेल
* आल → ससुराल
* जा → भतीजा, भांजा
* औती → बपौती
* ई → गुजराती, बिहारी
* एरा → फुफेरा, चचेरा, ममेरा
* इया → पटनिया

⑤ अपत्यवाचक

* अ → वासुदेव, मानव
* आयन → रामायण, नारायण
* एय → राधेय
* य → दैत्य, कृत्य

⑥ गुणवाचक

* आ → भूखा, सूखा
* इक → शारीरिक, मानसिक
* ई → पक्षी
* एड़ी → गंजेड़ी
* इमा → लालिमा, कालिमा
* इष्ठ → वरिष्ठ, कनिष्ठ
* ईन → कुलीन
* र → मधुर
* ल → वत्सल
* वी → माधवी
* श → कर्कश

⑦ स्थानवाचक

* ई → बंगाली, बिहारी, राजस्थानी
* इया → भरतपुरिया, कनपुरिया
* गाह → चारागाह, बंदरगाह
* आड़ी → अगाड़ी, पिछाड़ी
* त्र → सर्वत्र, यत्र

⑧ अव्ययवाचक प्रत्यय

* दा → सर्वदा, यदा, कदा
* त्र → एकत्र, अन्यत्र
* ओं → कोसों
* स → आपस, वापस
* ऑ → यहॉ, वहा
* भर → दिनभर, पेटभर

Rojgar with ankit

{अग्नि बैच}

हिन्दी

उपसर्ग प्रत्यय अभ्यास प्रश्न

1. 'कजरौटा' शब्द मे कौन-सा प्रत्यय है ?
(a) औटा (b) औटा (c) कज (D) टा

2. 'उजड़ना' शब्द मे कौन सा उपसर्ग है ?
(a) उ (b) उजड (c) उज (D) ना

3. 'संहार' शब्द का उपसर्ग बताइए ?
(a) सह (b) स (c) सह (D) सम्

4. अंकुरित शब्द मे प्रत्यय बताइए ?
(a) रित् (b) रित (c) कुरित (D) इत

5. 'चरण' शब्द मे प्रत्यय बताइए ?
(a) रण (b) ण (c) र (D) अन

6. निम्न विकल्पों मे से उस विकल्प का चयन करे जो उपसर्ग का सही विकल्प नही है।
(a) व्यसन (b) निडर (c) प्रतिष्ठा (D) पुष्पित

7. 'अन्' उपसर्ग का सही विकल्प छाटे।
(a) अलबत्ता (b) नयन (c) उनसठ (D) अनंत

8. 'प्रत्यय' का सही विकल्प नही है, चुनिए।
(a) मिठास (b) पठित (c) चौड़ाई (D) भरपाई

9. 'अधि' उपसर्ग से बना सही शब्द है।
(a) अत्यंत (b) अध्यक्ष (c) आघात (D) अनुपयुक्त

10. श्रावणीय शब्द मे कौन सा प्रत्यय है।
(a) णीय (b) अनीय (c) य (D) नीय

11. 'औघट' मे उपसर्ग छाटे।
(a) औ (b) उ (c) अव (D) घो

(14) प्रत्यय से बने सही शब्द को चयन करे.
(a) धार्मिक (b) <u>कुख्यात</u> (c) पाठक (D) शालीनता

(15) नेपाली शब्द मे कौन सा प्रत्यय है.
(a) अली (b) ली (c) <u>ई.</u> (D) इ

(16.) सुहावना, लिखाई, व डलिया मे निहित प्रत्यय के सही विकल्प चुनिए
(a) अवना, खायी, या, (b) वना, आई, इया (c) आवना, ई, या, (D) <u>आवना, आई, इया</u>.

(17) 'अध्यक्ष' मे कौन सा उपसर्ग है.
(a) <u>अधि</u> (b) अध (c) अत (D) अद

(18) 'अधोमुख' मे उपसर्ग बताइऐ.
(a) अधो (b) <u>अधः</u> (c) आधा (D) अध्

(19) 'उत्' उपसर्ग का सही प्रयोग कहाँ नही हुआ है.
(a) उद्गम (b) उत्कर्ष (c) उत्तम (D) <u>अत्यधिक</u>

(20) 'अलंकार' मे किस उपसर्ग का प्रयोग है.
(a) अल (b) अल (c) अलन् (D) <u>अलम्</u>

(22) उच्चारण शब्द मे उपसर्ग है।
(a) उ (b) उच् (c) <u>उत्</u> (D) उच्च

(23) किस शब्द मे उपसर्ग का योग नही है,
(a) <u>कुशल</u> (b) कुठांव. (c) कुबेला (D) कुचाल.

(24) निर्गुण शब्द मे उपसर्ग है.
(a) नि (b) नी (c) <u>निर्</u> (D) निर्गु

(25) भुलक्कड़ मे प्रत्यय बताइऐ.
(a) भू (b) ड (c) <u>अक्कड़</u> (D) भूल

(26) भलाई मे प्रत्यय है,
(a) ई (b) <u>आई</u> (c) लाई (D) भ

(27) सावधानी मे प्रत्यय है।
(a) नी (b) धानी (c) ई (D) आनी

(28) जिन्दगी मे प्रत्यय है।
(a) गी (b) ई (c) दगी (D) यी

(29) महानता मे प्रत्यय है।
(a) म (b) महा (c) नता (D) ता

(30) खिलौना शब्द मे मूल शब्द है।
(a) खिल (b) खेल (c) औना (D) ना,

(31) 'पाण्डव' मे प्रत्यय है।
(a) कृदन्त (b) तद्धित (c) स्त्री (D) प्रत्यय नही है।

(32) प्रत्यय होता है,
(a) शब्दांश (b) वाक्यांश (c) पदांश (D) पद्यांश

Rojgar with ankit

हिन्दी

अनेकार्थी शब्द

अग्नि बैच
ज्वाला बैच

परिभाषा → जिन शब्दों के अनेक अर्थ निकलते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

1. दारु – लकड़ी
2. दारु – शराब
3. सुधा – पानी अमृत
4. कसरत – व्यायाम
5. क्षेत्र – तीर्थ, शरीर, प्रकृति
6. मूक – चुप, विवश, गूंगा
7. घट – मन, शरीर, घड़ा
8. शिखा – दीपक की लौ, कलँगी, शिखर
9. उत्तर – जवाब, दिशा, बाद का
10. आयत – विशाल, चिह्न, निशान, लम्बा, विस्तृत
11. अम्बर – आकाश, वस्त्र, कपास, इत्र, मेघ, अभ्रक एक नजर
12. जलज – कमल, शंख, मोती, चन्द्रमा, मछली, सेवार
13. मत्सर – द्वेष, क्रोध, ईर्ष्या, कुढ़न, जलन, घृणा
15. सत्य – नियत, सच
16. पट – वस्त्र, पर्दा, किवाड़
17. पक्ष – पार्श्व, पंख, पखवाड़ा
18. प्रभात – महिमा, सामर्थ्य, दबाव
19. कंकाल – हड्डियों का ढाँचा
20. अक्षत – कच्चा चावल, बिना घाव, समूचा, पूरा
22. व्याल – साँप, शेर, राजा, चीता, ठग, धूर्त, दुष्ट, क्रूर, पापिष्ठ,

(26) लक्ष्य — निशाना, उद्देश्य, ध्येय, गंतव्य,

(27) खराबी — दोष, अवगुण, बुराई, बेकार

(28) अक्ष — ज्ञान, सर्प, रथ, मंडल, आत्मा

(29) कमल — जलज, पंकज, मोती, पानी,

(30) खर — दुष्ट, गधा, तिनका, राक्षस,

(31) शृंखला — कतार, साँकल, बंधन

(32) गो — रश्मि, गाय, गौ, नदी, धरती

(33) परिकर — समूह, कमरबंद, परिवार

(34) द्विज — चन्द्रमा, दाँत, पक्षी, ब्राह्मण, गणेश।

(35) उद्योग — कारखाना

(37) कनक — धतूरा, सोना, खजूर

(38) अज — दशरथ के पिता, बकरा, शिव, ब्रह्मा

(39) अरुण — गरुड़, केसर, सिंदूर

(40) कर — हाथ, किरण, कसना, सूँड, टैक्स

(41) काल — यमराज, समय, शत्रु, मृत्यु

Rojgar with ankit

हिन्दी

ज्वाला बैच
अग्नि बैच

अनेकार्थी शब्द #2

बेला — वक्त , एक फूल, बरतन, समय
हंस — सूर्य, प्राण, आत्मा, एक पक्षी, योगी
सारंग — कोयल, सिंह, घोड़ा, हाथी, धनुष, भौंरा, बादल, समुद्र, शंख, कामदेव, सोना, चंद्रमा
अनंत — विष्णु, शेषनाग, ब्रह्मा, आकाश, अविनाशी, अंतहीन
आलि — सखी, सहेली
वेद — विष्णु, ज्ञान, व्याख्या
वन — जंगल, वाटिका, पानी
खोज — अनुसंधान, जिज्ञासा, तलाश, अन्वेषण, छानबीन, शोध
अर्क — सूर्य, रस, ताँबा, काढ़ा
कर्क — केकड़ा, एक राशि, सफेद, आईना, आग
अंतर — दूरी, शेष, हृदय
अंजन — काजल
मान — इज्जत, अभिमान, श्रेष्ठ
अर्थ — धन, अभिप्राय, निमित्त
अनुजा — तनुजा, दुहिता, सुता, पुत्री
चंचला — स्त्री, लक्ष्मी, बिजली
अंक — गोद, चिह्न, संख्या, भाग्य
खल — धतूरा, चुगलखोर, दुष्ट, तलछट, खरल
नीलकंठ — शिव, मोर, एक विशेष पक्षी
उत्तर — जवाब, दिशा, बदला, हल
नायक — सेनापति, मुखिया, छोटा सेनाधिकारी, नाटक का मुख्य पात्र
योग — मेल, लगाव, कुल, जोड़, ध्यान, शुभकाल
वर्ण — अक्षर, रंग, चातुर्वर्ण्य, जाति रूप

काल – मृत्यु, अकाल, समय, यमराज, अवसर

सुरभि – सुगंधित, वसन्त, ऋतु, पृथ्वी, सुन्दर गो

मुद्रा – आकृति, रुप, सिक्का, मोहर, अँगूठी, चिह्न, छापा, धन,

अवैध – नाजायज, गैरकानूनी, नाजायज

घोड़ा – बंदूक का खटका, शतरंज का एक मोहरा, एक पशु

नाग – साँप, पर्वत, हाथी, बादल, पान, वायु का एक भेद

निर्वाण – मोक्ष, शून्य, विश्राम, मृत्यु, संगम,

तेज – तीखा, प्रचंड, शीघ्रगामी, पैना, चरपरा

सार – तत्व, निष्कर्ष, रस, रसा, लाभ, धैर्य

अक्षत – कच्चा चावल, बिना घाव, समूचा, पूरा

अज – अजन्मा, ईश्वर, ब्रह्म, बकरा

अतिथि – अग्नि, साधु, यात्री, अपरिचित, मेहमान,

आम – आम का फल, मामूली, सर्वसाधारण

गुरु – अध्यापक, दीर्घ वर्ण, श्रेष्ठ, वृहस्पति, बड़ा, भार

ऊर्मि – पीड़ा, लहर

कनक – धतूरा, सोना, गेहूँ, पलास, खजूर, टेसू

योग – लगाव, मेल, कुल, जोड़, ध्यान, शुभकाल

अनेकार्थी शब्द

Part - 3

(1) 'आँख में अंजन दांत में मंजन' वाक्य में अंजन शब्द का अर्थ है :- काजल

(2) निम्नलिखित शब्दों में से कौन-सा शब्द अनेकार्थी शब्द है?
(a) मेंढक (b) मुद्रा ✓ (c) हीरा (d) मोती
↳ रुपया, मोहर, अंगूठी, चिह्न

(3) निम्नलिखित में कौन-सा शब्द अनेकार्थी शब्द है?
(a) अंक ✓ (b) दोस्त (c) कबूतर (d) परिवार
↳ संख्या, अध्याय की संख्या, गोद

(4) 'अलि' शब्द का अनेकार्थी शब्द है :- भ्रमर

(5) इनमें कौन-सा शब्द "अनंत" का अर्थ नहीं है?
(a) शेषनाग (b) अंतहीन (c) आकाश (d) आशा ✓

(6) "गंध" शब्द का अनेकार्थी शब्द है :- बास

(7) इनमें कौन-सा शब्द 'कनक' का अर्थ नहीं है?
(a) धतूरा (b) सोना (c) खजूर (d) केश ✓

(8) "अज" शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है?
(a) दशरथ के पिता (b) बकरा (c) कमल ✓ (d) ब्रह्मा

(9) निम्नलिखित में से "अंतर" का अर्थ नहीं होता है?
(a) दूरी (b) आकाश ✓ (c) शेष (d) हृदय

(10) निम्नलिखित में से क्या 'मान' का अर्थ नहीं है?
(a) इज्जत (b) अभिमान (c) श्रेष्ठ ✓ (d) सम्मान

(11) निम्नलिखित में कौन-सा शब्द अनेकार्थी शब्द है?
(a) गुलाब (b) बेला ✓ (c) चमेली (d) रातरानी

(12) 'फैला' अपने रवि कर जाल' में प्रयुक्त शब्द "कर" शब्द किस अर्थ को व्यक्त करता है :- किरण

(13) निम्नलिखित में कौन-सा शब्द "हंस" की जगह प्रयुक्त नहीं होगा!
(a) सूर्य (b) योगी (c) श्वेत (d) अमृत

(14) इनमें कौन-सा "आराम" शब्द का अर्थ नहीं है?
(a) आहत (b) वाटिका (c) फुलवाड़ी (d) विश्राम

(15) इनमें से "खोज" का अनेकार्थी शब्द नहीं है?
(a) अनुसंधान (b) जिज्ञासा (c) तलाश (d) इच्छापूर्ति

(16) "ताकतवर" शब्द का अर्थ है :- रुस्तम

(17) 'द्विज" शब्द का अर्थ नहीं है?
(a) चन्द्रमा (b) दाँत (c) पक्षी (d) कपूर

(18) इनमें "काल" शब्द का अर्थ नहीं है?
(a) यमराज (b) समय (c) आनेवाला कल (d) शत्रु

(19) इनमें 'परिकार" शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है?
(a) समूह (b) कमरबंद (c) परिवार (d) क्षत्रिय

(20) इनमें "मूल" का अनेकार्थी शब्द है?
(a) भूमि (b) जड़ (c) पत्थर (d) जोड़

(21) "जल, प्राण, पुत्र" इनमें से किस शब्द के अनेकार्थी है?
(a) तत्व (b) सार (c) जीवन (d) औषधि

(22) "कंकाल" शब्द का अनेकार्थी शब्द है :- हड्डियों का ढाँचा

(23) इनमें से "व्याल" शब्द का अनेकार्थी शब्द नहीं है?
(a) साँप (b) शेर (c) राजा (d) दुर्गा

(24) 'लक्ष्य" का अनेकार्थी शब्द है :- निशाना, उद्देश्य

(25) इनमें "पट" शब्द का अर्थ क्या नही होता है?
(a) डालना (b) वस्त्र (c) पर्दा (d) किवाड़

(26) इनमें से "पानी" का अर्थ नही होता है?
(a) चमक (b) बिजली (c) इज्जत (d) जल

(27) इनमें से "आहार" का अर्थ नही होता है?
(a) भक्ष्य (b) बोझ (c) खुराक (d) भोजन

(28) नीचे दिये गये रेखांकित शब्द का अनेकार्थी शब्द है.
→ आजकल के घरों में एक सुसज्जित कक्ष अवश्य होता है,
↳ बैठक

(29) "आयत" का अनेकार्थी शब्द है :- विशाल

(30) "उत्तर" शब्द से किसका सम्बन्ध नही है?
(a) जवाब (b) दिशा (c) बाद का (d) वस्त्र

हिन्दी

ज्वाला बैच
अग्नि बैच

श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

परिभाषा → ऐसे शब्द जिनका उच्चारण समान होता है लेकिन उनके अर्थ अलग-अलग निकलते हैं, उन्हे समश्रुत भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

उदा:- अली, आलि — सखी, भौंरा
अंश, अंस — हिस्सा, कंधा

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
1. अगम	दुर्लभ	अभय	निडर
आगम	उत्पत्ति, शास्त्र	उभय	दोनों
2. अनल	आग	अध्ययन	पढ़ना
अनिल	हवा, पवन	अध्यापन	पढ़ाना
3. अनिष्ट	बुराई, निंदा	अक्षि	आँख
अनिष्ठ	निष्ठा रहित	अक्षी	आँख वाली
4. अपेक्षा	इच्छा, उम्मीद	अवधि	काल
उपेक्षा	निरादर	अवधी	भाषा
5. अभिज्ञ	जानने वाला	अमित	बहुत,
अनभिज्ञ	अनजान	अमीत	शत्रुता
6. अश्व	घोड़ा	अभियान	चढ़ाई करना
अश्म	पत्थर	अभिमान	घमण्ड
7. अयश	बदनामी	अभ्यास	बारबार
अयस	लोहा	अभ्यासु	प्रयत्न
8. अँगना	आँगन	अरक	रस
अंगना	स्त्री	अर्क	सूर्य
9. अवृत्ति	बेकारी	अगद	रोग रहित
आवृत्ति	दोहराना	अंगद	बालि का पुत्र

अंचल आँचल	पार्श्व कपड़े का छोर	उत्तर उत्तर	जवाब दिशा।
अचल अचला	पृथ्वी साधुओं का वस्त्र	उधार उद्धार	देय राशि ऊपर उठना
अमूल अमूल्य	जड़हीन अनमोल	उपयुक्त उपर्युक्त	उचित ऊपर कहा गया
आवास आभास	घर भ्रम	उज्जल उज्ज्वल	धारा के प्रतिकूल स्वच्छ
आदि आदी	शुरुआत आदत वाला	उपाधी उपाधि	धोखा, छल पद, प्रमाण
आर्षी आरसी	वेद संबंधी सीसा	ऊषा ऊर्षा	प्रातः काल देवताड की घास,

ROJGAR WITH ANKIT

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

Part-02 Class-92

1. ऐब → खोट
   ऐभ → हाथी से संबंधित
2. ओटना → बिनौला अलग करना
   औंटना → खौलना
3. ओर → तरफ
   और → एवं या अधिक
4. करि → हाथी
   कीर → तोता
5. कृत्य → काम
   कौड़ी → घोंघा आदि का घर
6. कोर → सिरा
   कौर → निवाला
7. कुल → परिवार
   कूल → किनारा
8. कोशल → अवध का पुराना नाम
   कौशल → निपुण या दक्ष
9. कृतज्ञ → उपकार मानने वाला
   कृतघ्न → उपकार न मानने वाला
10. कांति → चमक
    क्रांति → उलट-पलट/परिवर्तन
11. कोश → शब्दों का संग्रह
    कोष → खजाना
12. कलि → कलयुग
    कली → अधखिला फूल
13. कृपण → कंजूस
    कृपाण → तलवार
14. कुण्डल → कान का आभूषण
    कुन्तल → सिर के बाल
15. कटिबद्ध → तैयार
    कटिबंध → कमरबंद
16. केश → बाल
    केस → मुकदमा
17. कुंजर → हाथी
    कंजर → जाति
18. कश → चाबुक
    कष → कसौटी
19. कुनबा → घर परिवार
    कुनवा → खरीदने वाला
20. कर्त्ता → करने वाला
    करता → क्रिया का रूप

ROJGAR WITH ANKIT

(21) खासी → अच्छी
खाँसी → रोग (बीमारी)

(22) खोलना → बंधन मुक्त
खौलना → उबालना

(23) गृह → घर
ग्रह → नक्षत्र

(24) गुड़ → शक्कर
गूढ़ → गंभीर

(25) गगरा → घड़ा
घघरा → लहंगा

(26) घुस → प्रवेश
घूस → रिश्वत

(27) चसक → आदत/लत
चषक → प्याला

(28) चरम → सबसे ऊपर
चर्म → चमड़ा

(29) छात्र → विद्यार्थी
क्षात्र → क्षत्रिय का प्रयोग

(30) जरा → बुढ़िया
जर → नींव/जड़

(31) जनता → लोग
जंता → चक्की

(32) जरठ → बूढ़ा
जठर → पेट की ग्रंथि

(33) जिजिया → बड़ी बहन
जजिया → गैर मुस्लिम कर

(34) जबान → जीभ
जवान → युवा

(35) जामन → दूध जमाने वाला पदार्थ
जामुन → एक फल

(36) डोंगी → छोटी नाव
ढोंगी → पाखण्डी व्यक्ति

(37) तरणी → नाव
तरणि → सूर्य
तरुणी → युवती

(38) तनु → पतला शरीर
तनू → पुत्र

(39) थान → कपड़ा का
थाना → पुलिस स्टेशन

(40) द्विप → हाथी
द्वीप → टापू

(41) दारु → लकड़ी
दारू → शराब

(42) दंश → डंक
दस → एक संख्या

(43) धनेष → धन का स्वामी
धनेस → एक पक्षी

ROJGAR WITH ANKIT

44) नीर → पानी
नीड़ → घोंसला

45) निशाकर → चंद्रमा
निशाचर → राक्षस

46) निश्छल → छल रहित
निश्चल → अटल

47) निसान → झण्डा
निशान → प्रतीक / चिह्न

48) निवार → रोकना
नीवार → जंगल की घास

49) नुकता → पते की बात
नुक्ता → अरबी, फारसी चिह्न

50) परुष → कठोर
पुरुष → आदमी

51) प्रथा → रीति / रिवाज / ढंग
पृथा → कुंती

52) परायण → लगा हुआ
पारायण → पूरा पाठ

53) प्रसाद → कृपा
प्रासाद → महल

54) परिणाम → फल / अर्थ / नतीजा
परिमाण → मात्रा

55) प्रकार → ढंग / तरीका
प्राकार → किले का अंश

56) पाणि → हाथ
पानी → जल

57) पावन → पवित्र
पवन → वायु

58) पुष्कर → तालाब / सरोवर
पुष्कल → पवित्र / पर्याप्त

59) प्रेषित → भेजा हुआ
प्रोषित → प्रवासी

60) प्राप्त → मिला
पर्याप्त → बहुत

61) बाड़ → रोक
बाढ़ → सैलाब

62) भवन → घर
भुवन → संसार, लोक / विश्व

63) मद → अहंकार
मद्य → शराब

64) मूल → जड़
मूल्य → कीमत

65) मोर → पक्षी
मौर → मुकुट

66) रेखा → लकीर
लेखा → हिसाब

67) लक्ष → लाख
लक्ष्य → उद्देश्य

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

Part - 03

(1) निम्नलिखित में से संज्ञा व विशेषण की दृष्टि से कौन-सा शब्द युग्म असंगत है?

(a) ईश्वर - ईश्वरीय (b) झगड़ा - झगड़ालू

(c) कुल - कुलीन (d) अज्ञान - अज्ञानता

(2) एक युग्म अशुद्ध है।

(a) अनुराग - विराग (c) अस्त - निरस्त

(b) अन्त - आदि (d) अमावस्या - पूर्णिमा

(3) दिये गए शब्द युग्म का सही शब्द युग्म ज्ञात कीजिए।

अम्बु : अम्ब

↳ जल : माता

(4) ऐसे शब्द जो उच्चारण और वर्तनी की दृष्टि से समान हों; पर व्युत्पत्ति तथा अर्थ की दृष्टि से भिन्न हों ...... कहलाते हैं।

↳ समरूप या समोच्चारित शब्द

(5) निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही नहीं है?

(a) अन्यान्य - और - और (b) अन्योन्य - परस्पर

(c) कृति - रचना (d) कृती - निकृष्ट पुरुष

(6) कृपण तथा कृपाण शब्दों के क्रमशः अर्थ है -

↳ कंजूस तथा कटार

(7) शब्द - युग्म के सही अर्थ भेद का चयन कीजिए।

अम्बुज - अम्बुद ⇒ कमल - बादल

(8) प्रसाद - प्रासाद' युग्म का सही अर्थ है ÷ कृपा - महल

(9) दिए शब्द युग्म का सही शब्द युग्म ज्ञात कीजिए।

कुजन : कूजन ⇒ वृक्ष : पक्षियों की चहचहाहट

(10) सही अर्थ वाले श्रुतिसम भिन्नार्थक युगल का चयन करें /
↳ शीत - शित : ठंडा - तेज किया गया

(11) 'श्वेत' और स्वेद का अर्थ है → सफेद और पसीना

(12) किस विकल्प में शब्द - युग्म का अर्थ - भेद सही है /
(a) और - ओर दूसरा - तथा
(b) उर - उरु हृदय - नदी
(c) इतर - इत्र भिन्न - इत्यादि
(d) अपरा - अपार दूसरी - जिसे पार न किया जा सके

(13) श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द युग्म 'आकार - आगार' का उचित अर्थ है ÷ आकृति - धाम

(14) 'इति - ईति' का सही अर्थ है ÷ समाप्ति : विघ्न

(15) दिए गए शब्द का सही शब्द युग्म ज्ञात कीजिए /
उत्पात : उत्पाद → उपद्रव : उत्पन्न वस्तु

(16) वरण - वरत् शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ चुनना - बल्कि

(17) नीवार - निवार शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ रस्सी - रोकना

(18) 'कांता - कांतार' शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ सुंदर स्त्री - जंगल

(19) 'चपला - चपल' के समरूपी भिन्नार्थक है ?
↳ बिजली - तेज

(20) "आधि- व्याधि" शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ मानसिक कष्ट : शारिरिक कष्ट

(21) सही अर्थवाला शब्द युग्म कौन- सा है/
↳ आकर आकार = खान आकृति

(22) 'चरम- चर्म' शब्द युग्म का सही अर्थ है/
अंतिम सीमा – चमड़ा

(23) एक युग्म अशुद्ध है -
(a) अनाथ - अनाथा
(b) अश्व - अश्वा
(c) चातक चातकी
(d) सुलोचन - सुलोचनी

(24) लक्ष्य और लक्ष' शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ उद्देश्य - लाख (गिनती)

(25) कलि : कली शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ कलियुग कलिका

(26) युग्म की कौन- सी सही जोड़ी है।
(a) न्याय - अन्याय
(b) धरा - पृथ्वी
(c) अचल - अचला
(d) मान - अपमान

(27) भवन और भुवन का सही अर्थ है
↳ महल - जगत

(28) इंद्रा - इंद्र का सही अर्थ है ÷ इंद्राणी : सुरपति

(29) शकल - शक्ल का सही अर्थ है ÷ टुकड़ा : चेहरा

(30) इंदु : इंदुर शब्द का सही अर्थ है ÷ चंद्रमा - चूहा

(31) इन्दिरा : इंद्रा शब्द का सही अर्थ है ÷ लक्ष्मी : इन्द्र की पत्नी शची

(32) 'तनी - तनि' शब्द युग्म का सही अर्थ है
↳ बंधन - थोड़ा

(33) पुरूष और स्त्री का 'जोड़ा' कहलाता है
↳ युगल

(34) 'अभय - उभय' के समरूपी भिन्नार्थक है -
↳ निडर - दोनों

(35) 'अलि - अली' शब्द युग्म का सही अर्थ है -
↳ भौंरा - सखी

(36) 'अभिज्ञ - अनभिज्ञ' शब्दों का सही अर्थ बताइये /
↳ जानकार - नाजानकार

हिन्दी

ज्वाला बैच
अग्नि बैच

वाक्य शुद्धि

1 वर्तनी अशुद्धि
2 संज्ञा अशुद्धि
3 सर्वनाम अशुद्धि
4 क्रिया अशुद्धि
5 विशेषण अशुद्धि
6 पदक्रम अशुद्धि
7 सहायक क्रिया अशुद्धि

EX: राम का भाई लक्षमण है
(लक्ष्मण)

EX: श्री कृष्ण के अनेको नाम प्रसिद्ध है. वाक्य मे त्रुटि पहचान करे.
अनेक

बच्चे को छीलकर केला खिलाओ वाक्य मे त्रुटि पहचान करे.
बच्चे को केला छीलकर खिलाओ (पदक्रम त्रुटि)

अशुद्ध वाक्य

- मैं मंगलवार के दिन व्रत रखता हूँ। - को
- तुम रामायण की पुस्तक पढो . . EX तुम गीता पढो
- 'शिक्षा' नामक शीर्षक निबंध अच्छा है। - शिक्षा शीर्षक निबंध अच्छा है.
- कंस की हत्या श्री कृष्ण ने की थी - किया था
  का वध
- रेडियो की उत्पत्ति किसने की? - का आविष्कार, किया.
- उन्नति के मार्ग मे संकट भी आते है. - बाधाएँ भी आती है,
- उसने मेरा गाना और घर देखा - सुना
- वह सिलाई और अंग्रेजी पढती है. - सीखती है.
- वे परस्पर एक दूसरे के मित्र है. - वे एक दूसरे के मित्र है,

- दही खट्टी है। — खट्टा (खट्टा)
- एक फूल की माला बनाओ → फूलों की एक माला बनाओ।
- वह यहां आये बिना नहीं रह सकता है। — आए

बच्चे को धोकर फल खिलाओ।

- अमायरा को लगभग शत प्रतिशत अंक मिले.
- रीना सायंकाल के समय घूमने जाती है.
- देवी विलाप कर के रोने लगी- — देवी विलाप करने लगी
- सारी दुनिया भर मे यह बात फैल गयी -
- चीन की वर्तमान मौजूदा हालत ठीक नहीं है.
- तरुण नवयुवकों की शिक्षा का अच्छा प्रबंध होना चाहिए.
- रामलाल ने हाथी पर काठी बाँध दी — हौदा
- शामिल ने पाकिस्तान मे विख्यात आतंकवादी मार गिराया - कुख्यात
- मैंने कल जैसलमेर जाना है, — मुझे
- कोई डॉक्टर को बुला दो — किसी
- यह सबसे सुंदरतम साड़ी है — सुन्दर
- अब और स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है.-
- मीरा भक्त कवि थी। — कवयित्री.

[वाक्य शुद्धि] Part-02 Class-95

Q① → शुद्ध वाक्य का चयन करें।

ⓐ सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र को से ही संभव है।

ⓑ सभ्यता से विकास आदर्श चरित्र को संभव है।

ⓒ सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही संभव है।

② शुद्ध वाक्य का चयन करें?

ⓐ विनम्रता के बिना स्वतंत्रता पर कोई अर्थ नहीं।

ⓑ विनम्रता से बिना स्वतंत्रता पर कोई अर्थ नहीं!

ⓒ विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं।

③ अशुद्ध वाक्य चयन करें?

ⓐ मैं दर्शन करने आया हूँ

ⓑ मे अपनी बात का स्पष्टीकरण करने के लिए तैयार हूं।

ⓒ वहाँ भीड़ लगी थी।

④ शुद्ध वाक्य चुनिए।

ⓐ राम रोटी खाया है।

ⓑ राम ने रोटी खाई है।

⑤ श्याम जल से पौधे सींच रहा है 'वाक्य का शुद्ध रूप होगा?

ⓐ श्याम पौधे सींच रहा है।

⑥ गलत वाक्य छांटे?

ⓐ हमें उपलब्ध सभी सुख सुविधाएँ विज्ञान की ही देन है।

ⓑ विज्ञान से (ने) अनेक असंभव लगने वाली बातों को संभव कर दिखाया है।

ROJGAR WITH ANKIT

⑧ व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध वाक्य।

(a) शादी के कार्यक्रम (10) दिनों तक चलता रहा।

(b) जब जातिवाद पनपता है, तो वह किसी दूसरी जाति के खिलाफ ही पनपता है।

⑨ → अशुद्ध वाक्यों का चयन करें।

(a) वह दण्ड देने योग्य है।

(b) राधा बाजार जाती है

(c) राम घर को जाती है।

(d) शरीर में ताकत होनी चाहिए

(e) सोने के कीमत ✗ → सोने की कीमत ✓

(f) अनेकों ग्रंथ → ✗ अनेक ग्रंथ ✓

(g) मैं कानपुर गया था

(h) सुमन के अनुसार शत्रुता अच्छी नहीं है।

(i) हम लोग आपका आभार मानते हैं।

(j) जल्दी करो (8) बजने को सिर्फ 10 मिनट हैं।

(k) वह, तुम, हम बाजार जाएँगे ✗ → शुद्ध रूप → हम, तुम और वह बाजार जाएँगे

⑩ शुद्ध वाक्य चुनें।

① घर के सभी सदस्यों ने मिलकर इस पर विचार किया।

② मैंने आपके लिए शहर के अच्छी होटल से खाना मंगवाया है

③ गीता अच्छी पुस्तक है।

④ बगीचे की सुंदरता अनूठी है।

⑤ विसर्जन हो चुकी थी

⑥ मैं आप पर श्रद्धा रखता हूँ।

हिन्दी
वर्तनी

अग्नि बैच

परिभाषा :- शब्दो को बोलने व लिखने का ज्ञान वर्तनी कहलाता है।

हिन्दी वर्णमाला मे कुल वर्ण = 53 (नया + ळ (अभी आया है))
पहले = 52

स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
(उदासीन अमात्रिक) ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ
(संस्कृत भाषा)

अयोगवाह - अं (नाक) अः

अँ - नाक, मुह

व्यंजन वर्ण - 25 स्पर्शी →

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म

उत्क्षिप्त, द्विगुण ध्वनि
ताडन जात → ड़ ढ़

4 अंतस्थ → य, र, ल, व
4 संघर्षी ध्वनि - श, ष, स, ह
4 संयुक्त ध्वनि - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

Note - ळ 52+1 = 53
वर्णमाला मे वर्तमान ध्वनि 53 हैं।

- शब्द संरचना की चार इकाई है।

1. उपसर्ग के आधार पर → प्रहार, अहार
2. प्रत्यय के आधार पर → इतिहास + इक - ऐतिहासिक
3. संधि के आधार पर → हिमालय → हिम+आलय -(अ + आ = आ)
4. समास के आधार पर → राजपुत्र → राजा का पुत्र

क → क्‌ → क्लेश   ख → ख्‌ – ख्याति
फ - फ्‌ → दफ्तर   ग → ग्‌ → लग्न

स्वर संबंधी अशुद्धि → नलायक - नालायक
आधीन - अधीन
अनाधिकार - अनधिकार

नदी - नदियाँ
रोटी - रोटियाँ
दवाई - दवाइयाँ
साड़ी - साड़ियाँ

(2) **अनुस्वार संबंधी अशुद्धि** → अयोगवाह, विसर्ग: नाँक मुह+नाक.

अंगूर, अंक, अंग,
आँख, चाँद, बाँधा, गाँधी, चाँदनी
प्रात: काल, अत:, अंत:पुर, अंत: करण, मन: कामना

(3) यदि किसी शब्द के अंत में करण प्रत्यय आता है। तो. (करण का मेल + ई,) से होता है,

→ ई + करण

1. शुद्धीकरण
2. ध्रुवीकरण
3. प्रस्तुतीकरण
4. मानवीकरण
5. संतुष्टीकरण
6. समीकरण
7. आधुनिकीकरण
8. केन्द्रीकरण
9. वाष्पीकरण

**अपवाद- आधिकरण
प्राधिकरण**

हिन्दी
वर्तनी #2

आग्नि बैच

हलंत (्) संबंधी नियम:- मान् प्रत्यय लगा होता है, वह मान् के अंत मे प्रत्यय लगाया जाता है।

उदा: (1) बुद्धिमान् श्रीमान् आयुष्मान्

विशेष:- धातु के अंत मे यदि मान प्रत्यय आता है। तो वहाँ पर मान शब्द मे हलंत नही लगाया जाता है।

(2) चित, विद् और वान् तो वह हलंत के साथ ही लगाए जाते है।

उदा: (1) भाषाविद् (5) भाग्यवान्
(2) शास्त्रविद् (6) गुणवान्
(3) किंचित (7) रूपवान्
(4) कदाचित

(3) सात् — आत्मसात्, भूमिसात्

*** इक संबंधी नियम** → जिस शब्द के अंत मे इक प्रत्यय होता है तो यदि उस शब्द का पहला वर्ण,

(1) इ ई - ऐ
(2) उ ऊ - औ
(3) ए ऐ - ऐ
(4) ओ औ - औ

अ, आ — आ

Ex: धर्म + इक = धार्मिक
वर्ष + इक = वार्षिक
विज्ञान + इक = वैज्ञानिक
सप्ताह + इक = साप्ताहिक
साहित्य + इक = साहित्यिक
प्रथम + इक = प्राथमिक
उद्योग + इक = औद्योगिक

*** ताडन जात संबंधी नियम (ड़ ढ़)** - (1) यदि ताडन जात वर्ण से पहले अनुस्वार आता है तो ताडन जात का प्रयोग नही किया जाता है

उदा: ढंग, ठंडा, पंडित, डंडा, आदि.

(2) ताडन जात वर्ण से कभी भी किसी शब्द की शुरुआत नही होती है,

① डमरू, डाल, ढोल, ढोलक

- शब्द के बीच या बाद में नाडनजात लगाया जा सकता है।
  बूढा, लड़का, लड़की, सड़क

- उपसर्ग के बाद में नाडनजात का प्रयोग नही किया जाता है
  निडर - नि + डर.   अपवाद - अनपढ → अन - पढ

- अंग्रेजी शब्दो में नाडन जात नही लगाया जाता है।
  Ex: रोड, बेडरूम, ब्लैकबोर्ड, रेडियो, बोर्ड

- द्वित्व व्यंजन का प्रयोग होने पर भी नाडन जात नही लगाता है।
  Ex: ड्डयन, अड्डा, टिड्डी, लड्डू

★ (ं) अनुस्वार के स्थान पर स्पर्शी व्यंजन का पाँचवाँ वर्ण आ जाता है
  Ex: चंचल = चञ्चल   शंकर - शङ्कर   अंधा - अन्धा
  अंजलि - अञ्जलि,   गंगा - गङ्गा   संधि - सन्धि

र संबंधी नियम ›

स्वर रहित वर्ण के साथ पदेन र का प्रयोग होता है
- प्रेम, प्रकार.

- गोलाई वाले वर्ण के साथ - ट्रक, ड्रामा, ड्रामा, ड्रम.

- र (का प्रयोग अपने से आगे वाले वर्ण के ऊपर किया जाता है,
  आशीर्वाद, वर्मा, शर्मा, कर्मा, निर्मल, दुर्बल

- ऋ (c) यह भाषा का स्वर होता है (र + इ

श्रृंगार   कृषक
गृह   संस्कृत   [इससे बनने वाले शब्द सभी संस्कृत भाषा के होते है.]
कृपा   पृथ्वी
ऋषि   कृपया   अमृत, अनुगृहीत, संगृहीत.

वर्तनी

Part-03 Class-98

→ 'न' संबंधी नियम

* जब किसी शब्द में र, ऋ, ष, क, ख, ग, घ, प, फ, ब, भ आने पर या य, र, ल, व कोई स्वर हो तो 'न को ण' में बदल दिया जाता है।

→ कृष्णा, कृष्ण, आभूषण, आक्रमण, पुराण, तृष्णा, रामायण विष्णु, घृणा, हरिण, लक्ष्मण, रावण आदि।

शुद्ध वर्तनी

1. अंजलि
2. गीतांजलि
3. पुष्पांजलि
4. अंगना
5. आँगन
6. आँख
7. चाँदनी
8. चाँद
9. गाँधी
10. अक्षुण्ण
11. उर्मिला, निर्मला
12. दुर्जन
13. अहल्या
14. प्रदूषण
15. कौशल्या / कौसल्या
16. कैलास
17. कुमुदिनी
18. जलज
19. अंत्याक्षरी
20. अभ्यस्त
21. अंतर्राष्ट्रीय
22. चहारदीवारी
23. आशीर्वाद
24. आविष्कार
25. अधीन
26. अनधिकार
27. अंतर्धान / अन्तर्धान
28. अमावस्या
29. पूर्णिमा
30. घृणा
31. शृंगार
32. आध्यात्मिक
33. दीपावली
34. रक्षाबंधन
35. त्योहार
36. न्योछावर
37. अभ्यारण्य
38. पूज्य
39. पूजनीय
40. जाग्रत
41. जागृति
42. अनुगृहीत

ROJGAR WITH ANKIT

43. संगृहीत
44. कृपया
45. पृथ्वी
46. प्रत्यक्ष
47. सृष्टि
48. दृष्टि
49. हिरण्यकशिपु
50. कृतज्ञ
51. कृतघ्न
52. परिशिष्ट
53. घनिष्ट
54. साहित्यकार
55. विरहिणी
56. रचयिता
57. कवयित्री
58. कवि
59. भाषाएँ
60. दवाई
61. दवाइयाँ
62. जिजीविषा
63. अभ्यंतर
64. पारलौकिक
65. लालायित
66. संन्यास
67. संन्यासी
68. अतिशयोक्ति
69. आनुपातिक
70. सहानुभूति
71. कैकेयी
72. शूर्पणखा
73. दशरथ
74. भागीरथी
75. वाल्मीकि
76. बहुव्रीहि
77. कालिदास
78. योगिराज
79. पक्षिराज
80. परिणति
81. स्थायित्व
82. अनिवार्य
83. प्रतिज्ञा
84. परीक्षा
85. पतिव्रता
86. परिचय
87. समिति/ समितियाँ
88. परिवार
89. गृहिणी
90. गृह
91. ग्रह
92. कोशिश
93. नायिका
94. अभिनेत्री
95. मानसिक
96. सरोजिनी
97. विदुषी
98. माचिस
99. आखिर
100. परिमार्जित
1. वाहिनी
2. पुष्टि
3. प्रतिनिधि
4. साहित्यिक
5. युधिष्ठिर
6. अनुसरण
7. अनुभूति
8. द्वारका
9. शारदा
10. छिपकली
11. रचनात्मक
12. शिखर
13. स्वर्गीय
14. लीजिए
15. दीजिए
16. शताब्दी
17. उत्तरदायी
18. शुद्धीकरण
19. झाड़ू
20. मालकिन
21. प्रदर्शनी
22. बरतन
23. सामग्री
24. द्रवीभूत
25. दधीचि
26. रीतिकाल
27. श्रीमती

ROJGAR WITH ANKIT

वर्तनी

Part-04 (Class→99)

1. विद्वान
2. विदुषी
3. वैराग्य
4. वैभव
5. कृतकृत्य
6. मान्यवर
7. राज्यभिषेक
8. संन्यास
9. स्वस्थ
10. स्वास्थ्य
11. ज्योत्स्ना
12. मातृभूमि
13. कृषि/कृषक
14. संश्लेषण
15. श्मशान
16. नरक
17. बहिष्कार
18. स्वीकार
19. तिरस्कार
20. अनादर
21. रुद्राक्ष
22. काल्पनिक
23. कल्पना
24. आजमाइश
25. श्रद्धांजलि
26. रजिस्टर
27. कैलास
28. विषाद
29. कौसल्या
30. सुमित्रा
31. उर्मिला
32. निर्धन
33. शूर्पणखा
34. बीमारी
35. अवनि/अवनी
36. श्वसुर
37. सुशोभित
38. नमस्कार
39. नमस्ते
40. पुरस्कार
41. आँगन/अंगना
42. महँगा
43. प्रदर्शन
44. अदालत
45. आदमी
46. स्वतंत्र
47. बुद्धिमान
48. विधिवत
49. श्रद्धावान
50. भगवान्
51. परिषद्
52. पश्चात्
53. पंचामृत
54. परमेश्वर
55. प्राचीन
56. अतिवृष्टि
57. आडंबर
58. निःशुल्क
59. निःसंदेह
60. प्रातःकाल
61. अंतःपुर
62. चिकित्सा
63. दुःशासन
64. न्यायाधीश
65. न्यायालय
66. सुसज्जित
67. औद्योगिक
68. भौगोलिक
69. साप्ताहिक
70. त्योहार
71. तपस्या
72. न्योछावर
73. कैबिनेट
74. मंत्रिपरिषद
75. राज्यपाल
76. संवैधानिक
77. मानी
78. क्लेश
79. अस्पृश्यता
80. अधीक्षक
81. निरीक्षक
82. शुश्रूषा
83. अनुमान
84. अभियुक्त
85. अधिशासी
86. भागीरथी
87. यमुना
88. मिष्टान्न
89. श्लोक
90. संरक्षण
91. उज्ज्वल
92. प्रज्वलित
93. भर्त्सना
94. पुनर्जन्म
95. क्षणिक

96. सौंदर्य
97. हिरण्यकशिपु
98. हथिनी
99. ऋग्वेद
100. दैहिक
101. अतिथि
102. युधिष्ठिर
103. लोहार
104. सुनार
105. सुषमा
106. कर्तव्य
107. महत्व
108. तत्व
109. महत्त्वकांक्षी
110. चरमोत्कर्ष
111. उत्कर्ष / अपकर्ष
112. मोगिराज / पक्षिराज
113. देदीप्यमान
114. अभिलाषा
115. आकांक्षा
116. ईर्ष्या
117. षड्यंत्र
118. घर / गृह
119. गृहस्थ
120. प्राणिविज्ञान
121. वैज्ञानिक
122. स्वामिभक्त
123. तूफान
124. हतोत्साहित
125. सौहार्द
126. पुनरुत्थान
127. बरात
128. बरतन
129. ऊर्मि
130. आजवाइन
131. सरस्वती
132. मूर्छित

[वर्तनी]

Part-05 Class-100

1. उत्कृष्ट
2. हस्तक्षेप
3. हर्षित
4. व्यावसायिक
5. दुष्कर
6. कृशांगी
7. नक्षत्र
8. यथाशक्ति
9. हासिल
10. प्रियदर्शी
11. दीक्षा
12. चतुष्कोण
13. शोषित
14. लालसा
15. विषाद
16. स्वादिष्ट
17. मौखिक
18. प्रतिवर्ष
19. प्राकृतिक
20. कृत्रिम
21. हिंदुत्व
22. निरामिष
23. विक्रेता
24. लालिमा
25. मुरलीधर
26. पत्रकार
27. निरीह
28. मृतक
29. रीतिकाल
30. दुश्शासन
31. मर्यादा
32. मैनेजर
33. विनती
34. वांछनीय
35. ज्ञात
36. धोबिन
37. चाकू/तलवार
38. घनश्याम
39. नौजवान
40. अनधिकृत
41. अभिशाप
42. विध्वंश
43. अभीष्ट
44. आरोग्य
45. इंद्रिय
46. गँवार
47. झाड़ू
48. बयारी
49. इनाम
50. ईसाई
51. सामर्थ्य
52. समीक्षा
53. सीढ़ी/सीढ़ियाँ
54. सुषुप्ति
55. शुश्रूषा
56. कीर्तिलता
57. वैश्य
58. पड़ोसिन
59. कृषि
60. पौरुष
61. प्रतिदंड
62. प्रादुर्भाव
63. भस्मीभूत
64. स्वाभिमान
65. संश्लिष्ट
66. स्वाध्याय
67. सृजन
68. सूचीपत्र
69. निदर्शन
70. जाह्नवी
71. तदुपरांत
72. गरिष्ठ
73. क्रांति
74. आक्रांत
75. गल्पबोध
76. अनुग्रह
77. छुआछूत
78. कठिनाइयाँ
79. आनुषंगिक
80. उपाधि
81. यथार्थवाद
82. उपयुक्त
83. अधोलिखित
84. उपरिलिखित

85 निम्नलिखित
86 उच्छृंखला
87 अक्षुण्ण
88 अभिव्यंजनावाद
89 अभिराम
90 आषाढ़
91 सहस्त्र
92 याज्ञवल्क्य
93 कृपाण
94 प्रतीक्षा
95 कोमलांगी
96 कुंतल
97 कृपाण
98 कार्यालय
99 दुरभिसंधि
100 छिद्रान्वेषी
1 दुश्चरित्र
2 दुर्निवार
3 दृश्य
4 प्रव्रज्या
5 त्रिदोष
6 मानवीकरण
7 संगीतज्ञ
8 अनसूया
9 सिलपट
10 राहुल सांकृत्यायन
11 स्वातंत्र्य
12 बिम्बिसार
13 अशोक भवन
14 सांस्कृतिक
15 उज्ज्वल
16 प्रज्वलित

ROJGAR WITH ANKIT

[वर्तनी]

Class → 101

अभ्यास प्रश्न

1. महत्वकांक्षा
2. अनुगृहीत
3. धराशायी
4. अंत्याक्षरी
5. द्वारका
6. अनधिकृत
7. अनधिक्रत
8. हिमालीस
9. कुमुदिनी
10. जिजीविषा
11. मानी
12. शूर्पणखा
13. कालिदास
14. सुषुम्ना
15. संन्यासी
16. चहारदीवारी
17. संकट
18. अन्तर्राष्ट्रीय
19. शुश्रूषा
20. अध्येता
21. वनस्पति
22. प्रज्वलित
23. दैदीप्यमान
24. दर्शनाभिलाषी
25. जिर्णोद्धार
26. राजनीतिक
27. उज्वल
28. अंक
29. उपर्युक्त
30. चाँद
31. उज्ज्वल
32. पुनरुक्ति
33. वाल्मीकि
34. उन्नति
35. तुष्टीकरण
36. मृत्युंजय
37. क्यारी
38. उत्तीर्ण

ROJGAR WITH ANKIT

→ [रस] ←

Class → 102

→ रस का शाब्दिक अर्थ आनंद होता है।

* **परिभाषा** → काव्य को पढ़ने व सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे रस कहा जाता है।

* हिंदी में रसों की संख्या (9) है, इसलिए इनको नवरस कहा जाता है।

* संस्कृत में रसों की संख्या (11) होती है।

* रसों को काव्य की आत्मा कहा जाता है।

→ आचार्य विश्वनाथ के अनुसार → रस युक्त वाक्य ही काव्य कहलाता है।

* रसों की कुल संख्या / कुल रसों की संख्या → (11) होती है।

Q→ हिंदी में रसों की संख्या कितनी है।?

(A) 11 (B) 8 (C) 9 ✓ (D) 10

* आचार्य भरतमुनि के अनुसार रसों की संख्या (8) मानी गई है।

* आचार्य भरतमुनि को रसों का आदि प्रवर्तक माना जाता है।

Q→ आचार्य भरतमुनि के अनुसार रसों की संख्या मानी?

(A) 9 (B) 10 (C) 11 (D) 8 ✓

→ शांत रस की खोज करने वाले हिंदी विद्वान → अभिनव गुप्त

→ शांत रस का प्रतिस्थापन करने वाले → उदभट्ट

ROJGAR WITH ANKIT

* रसों के स्थायीभावों की संख्या → ⑨ है।

→ **रस** → **स्थायीभाव**

1. श्रृंगार → रति (प्रेम)
2. हास्य → हास (हँसी)
3. करुण → शोक (दुःख)
4. वीर → उत्साह (जोश)
5. रौद्र → क्रोध (गुस्सा)
6. भयानक → भय (डर)
7. वीभत्स → जुगुप्सा (घृणा)
8. अद्भुत → विस्मय (आश्चर्य)
9. शांत → निर्वेद (वैराग्य)
10. वात्सल्य → स्नेह (प्रेम)
11. भक्ति → अनुराग (प्रेम)

→ **श्रृंगार** → ② भेद → संयोग श्रृंगार / वियोग श्रृंगार

* जहाँ पर मिलन होता है → (संयोग श्रृंगार रस / हर्ष)
* जहाँ पर बिछड़ते हैं → (वियोग श्रृंगार / दुःख)

विशेष → इन दोनों में वियोग श्रृंगार प्रधान होता है।

* श्रृंगार रस को रसराज कहा जाता है, क्योंकि यह रसों का राजा होता है।
* माधुर्य गुण श्रृंगार रस में प्रयोग होता है।

* आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के अनुसार रस के अंगों की संख्या → ④ होती है।

1. स्थायीभाव → ⑨
2. विभाव → ② प्रकार →
   - आलंबन विभाव → जिसके द्वारा भाव बनते हैं।
   - उद्दीपन विभाव → जिसके द्वारा भावों की गति बनती है।
3. अनुभाव → ④ प्रकार के → ① सात्विक ② वाचिक ③ आहार्य ④ कायिक
4. संचारीभाव → ㉝

हिन्दी
रस

ज्वाला बैच

Part - 2

रस के चार अवयव (अंग) होते हैं।

1. स्थायी भाव - ये हमेशा बने रहते हैं।
2. विभाव - जो स्थायी भावों को जगाने के कार्य करते हैं।
3. अनुभाव - इनसे रस को प्रकाशित किया जाता है। जो हमारी शारीरिक चेष्टा विकृति से भाव व्यक्त करते हैं।
4. संचारी भाव :- मन में संचरण करने वाले भाव संचारी भाव कहलाते हैं। संचारी भावों की संख्या - 33

34 वा भाव (छल) देव कवि माना गया है।

→ साहित्य में रस का क्या अर्थ है।
(a) साहित्य की मिठास (b) किसी रस का आनंद (c) किसी फल का स्वाद (d) साहित्य से मिलनेवाली आनन्द

→ स्थायी भावों की संख्या मानी गई है।
(a) तीन (b) चार (c) आठ (d) नौ

→ आचार्य भरत ने रसों की संख्या कितनी मानी है?
(a) 9 (b) 7 (c) 4 (d) 8

→ विभाव किसे कहते हैं।
(a) स्थायी भाव के उद्बोधक कारक (b) जिसमें रस उत्पन्न हो (c) जिसको रस उत्पन्न हो (d) कोई नहीं

→ रस के अवयवों की संख्या कितनी है।
(a) नौ (b) चार (c) आठ (d) सात

→ रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं।
(a) अभिनवगुप्त (b) भरत मुनि (c) भामह (d) आनन्दवर्धन

→ संचारी भावों की संख्या कितनी मानी गई है ?
(a) 30 (b) 31 (c) 32 (d) 33

→ माधुर्य गुण किस रस में प्रयुक्त होता है,
(a) रौद्र (b) श्रृंगार (c) वीर (d) शांत

→ किस रस को रसराज कहा जाता है ?
(a) श्रृंगार रस (b) वीर रस (c) शांत रस (d) करुण रस

→ हास्य रस का स्थायीभाव क्या होता है ?
(a) निर्वेद (b) रति (c) शोक (d) हास

→ 'देखि सुदामा की दीनदशा करुणा करिके करुणानिधि रोये' में रस है ?
(a) वियोग श्रृंगार (b) रौद्र (c) करुण (d) शान्त

→ रौद्र रस का स्थायीभाव क्या होता है.
(a) भय (b) क्रोध (c) रति (d) शोक

→ केशव कहि न जाइ का कहिये.
देखत तव रचना विचित्र अति समुझि मनहिं मन रहिये में है -
(a) रौद्र रस (b) शान्त रस (c) भयानक रस (d) अद्भुत रस

→ शांत रस का स्थायी भाव क्या होता है।
(a) निर्वेद (b) भय (c) शोक (d) रति

→ भक्तिरस के प्रतिष्ठापक आचार्य इनमें से कौन है,
(a) रूपगोस्वामी (b) आचार्य भरत (c) आचार्य विश्वनाथ (d) आचार्य मम्मट

→ कौन रस के अन्तर्गत नहीं आता है
(a) व्यंग्य (b) हास्य (c) रौद्र (d) भयानक

[छंद] (Class-104)

→ **परिभाषा** → आचार्य पाणिनी के अनुसार छंद का अर्थ आह्लादित होता है। ↳(प्रसन्न/खुश)

* छंद का अर्थ होता है → बंधन

* छंद का दूसरा नाम पिंगल शास्त्र (पिंगल) होता है।

→ आचार्य पिंगल के द्वारा ही छंद की खोज हुई थी।

→ छंद का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।

* छंद के (7) अंग होते हैं।

1. → संख्या/मात्रा
2. → वर्ण
3. → गति (लय)
4. → यति (विराम)
5. → तुक
6. → चरण/पाद
7. → गण

① **मात्रा संख्या** → वर्ण और मात्राओं की संख्या होती है, जिन्हें गिना जाता है।

→ वर्णों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं।

→ वर्णों की मात्रा दो प्रकार की होती है।

→ दो मात्राएँ → (अ) आ, (इ) ई, (उ) ऊ, (ऋ) ए, ऐ, ओ, औ

① **लघु / एक मात्रिक** → अ, इ, उ, ऋ [खड़ी पाई (।)]

② **दीर्घ / द्विमात्रिक** → गुरु (ऽ) आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ [वर्तुल रेखा ऽ]

② **वर्ण** → छंद में दो प्रकार के वर्णों का प्रयोग किया जाता है।

→ लघु ① लघु [।] → अ, इ, उ, ऋ → (एक मात्रा)

→ गुरु ② दीर्घ [ऽ] → आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ → (दो मात्रा)

→ मनीषा (3 वर्ण) → म + (अ)(।) + न + (ई)(ऽ) + ष + (आ)(ऽ) → [5 मात्रा]

③ **गति (लय)** → छंद को पढ़ने में जो गति उत्पन्न होती है।

④ **यति (विराम)** → छंद को पढ़ते समय जब श्वास लेते हैं, तो वहाँ पर रुकने को यति (विराम) कहते हैं।

→ रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

⑤ **तुक (ताल)** → छंद पढ़ते समय जब अंतिम ध्वनि समान आती है, उसे तुक कहते हैं।

उदा० - ① राम पढ़ता है। ② मोहन सोता है।

⑥ **चरण / पद / पाद** → छंद हमेशा दो चरणों में लिखा जाता है।

* प्रत्येक पंक्ति को चरण कहते हैं।

⑦ **गण** → छंद शास्त्र गणों की संख्या ⑧ होती है।

→ ① गण बनाने के लिए ③ वर्णों की आवश्यकता होती है।

सूत्र → यमाताराजभानसलगा

① य → यगण → [ISS]	⑤ ज → जगण → [ISI]
② म → मगण → [SSS]	⑥ भ → भगण → [SII]
③ त → तगण → [SSI]	⑦ न → नगण → [III]
④ र → रगण → [SIS]	⑧ स → सगण → [IIS]

→ कमल → III (नगण)

→ नीरज → SII (भगण)

→ सूरज → SII (भगण)

→ नरेश → ISI (जगण)

→ राजेस → SSI (तगण)

→ [छंद] ← [Part-02] (Class-105)

→ छंद के भेद / प्रकार → ③

① मात्रिक छंद
② वर्णिक छंद
③ मुक्त छंद

→ **मात्रिक छंद** → जिन छंदों की पहचान मात्रा के आधार पर की जाती है, उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं।

→ मात्रिक छंद ③ प्रकार के होते हैं।

① **सममात्रिक** → जिन छंदों के प्रत्येक चरण में समान मात्रा होती है, उन्हें सममात्रिक छंद कहते हैं।

विशेष → इन छंदों के ④ चरण होते हैं।

① चौपाई → 16 - 16 - ㉜ — ㉜
② रोला → 11 - 13 - ㉔ — ㉔
③ गीतिका छंद → 14 - 12 → ㉖ — ㉖
④ हरिगीतिका छंद → 16 - 12 ㉘ — ㉘

सम चरण → 2, 4
विषम चरण → 1, 3

② **अर्द्धसम मात्रिक** → जिन छंदों के अर्धांश समान होते हैं, उन्हें अर्द्धसम मात्रिक छंद कहते हैं।

→ दोहा → [13-11]
→ सोरठा → [11-13]
→ बरवै → [12-7]
→ उल्लाला → [15-13]

③ **विषम मात्रिक छंद** → प्रत्येक चरण में असमान मात्राएँ होती हैं। [विषम मात्रिक छंदों में 6-6 चरण होते हैं]

ROJGAR WITH ANKIT

→ **कुंडलियाँ छंद** → 6 – चरण / पद / पाद

- 1, 2 → दोहा (2) → यह दोहा और रोला छंद से मिलकर बनता है।
- 3, 4, 5, 6 → रोला (4)

→ **छप्पय छंद** → रोला (4) + उल्लाला (2) [6 चरण]

- 1, 2, 3, 4 → रोला
- 5, 6 → उल्लाला

→ **रोला और सोरठा में अंतर**

रोला – (11, 13)	सोरठा (11, 13)
* रोला छंद के अंत में (S) गुरू मात्रा आती है।	* सोरठा के अंत में लघु मात्रा (।) आती है।

→ **एक मात्रिक** → लघु स्वर [अ, इ, उ, ऋ, ँ]

1. कमल → [। । ।]
2. सूरज → स् + ऊ + र् + (अ) + ज् + (अ)
3. ध्रुव → ध् + र् + (उ) + व् + (अ)
4. प्रजा → प् + र् + (अ) + ज् + (आ)

→ **द्विमात्रिक** → दीर्घ स्वर – [आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ं]

उदा० → (1) कमली → [। । S] (2) न्यून → [S ।]

ROJGAR WITH ANKIT

विशेष → * आधे वर्ण की कोई मात्रा नहीं होती। न्यून → SS

स्वर → II

* लेकिन आधा वर्ण शब्द के बीच में आने पर पहले वाले वर्ण को दीर्घ कर देते हैं। अम्ल → SI

→ शुद्ध → SI

→ श्लोक → SI

[छंद] Part-03 Class-106

① महेश → म् + अ + ए + ह् + ए + श् + अ
② प्रेमी → प् + र् + अ + ज् + म् + आ
③ अन्ताक्षरी → अ + न् + त् + म् + आ + क् + ष् + अ + र् + ई
④ हर्ष → ह् + अ + र् + ष् + अ

① कालिदास → SISI
② अर्जुन → SII
③ नीरजा → SIS
④ कमला → IIS
⑤ कंगन → SII
⑥ चाँदनी → SIS
⑦ गुजरात → IISI
⑧ हरियाणा → IISS
⑨ भोपाल → SSI

विशेष → यदि किसी शब्द में 'ह्' होता है, और उसके साथ में कोई आधा वर्ण होता है, तो उसका प्रभाव 'ह्' पर ही पड़ता है, ना कि अपने से आगे वाले वर्ण पर।

① तुम्हारा → ISS
② दुल्हा → SS
③ तुम्हें → IS
④ कुम्हार → ISI
⑤ इन्हें → IS
⑥ मल्हार → ISI
⑦ सागर → SII

दोहा → ① सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर। [13, 11]
देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर॥ [13, 11]
SII S SS IS SI IS SSI

② श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनऊं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि॥

ROJGAR WITH ANKIT

-रोला- नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुंदर है। [11-13]
सूर्य- चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है। [11-13]
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारा - मंडल है। [11-13]
बंदीजन खगवृन्द, शेष-फन सिंहासन है। [11-13]

-सोरठा- कुंद इंदु सम देह, उमा रमन करुनामतन।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्दन ममन॥

* छंद ④ चरणों में लिखा जाता है।
* [1, 3] विषम चरण, [2, 4] सम चरण होते हैं।

चौपाई- बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा। → 16
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥ → 16
अमिय मूरिमय चूरन चारू।
समन सकल भव रुज परिवारू॥

कुण्डलियाँ→ सांई अपने भ्रात को, कबहुं न दीजै त्रास।
पलक दूरि नहिं कीजिए, सदा राखिए पास॥ → दोहा

सदा राखिए पास, त्रास कबहुं नहिं दीजै।
त्रास दियो लंकेश ताहि की गति सुनि लीजै॥
कह गिरिधर कविराय राम सौं मिलिगो जाई।
पाय विभीषण राज लंकपति बाज्यो सांई॥ → रोला

→वर्णिक छंद

इंद्रवज्रा→ जागो उठो भारत देशवासी → 11
आलस्य त्यागो ना बनो विलासी → 11
ऊँचे उठो दिव्य कला दिखाओ → 11
संसार में पूज्य पुनः कहाओ। → 11

[इस छंद की पहचान वर्णों से की जाती है।]

ROJGAR WITH ANKIT

*① स्वाति → 2 वर्ण
② कविता → 3 वर्ण
④ आरती → 3 वर्ण
⑤ मनीषा → 3 वर्ण
⑥ नीतू → 2 वर्ण

② **सवैया छंद** → इसमें 23 वर्ण होते हैं। [आधा वर्ण नहीं गिना जाता]

→ स्वर्ण जड़ें सब मंदिर है वहँ, माणिक में सब द्वार मढ़े हैं। → ㉓
भौन बना इक उच्च तहाँ पर, जा उस द्वार सुदाम अड़े हैं।
द्वारहि पाल सुनाम रहे द्विज, नाथ अनाथ साथ पढ़े हैं।
जाय संदेश कहो प्रभु से तुम, बाल सखा उन द्वार खड़े हैं।

③ **मंदाक्रांता** → [17 वर्ण]

→ फूली डालें सुकुसुममयी तीय की देख आँखें। → ⑰
आ जाती है मुरलिधर की मोहिनी मूर्ति आगे॥

④ **मालिनी (मंजुमालिनी)** → [15 वर्ण]

→ पल-पल जिसके मैं पंथ को देखती थी, → (15 वर्ण)
निशि-दिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती।

हिन्दी

छन्द Part #4

आग्नि बैच

→ किस छन्द मे चार से अधिक चरण होते है ?
(a) रोला (b) बरवै **(c) छप्पय** (D) सोरठा

→ छप्पय मे होते है,
(a) प्रथम चार चरण रोला के और अंतिम दो चरण उल्लाला के
(b) प्रथम दो चरण रोला और अंतिम चार चरण उल्लाला के
(c) प्रथम चार चरण चौपाई के और अंतिम दो चरण दोहा के
(D) उपर्युक्त मे से कोई नही

→ छप्पय किस प्रकार का छन्द है,
(a) सम **(b) विषम** (c) अर्द्धसम (D) इनमे से कोई नही.

→ जो मात्रिक सम छंद है. प्रत्येक चरण मे 16 मात्राएँ होती हो उसे कहते है,
(a) चौपाई (b) दोहा (c) सोरठा (D) रोला

→ वह सम मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे 24-24 मात्राएँ हो तथा प्रत्येक चरण मे 11 वी एवं 13 वी मात्रा पर यति होती हो, कौन सा छंद कहा जाएगा.
(a) रोला (b) सोरठा (c) सवैया (D) कवित्त

→ मंगल करनि, कलि मल हरनि
तुलसी कथा, रघुनाथ की, उपर्युक्त पंक्ति मे कौन सा छंद है,
(a) चौपाई **(b) हरिगीतिका** (c) रोला (D) मालिनी

→ अवधी का निजी छंद है,
(a) बरवै (b) कवित्त (c) रोला (D) छप्पय

→ किस छंद मे बारह और सात की यति से कुल उन्नीस मात्राएं होती है
(a) सोरठा (b) दोहा (c) चौपाई **(D) बरवै**

→ रहिमन चुप है बैठिये देखि दिनन के फेर
जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहैं बेर ॥ कौन सा छंद है.
(a) दोहा (b) सोरठा (c) रोला (D) चौपाई

→ दोहा के प्रथम चरण मे कितनी मात्राएं होती है।
(a) 11 (b) 12 **(c) 13** (D) 14

→ सोरठा के प्रथम चरण मे कितनी मात्राएं होती है।
(a) 10 **(b) 11** (c) 12 (D) 13

→ शिल्पगत आधार पर दोहे से उल्टा छंद है।
(a) बरवै **(b) सोरठा** (c) चौपाई (D) रोला

→ किस छंद का प्रथम व अंतिम शब्द एक सा होता है।
(a) कुंडलियाँ (b) रोला (c) दोहा (D) सोरठा

→ निम्न मे से मात्रिक छंद नही है।
(a) मन्दाक्रान्ता (b) हरिगीतिका (c) रोला (D) दोहा

→ छन्द से सम्बंधित गणों की सही संख्या है।
(a) छः (b) सात **(c) आठ** (D) दस

→ छन्दशास्त्र के प्रणेता आचार्य माने जाते है।
(a) पतंजलि **(b) पिंगल** (c) पाणिनी (D) मनु

→ वार्णिक छन्दों मे किसका विचार होता है
(a) वर्ण का (b) मात्रा और वर्ण का (c) मात्रा का (D) वर्ण की गुरुता का

→ छन्द का सर्वप्रथम उल्लेख कहाँ मिलता है
(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद (c) सामवेद (D) उपनिषद

→ मात्रिक छन्दो मे मात्रा के प्रकार है,
(a) तीन **(b) दो** (c) चार (D) पाँच

हिन्दी   अग्नि बैच

अलंकार

अलंकार - अलम् + कार

- अलंकार का शाब्दिक अर्थ → आभूषण, गहना, जेवर
- अलंकार के तीन भेद होते हैं, ① शब्दालंकार ② अर्थालंकार ③ उभयालंकार] मुख्य भेद - 2 [शब्दालंकार, अर्थालंकार]

शब्दालंकार :- काव्य मे जिन शब्दो के कारण पंक्ति मे सुन्दरता आती है, उन्हे शब्दालंकार कहते है.

भेद - (1) अनुप्रास अलंकार
(2) यमक अलंकार
(3) श्लेष अलंकार
(4) वक्रोक्ति अलंकार
(5) वीप्सा अलंकार

अनुप्रास अलंकार - जब किसी रचना, पंक्ति में एक वर्ण बार-2 आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है,

→ तरनि तनुजा तट तमाल. — त वर्ण
→ रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठे -

अनुप्रास अलंकार पाँच भेद होते है. -
(1) छेकानुप्रास अलंकार
(2) वृत्यानुप्रास अलंकार
(3) लाटानुप्रास अलंकार
(4) श्रुत्यानुप्रास अलंकार
(5) अन्त्यानुप्रास अलंकार

rojgar With ankit

(2) **यमक अलंकार** - जब एक शब्द दो या दो से अधिक बार आता है, और हर बार अपना अर्थ अलग होता है, वहाँ यमक अलंकार होता है।

EX: कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय। सोना, धतूरा (कनक)
जग या खाय बौराय जग वा पाय बौराय।

काली घटा का घमण्ड घटा।
कम — बादल वाली घटा।

(3) **श्लेष अलंकार** - जिस रचना मे कोई शब्द एक बार आता है, और उसके अर्थ अनेक निकलते है।
(चिपकना)
रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे मोती मानुस चून॥

(4) **वक्रोक्ति अलंकार** - जिस रचना कहने कुछ कहता है लेकिन सुनने वाला उसका अर्थ अलग निकलता है वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।
(उलझा, फँसा)

EX. को तुम हो घनश्याम हम तो बरसो कित जाय,
बादल कृष्ण।

है पशुपाल कहाँ सजनी, जमुना तट धेनु चराय रहौ री,
पशुओ को पालने वाला, भगवान शिव

(5) **वीप्सा अलंकार** :- जब हर्ष, घृणा, विस्मयादि बोधक आदि भावो को प्रभावशाली रूप से व्यक्त किया जाता है,

विशेष :- जहाँ पर शब्दो की पुनरावृत्ति होती है।

EX: मधुर-मधुर मेरे दीपक जले।
राम-राम, । ही!-ही!
धरती ने खिलाए है, वसंत लाल-लाल

[अलंकार]

Part-02 | Class-109

→ अर्थालंकार → जब काव्य में शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे अर्थालंकार कहते हैं।

*** अर्थालंकार के भेद** →
1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार
4. अतिशयोक्ति अलं०
5. संदेह अलंकार

1. उपमा अलंकार → वह अलंकार जहाँ पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है, उसे उपमालंकार कहते हैं।

उदा० → पीपर पात सरिस मन डोला।
(पीपर → उपमान, सरिस → वाचक शब्द, मन → उपमेय, डोला → सा० धर्म)

* उपमा अलंकार के 4 अंग होते हैं।
1. उपमेय 2. उपमान 3. वाचक शब्द 4. साधारण धर्म

1. **उपमेय** → जिसकी तुलना होती है, उसे उपमेय कहते हैं।
2. **उपमान** → जिससे तुलना की जाती है, उसे उपमान कहते हैं।
3. **वाचक शब्द** → सा, सी, से, सरिस।
4. **साधारण धर्म** → जो शब्द उपमेय और उपमान में समानता बताते हैं, साधारण धर्म कहलाते हैं।

उदा० - 1. झील सी गहरी आँखों वाली।
(झील → उपमान, सी → वाचक शब्द, गहरी → सा० धर्म, आँखों वाली → उपमेय)

2. मुख चंद्र के समान है।
(मुख → उपमेय, चंद्र → उपमान, के समान → वाचक शब्द)

② **रूपक अलंकार** → जिस अलंकार में उपमेय और उपमान में कोई अंतर नहीं होता है।, और एक योजक चिह्न (-) से जोड़ दिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदा० - ① जलता है, ये जीवन - पतंग।
② मैया मैं तो चंद्र - खिलौना लेहूँ।
③ चरण - कमल बंदौ हरिराई।

③ **उत्प्रेक्षा अलंकार** → जहाँ पर उपमेय और उपमान में समानता होने की संभावना होती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

-पहचान → [मानो, मनु, मनहुँ, जानो, जनु, जनहुँ] आदि शब्द

उदा० - ① मानो मुख चंद्र है।
② कहते हुए यु उत्तरा के नेत्र जल से भर गए। हिम के कणों से मानो हो गए पंकज नए।

④ **संदेह अलंकार** → समानता (सादृश्यता) की वजह से जब किसी वस्तु, चीज में अंतर करना मुश्किल हो जाता है। वहाँ संदेह अलंकार होता है।

पहचान - [या, अथवा, किंवा]

उदा० - ① यह काया है या शेष उसी की छाया है।
② सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है।

ROJGAR WITH ANKIT

⑤ **अतिशयोक्ति अलंकार** → जब किसी बात को लोक सीमा से बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदा॰ - ① बालों को खोलकर मत चला करो दिन में सूर्य रास्ता भूल जाएगा।

② हनुमान जी की पूँछ में लगन पाई आग।
लंका सारी जल गई गए निशाचर भाग।

ROJGAR WITH ANKIT

अलंकार

Part-03 | Class-110

→ अभ्यास प्रश्न

① अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है? → आभूषण

② भाषा में शब्द और अर्थ की दृष्टि से सौंदर्य उत्पन्न करते है? → अलंकार

③ अलंकार के मुख्यतः भेद बताओ? → ③ भेद
① शब्दालंकार ② अर्थालंकार ③ उभयालंकार

④ श्लेष अलंकार होता है? → शब्दालंकार

⑥ अर्थालंकार की संख्या कितनी है? → 45

⑦ 'मुदित महीपति मंदिर आए।
सेवक सचिव सुमंत बुलाए' > [अनुप्रास अलंकार]

⑧ जिन पंक्तियों में एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आएं किंतु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो तो वहां कौन-सा अलंकार होता है? → यमक अलंकार

⑨ 'कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में कौन-सा अलंकार है? → यमक अलंकार

⑩ रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून॥
→ श्लेष अलंकार

(11) "मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू" → काकु वक्रोक्ति

(12) 'राम का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है → उपमा

(13) उपमेय और उपमान के बीच समानता बताने वाले शब्द को → वाचक कहते हैं।

(14) मुख - कमल समीप सजे थे
दो किसलय दल पुरइन के। > रूपक

(15) तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
झुके कूल सों जल परसन हित मनहुं सुहाये।
→ उत्प्रेक्षा अलंकार

(16) पानी परात को हाथ छुओ नहीं, नैनन के जल सो पग धोये → अतिशयोक्ति

(17) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने देखा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥
→ अतिशयोक्ति

(18) यह काया है या शेष उसी की छाया → संदेह अलंकार

(19) 'वीप्सा' में कौन-सा अलंकार है? → शब्दालंकार

→ [गद्यांस] ← [Class-10]

① जल का जीवन से बहुत महत्वपूर्ण संबंध है, हमारे शरीर में तीन भाग पानी का है, उसी प्रकार धरती पर तीन भाग जल का है, जल के कारण हरियाली और हरियाली से आक्सीजन प्राप्त होती है, परंतु आज कल लोग इण्डस्ट्रीस तथा रिहायशी भवनों के नाम पर एंव गलत निर्णयों के कारण हरियाली का विनाश कर रहे हैं तथा जल का धरती से गलत दोहन किया जा रहा है, जल ही जीवन है, और बिना पानी सब सून यानी जल के बिना हम जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते जल के बिना सारी पृथ्वी का पर्यावरण प्रदुषित हो जाएगा तथा पृथ्वी रहने लायक नहीं रहेगी, इस कारण पृथ्वी मानव विहीन हो जाएगी।

① दिए गए लेखांश का उचित शीर्षक लिखो-

→ जल का महत्व

② धरती पर कितना भाग पानी है?

→ तीन भाग

③ हरियाली किसके कारण होती है?

→ जल के कारण

④ आक्सीजन हमें कहा से प्राप्त होती है?

→ हरियाली से

गद्यांश→ भूषण महाराज ने विषय और विशेषतया नायक चुनने में बड़ी बुद्धिमता से काम लिया है, शिवाजी और छत्रसाल जैसे महानुभवों के पवित्र चरित्रों का वर्णन करने वाले की

-जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है, शिवाजी ने एक जमींदार और बीजापुर धीश के नौकर के पुत्र होकर चक्रवर्ती राज्य राज्य स्थापित करने की इच्छा को पूर्ण-सा कर दिखाया और छत्रसाल बुंदेला ने जिस समय मुगलों का सामना करने का साहस किया उस समय उसके पास पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे, इसी सेना से इस महनुभाव ने दिल्ली का सामना करने की हिम्मत की और मरते समय अपने उत्तराधिकारियों के लिए दो करोड़ वार्षिक मुनाफे का स्वतंत्र राज छोड़ा।

⑤ महाकवि भूषण दरबारी कवि थे, उनके आश्रयदाता राजा का नाम था → शिवाजी

⑥ छत्रपति शिवाजी की प्रशस्ति में लिखे गये दो काव्य ग्रंथों के नाम हैं → शिवा बावनी, शिवराज भूषण।

⑦ इस गद्यांश का सार्थक शीर्षक हो सकता है।
→ भूषण और बुद्धिमता

⑧ भूषण का प्रिय काव्य रस था।
→ वीर

⑨ छत्रशाल बुंदेला ने जिस समय मुगलों का सामना किया उस समय उसके पास थे → पाँच सवार पच्चीस पैदल

(3)- सभी बच्चे मेले में खिलौने ले रहे हैं, महमूद सिपाही लेता है मोहसिन को भिश्ती पसंद आया, नूरे का वकील से प्रेम है, ये सब दो-दो पैसे के खिलौने हैं, हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं, वह मिट्टी के कमजोर खिलौने को पसंद नहीं करता क्योंकि वे महँगे भी हैं। इसलिए वह लोहे की दुकान पर जाता है, वहाँ उसे ख्याल आता है, दादी के पास चिमटा नहीं है, चिमटे के बिना रोटी सेकते उनका हाथ जलता है, यह सोचकर उसने तीन पैसे में एक चिमटा खरीद लिया।

(10) बच्चे खिलौने कहाँ से ले रहे थे?.

→ मेले

(11) महमूद ने कौन सा खिलौना खरीदा?.

→ सिपाही

(12) हामिद के पास कितने पैसे थे?.

→ तीन

(13) दादी के लिए उसने क्या खरीदा?.

→ चिमटा

(14) चिमटे को हामिद ने कितने में खरीदा?.

→ तीन पैसे

CAPF (BSF) HCM & ASI 2024 ज्वाला बैच अग्नि बैच हिंदी गद्यांश

ध्वनि प्रभाव संकेत रेडियो नाटक के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। ध्वनि प्रभाव संवादों के लिए आधार स्तंभ की भांति हैं। संवादों की भावनाओं की रसात्मकता ध्वनि- संकेतों से बढ़ सकती है। संवादों में उत्साह, आनंद, दुःख, व्यंग्य, लयात्मकता, उतार-चढ़ाव आदि के लिए संकेत' होते हैं। संवाद-संकेतों की जीवंतता, सार्थकता और संदर्भयुक्तता के लिए अपेक्षित होते हैं। संवाद के अंतर्गत पात्र का हँसना, दुःख प्रकट करना, रोना, दीर्घ साँस लेना जैसे संदर्भों का संकेत देने के लिए संवाद-संकेतों की जरूरत पड़ती है। वास्तव में रेडियो केवल श्रव्य- माध्यम होने के कारण इन ध्वनि प्रभाव संकेतों के बिना दृश्यावली स्थापित करने में कठिनाई होती है । उदाहरण के लिए नाटक की घटना में पात्रों को किसी रेलवे स्टेशन में संवाद करते हुए पाया जाता है तो इसके लिए रेल के आने-जाने, उद्घोषणा, यात्रियों और चाय-नाश्ता बेचने वालों को शोरगुल आदि दृश्य का सृजन ध्वनि प्रभाव संकेतों से ही संभव है और इसी प्रकार के दृश्यों के लिए कई प्रकार की आवाज़ें यथा- दरवाजा खुलने, बंद होने, गाड़ियों के आने-जाने, किसी के आने-जाने की आहट, बच्चों के खेलने की आवाजें आदि का सृजन इससे संभव है। आमतौर पर नाटक के दौरान उत्पादित ध्वनियाँ, कुछ पूर्व रिकार्डेड ध्वनियाँ होती हैं। सामान्यतः रेडियो नाटक का रिकार्डिंग स्टूडियो पर होता है, अतः सभी प्रकार की ध्वनियाँ, ध्वनि प्रभाव प्रत्यक्षतः नाटक के रिकार्डिंग के दौरान ही उत्पन्न करने में कठिनाई होती है, अतः पूर्व में रिकार्ड की गई ध्वनियों का इस्तेमाल किया जाता है।

(15) यह अनुच्छेद किस विषय पर केंद्रित है?

→ रेडियो नाटक लेखन में ध्वनि प्रभाव संकेत

(16) इस अनुच्छेद के लिए उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है।

→ रेडियो नाटक लेखन के तकनीकी पहलू।

(17) रेडियो नाटक लेखन में ध्वनि प्रभाव संकेतों का उद्देश्य क्या है? → संवादों की रसात्मकता, दृश्यावली स्थापित करना, नाटक को प्रभावशाली बनाना।

(18) संवाद-संकेत क्यों अपेक्षित है?

→ संवादों की जीवंतता के लिए।, संवादों की सार्थकता के लिए संवादों की संदर्भ युक्तता के लिए।

(19) रेडियो-नाटक लेखन में रेलवे स्टेशन का शोर, दरवाजा खुलने, बंद होने की आवाज आदि के लिए किन संकेतों का प्रयोग होता है।

→ ध्वनि प्रभाव संकेत

→ [गद्यांश] ← [Part-02] (Class-11/12)

कहा जाता है कि कोई भी चीज़, बाँटने से बढ़ती है। उसी प्रकार खुशियों को बाँटना भी, खुशी पाने का ही एक सोपान है। जैसे ज्ञान देने से कभी नहीं घटता, वैसे ही खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं। दूसरों को खुशी देना भी, अपने खुशी के खजाने को बढ़ाने जैसा है, दूसरों को खुशियाँ कई प्रकार से दी जा सकती हैं- उनकी भावनाओं का आदर कर, सहानुभूति रखकर, मदद करके या फिर उनके सुख-दु:ख में सहभागी बनकर। किसी बूढ़े व्यक्ति को सड़क पार कराना, बीमारी में सेवा करना, अपनी वस्तुओं को बाँटना, दूसरों के सुख-दु:ख में साथ देना आदि खुशी पाने के उदाहरण हैं। पर यह सच है कि खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं। खुशी पाने के लिए जरूरी है सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाना। सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ है - हर दु:ख, कष्ट, परेशानी में भी कोई अच्छाई ढूँढ सकने की क्षमता । यदि हम होने वाली हर घटना का सकारात्मक पक्ष देखने की आदत डाल लें तो हर हाल में खुश रहने का मूलमंत्र हमारी मुट्ठी में आ जाएगा। यह खुशी पाने की पहली सीढ़ी या सोपान है। उदाहरण के लिए, दौड़ में पिछड़ जाने का सकारात्मक पक्ष यह है कि हम और अधिक अभ्यास कर अपनी गति को बढ़ाएँ और यह सोचकर निराश न हों कि हम दौड़ में पिछड़ गए बल्कि हम यह सोचें कि कोई विशेषता हममें भी होगी जिससे हम आगे निकल सकते हैं।

① दूसरों को खुशी किस प्रकार दी जाती है!

→ मदद करके

② सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ क्या है?

→ दुःख में भी खुशी को तलाशना

③ खुशी पाने का क्या सोपान है?

→ परेशानियों का सकारात्मक पक्ष देखना

④ दौड़ में पिछड़ जाने का सकारात्मक पक्ष क्या है?

→ पुनः अभ्यास करना, अपनी कमज़ोरियों को समझना हार नहीं मानना।

⑤ गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए?

→ जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण।

हमारी एकता सबसे बड़ी शक्ति है। चाहे उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाइए आपको जगह - जगह एक ही संस्कृति के मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च दिखाई देंगे। उत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है, जीवन को देखने की उनकी जो दृष्टि है, वही स्वभाव और दृष्टि दक्षिण वालों की है। भाषा की दीवार के टूटते ही एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कोई भेद नहीं रह जाता और वे आपस में एक-दूसरे के बहुत करीब आ जाते हैं। असल में भाषा की दीवार के आर-पार बैठे हुए भी वे एक ही हैं। वे एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं, उन्होंने देश की आजादी के लिए एक होकर लड़ाई लड़ी। धार्मिक विश्वास की एकता मनुष्य की सांस्कृतिक एकता को पुष्ट करती है। अनेक सदियों से हिन्दू मुसलमान साथ रहते आए हैं और इस लंबी संगति के फलस्वरूप उनके बीच संस्कृति और तहज़ीब की बहुत सी समान बातें पैदा हो गई हैं, जो उन्हें दिनों-दिन आपस में नज़दीक लाती जा रही है। इसलिए तो भारत में सेवा, त्याग और दान का महत्व है।

⑥ हमारे मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च किसका प्रमाण है?
→ एकता का

⑦ एक उत्तर भारतीय और एक दक्षिण भारतीय के बीच कैसी दीवार है? → भाषा की

⑧ सभी भारतीयों ने एक साथ होकर क्या किया?
→ देश में आजादी लाए।

⑨ भारत में किसका महत्व अधिक है?
→ सेवा, त्याग, और दान का।

⑩ उपरोक्त गद्यांश का शीर्षक क्या हो सकता है?
→ बंधुत्व और सहानुभूति

मानव जाति को अन्य जीवधारियों से अलग करके महत्व प्रदान करने वाला जो एकमात्र गुरु है, वह है उसकी विचार - शक्ति। मनुष्य के पास बुद्धि है, विवेक है, तर्कशक्ति है अर्थात् उसके पास विचारों की अमूल्य पूँजी है। अपने सुविचारों की नींव पर ही आज मानव ने अपनी श्रेष्ठता की स्थापना की है और मानव-सभ्यता का विशाल महल खड़ा किया है। यही कारण है कि विचारशील मनुष्य के पास जब सुविचारों का अभाव रहता है तो उसका वह शून्य मानव कुविचारों से ग्रस्त होकर एक प्रकार से शैतान के वशीभूत हो जाता है। मानवी बुद्धि जब सद्भावों से प्रेरित होकर कल्याणकारी योजनाओं में प्रवृत्त रहती है तो उसकी सदाशयता का कोई अंत नहीं होता, किन्तु जब वहाँ कुविचार अपना घर बना लेते हैं तो उसकी पाशविक प्रवृत्तियाँ उस पर हावी हो उठती हैं। हिंसा और पापाचार का दानवी साम्राज्य इस बात का द्योतक है कि मानव की विचार - शक्ति, जो उसे पशु बनने से रोकती है, उसका साथ देती है।

(11) मानव जाति को महत्व देने में किसका योगदान है?
→ विवेक और विचारों का

(12) मानव ने जन्म दिया है? → मानव सभ्यता को।

(13) यदि मनुष्य में कुप्रवृत्तियाँ, कुविचारों का जन्म होगा तब मनुष्य की स्थिति होगी → पशु के समान।

(14) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक → विवेक शक्ति

खनन के बाद खदानों वाले स्थानों को गहरी खाइयों और मलबे के साथ खुला छोड़ दिया जाता है। खनन के कारण झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उड़ीसा जैसे राज्यों में वनोन्मूलन भूमि निम्नीकरण का कारण बना है। गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में अति पशुचारण भूमि निम्नीकरण का मुख्य कारण है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में अधिक सिंचाई भूमि निम्नीकरण के लिए उत्तरदायी है। अति सिंचन से उत्पन्न जलाक्रांतता भी भूमि निम्नीकरण का मुख्य कारण है जिससे मृदा में लवणीयता और क्षारीयता बढ़ जाती है। खनिज प्रक्रियाएँ जैसे सीमेंट उद्योग में बहुत अधिक मात्रा में वायुमंडल में धूल विसर्जित होती है। जब इसकी परत भूमि पर जम जाती है तो मृदा की जल सोखने की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाती है। पिछले कुछ वर्षों से देश के विभिन्न भागों में औद्योगिक जल निकास से बाहर जाने वाला अपशिष्ट पदार्थ भूमि और जल प्रदूषण का मुख्य स्रोत है। भूमि निम्नीकरण की समस्याओं को सुलझाने के कई तरीके हैं। वनारोपण और चरागाहों का उचित प्रबंधन इसमें कुछ हद तक मदद कर सकते हैं। पेड़ों की रक्षक मेखला, पशुचारण नियंत्रण और रेतीले टीलों को काँटेदार झाड़ियाँ लगाकर स्थिर बनाने की प्रक्रिया से भी भूमि कटाव की रोकथाम की जा सकती है। बंजर भूमि के उचित प्रबंधन, खनन नियंत्रण और औद्योगिक जल को परिष्करण के पश्चात् विसर्जित करके जल और भूमि प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

(15) भूमि निम्नीकरण के क्या क्या कारण बताए गए है।

→ खनन, अति पशुचारण, वनों की कटाई, अधिक सिंचाई

(16) राज्यो मे वनोन्मुलन के क्या कारण है?

→ अति खनन

(17) भूमि निम्नीकरण से बचने के क्या तरीके है?

→ वनारोपण व चारागाहों का उचित प्रबंध।

(18) कौन-कौन से राज्य वनोन्मुलन के लिए उत्तरदायी है।

→ झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा।

(19) गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए?

→ भूमि निम्नीकरण की समस्या।

साधारण तौर पर जब हम साफ रात्रि में आकाश की ओर देखते होंगे तो हमें दूर-दूर तक हजारों तारे टिमटिमाते हुए दिखाई देते होंगे। उन्हें देखकर लगता है कि जैसे किसी ने उन्हें आकाश की काली पृष्ठभूमि पर चिपका रखा है। कई बार हमें आश्चर्य होता कि वे हर रात एक ही जगह कैसे बने रहते हैं, गिर क्यों नहीं जाते ? वैज्ञानिक तथ्य तो यह है कि तारे वास्तव में एक जगह स्थिर नहीं रहते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी तथा अन्य आठ ग्रह सूर्य के चारों ओर अपने-अपने पथ पर चलते रहते हैं। वे भी उसी प्रकार अपने पथ पर धीरे- धीरे चलते रहते हैं। हमें लगता है कि तारे एक ही जगह स्थिर हैं, क्योंकि हम उन्हें चलते हुए नहीं देख सकते हैं। इसका कारण यह है कि वे हमसे हजारों हजार किलोमीटर दूर हैं। जब वे चलते हुए भी होते हैं तब भी ऐसा लगता है कि वे एक ही जगह हैं। इसके अतिरिक्त एक शक्ति है जिसे हम गुरुत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं, जिसके कारण चलते समय भी तारे अपने पथ पर बने रहते हैं। वह उनको एक-दूसरे से टकराने से भी बचाती है।

(20) साफ रात्रि मे आकाश में क्या दिखाई देता है?
→ केवल तारे

(21) इस गद्यांश मे किस वैज्ञानिक तथ्य का उल्लेख किया गया है? → गुरुत्वाकर्षण शक्ति।

(22) हम तारों को चलते हुए क्यों नहीं देख सकते?
→ क्योंकि वे हमसे दूर है।

(23) पृथ्वी एंव अन्य ग्रह किसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं? → सूर्य के

(24) उपरोक्त गद्यांश का क्या शीर्षक हो सकता है।
→ आकाश के वैज्ञानिक तथ्य